NOT FOR SALE

सौभाग्य सिद्धि विशेषांक

नवम्बर 2000

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

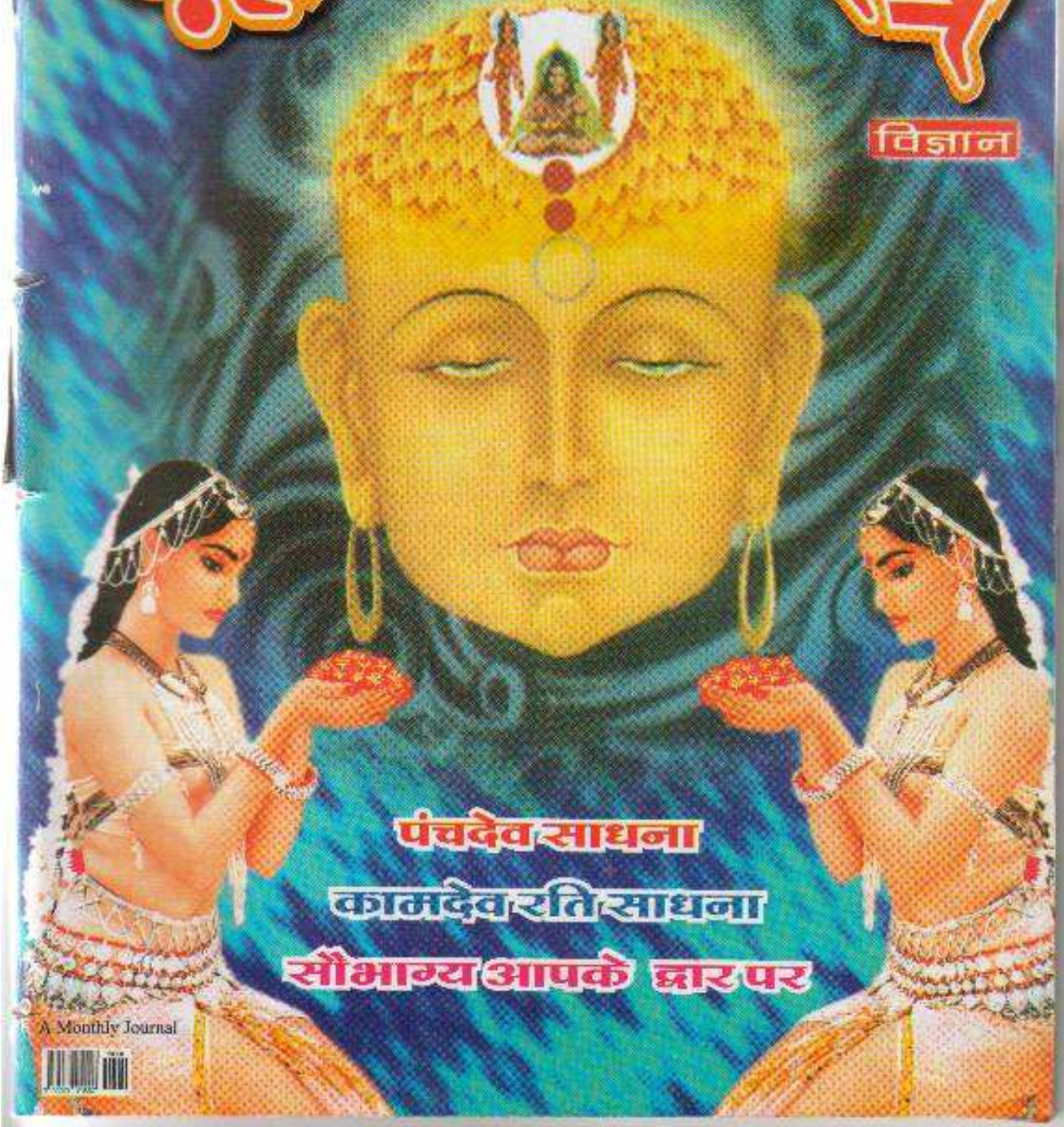

पंचदेव साधना

कामदेव रति साधना

सौभाग्य आपके द्वार पर

A Monthly Journal

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रि—

मन्त्र-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 7
गुरु वाणी 44

स्तम्भ

शिष्य धर्म 43
साधक साक्षी 50
स्वास्थ्य सरिता 51
मैं समय हूं 62
वराहमिहीर 63
नक्षत्रों की वाणी 71
इस मास दिल्ली में 80
एक दृष्टि में 86

वर्ष 20 अंक 11
नवम्बर 2000 पृष्ठ 88

साधना

पंचदेव साधना 24
शिव साधना 26
शक्ति साधना 28
सूर्य साधना 29
गणपति साधना 31
विष्णु साधना 33

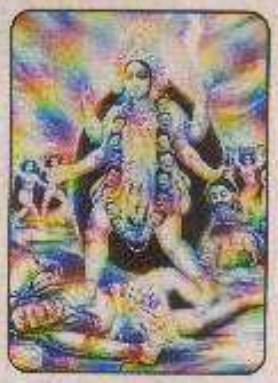

कालभैरव साधना 64
महामृत्युंजय साधना 67
सौम्य काली साधना 69
कामदेव रति साधना 77

विशेष

रुद्राष्टाध्यायी 37
नववर्ष आह्वान 58
सौभाग्य सूत्र 83

ज्योतिष और आपका भाग्योदय 82

विवेचन

देह में देवता निवास 21
पारद मुद्रिका 41
प्रश्नोपनिषद रहस्य 73

स्तोत्र शक्ति

श्मशानलयवासिनीम् 55

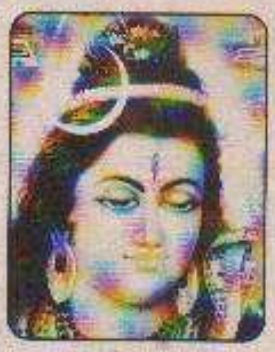

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार मंडल
डॉ० राम चैतन्य शास्त्री, श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव, श्री रमेश पाटिल, श्री एस.के. मिश्रा, श्री आर.सी.सिंह, श्री गंगाधर महापात्र, श्री कमल पाटिल, श्री सतीश मिश्रा (बम्बई), श्री एम. आर. वशिष्ठ, श्री सुधीर सेलोकर, श्री विजय शास्त्री (हरियाणा), श्री कृष्णा गौड़ा (बंगलोर), डॉ० एस. के. श्रीताल (नेपाल).

प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
द्वारा
नीरज आर्ट प्रिन्टर्स
10/2, DLF, इंडस्ट्रियल एरिया, मोती नगर, नई दिल्ली
से मुद्रित तथा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/—
वार्षिक : 195/—

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 308 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली–110034, फोन 011–7182248, टेली फैक्स : 011–7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर–342001 (राज०) फोन : 0291–432206, टेलीफैक्स : 0291–432810
WWW address – http://www.siddhashram.org E-mail add. – mtyv@siddhashram.org

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को सत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक गुमनाम या गुप्त होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद व तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेदार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में १२५/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी, तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक मेरी या संपादकीय लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के गिरस्त लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक व लेखक अपने व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के प्रकार हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उसे स्वकथित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव व पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

तपस्विनो यज्ञपरा सुधर्मिण,
सुवेदिनः दिव्यकलाः सुलक्षणाः।
सदुज्ज्वलं नैव न याति जीवनं,
बिना सदर्पणं निखिलेश्वराय ॥

साधक चाहे कितनी भी तपस्वी हो, यज्ञ सम्पादन करने वाला हो, धर्माचरण में संलग्न हो, ज्ञानवान हो, श्रेष्ठ कलाओं से परिपूर्ण हो तथा अच्छे लक्षणों से युक्त हो, फिर भी उसका जीवन समुज्ज्वलित या उसके जीवन का सौभाग्यपूर्ण निर्माण तब तक सम्भव नहीं हो सकता, जब तक सतगुरु के चरणों में उसका समर्पण नहीं होगा।

❊ सरल सुभाष न मन कुटिलाई ❊

एक बार सन्त एकनाथ गोदावरी में स्नान कर रहे थे कि उन्हें सामने पानी में एक बिच्छू बहता दिखायी दिया। उन्होंने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया, किन्तु जैसा कि बिच्छुओं का स्वभाव है, बिच्छू ने उनकी हथेली पर डंक मारा।

एकनाथ जी ने उसे और ध्यान न देकर बिच्छू को किनारे पर रख दिया और पुनः स्नान करने लगे। अकस्मात लहरों का झोंका आया और उसने किनारे के बिच्छू को अपनी चपेट में ले लिया। एकनाथ जी ने बिच्छू को दुबारा बहते देखा, तो फिर से उसकी रक्षा की और उस किनारे पर रख दिया। बिच्छू ने इस बार भी डंक मारा। चुपचाप हथेली को मलने लगे। लहर किनारे पर फिर आयी और बिच्छू को बहा ले गयी। सन्त ने इस बार भी उसकी रक्षा की और उसने डंक का वार सहा।

समीप ही एक व्यक्ति नहा रहा था। उसने यह सब देखा, तो एकनाथ जी से पूछा,

"महाराज ! यह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा है और आप बार-बार उसकी रक्षा कर रहे हैं। क्या ऐसे दुःखदायी जीव पर दया दिखाना उचित है?"

एकनाथ स्वामी ने जवाब दिया, "इसमें अनुचित क्या है? मैं अपने स्वभाव का धर्म उसके साथ बरत रहा हूं, और वह अपने स्वभाव धर्म का पालन कर रहा है। फिर हमें अपने स्वभाव धर्म से क्यों विमुख होना चाहिये?"

एही सबद में अमरत भरिया

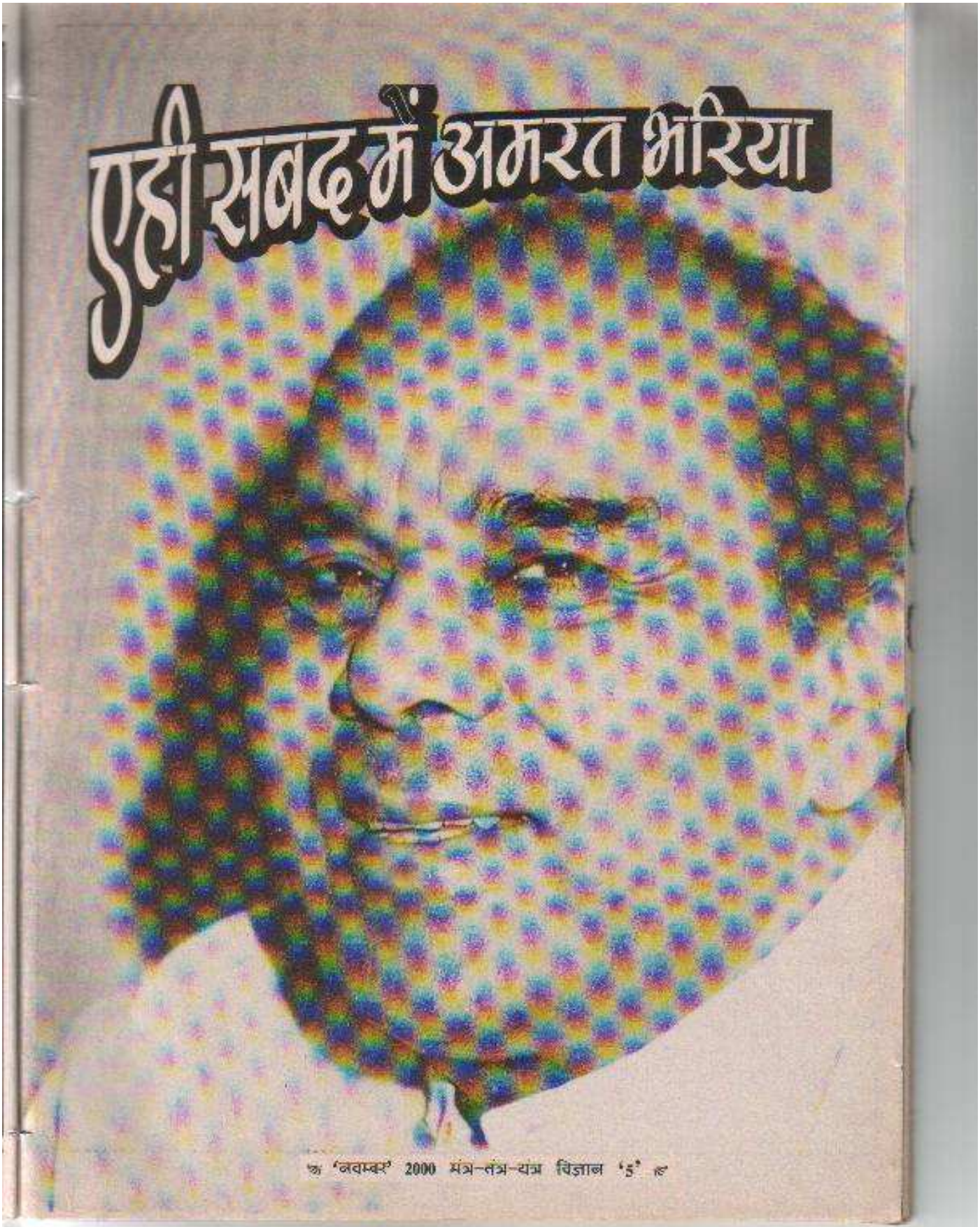

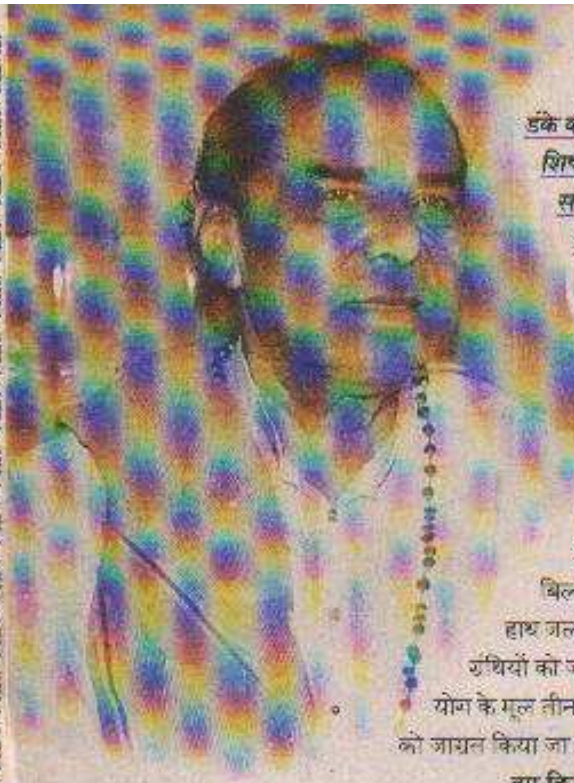

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली अपनी बात को ठोस डंके की चोट पर कहते थे, इसीलिए उनके द्वारा उच्चरित प्रत्येक वचन सीधा शिष्य के हृदय में उतरता था, क्रिया योग जैसे गूढ़ विलय को सरल रूप में समझाना केवल उनके ही बस की बात है, क्रिया योग के रहस्यों को स्पष्ट करता उनके महान प्रवचन का यह दूसरा खंड उनकी ही चिरपरिचित शैली में –

कर्म ग्रंथियां और ज्ञान ग्रंथियां जो हम जानते हैं, वे दस हैं . . . और जिनका हमें पता नहीं वे अट्ठानवे ज्ञान ग्रंथियां हैं।

''नव द्वार का पिंजरा जामे पंछी पौन''

नौ द्वार तो हमें मालूम हैं और दसवां – एक व्यक्ति, ये दस जन प्रचलित इंद्रियां हैं। इन्हीं इंद्रियों के माध्यम से शरीर चलता है, ये इंद्रियां केवल भोग के रास्ते पर बढ़ा सकती हैं। ज्ञान के रास्ते पर बढ़ाने के लिये उन अट्ठानवे ग्रंथियों को जगाना पड़ेगा, इसलिए अभी हम ज्ञान के बिलकुल कोरे हैं। अनुभव हमें अवश्य हो सकता है, यदि आग के पास जाकर हाथ जल जाए, तो इस जलने का अनुभव हो सकता है, परन्तु ज्ञान के लिए तो उन ग्रंथियों को जाग्रत करना पड़ेगा, और इन ग्रंथियों को जाग्रत करने के लिए इस क्रिया योग के मूल तीन आधार हैं। इन तीन आधारों के माध्यम से क्रिया योग द्वारा उन ग्रंथियों को जाग्रत किया जा सकता है।

हम क्रिया योग को कैसे प्राप्त करें?

एक गुरु यदि क्रिया योग को समझायें, तो कैसे?

इसके तीन चरण हैं – धारणा, ध्यान और समाधि।

सबसे पहले – धारणा।

दूसरी स्टेज है – ध्यान।

और तीसरी स्टेज है – समाधि।

तीनों क्षेत्रों को पार करने पर स्वतः ही क्रिया योग पूर्ण हो जाता है।

वहां प्रश्न उठता है, कि धारणा क्या चीज है?

'धारयति सा धारणा'

अर्थात "जिसको हम धारण करते हैं, वही धारणा है।"

किसको धारण करें? धारण करने योग्य चीज क्या है? सापेक्षता में धारणा होती है, हम तेल में तेल मिला सकते हैं, पानी में पानी मिला सकते हैं, दूध में दूध मिला सकते हैं, पर पानी में तेल नहीं मिला सकते, वे तो अलग-अलग ही रहेंगे। कबीर ने कहा है –

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना यह तथ कहा ज्ञानी॥

घड़े को नदी के अन्दर डुबोया गया है, उस घड़े में भी पानी है, घड़े के बाहर नदी में भी पानी है। नदी का पानी अलग है, जो बह रहा है, और घड़े का पानी अलग है। जब घड़े को फोड़ेंगे, तो उस घड़े का पानी नदी में मिलेगा . . . और मिलना ही ज्ञान की चेतना है।

शिष्य भी घड़ा है, और गुरु नदी है, जो प्रवाहशील है, पर दोनों के बीच में एक मिट्टी की दीवार है। घड़े को पहले फोड़ना पड़ेगा, उसमें जो रुका हुआ जल है, बासी पानी है, उसे उस प्रवाह में लीन करना पड़ेगा। अब घड़ा नदी के अन्दर तो है, और उस पानी की भी इच्छा हो रही है, कि मैं नदी में मिल जाऊं, मगर बीच में एक रेखा है, बीच में एक पूरा परदा है, जिसको माया कहते हैं।

– और जब हम माया को समाप्त कर देंगे, तब अपने आप ही पूर्ण क्रिया की ओर अग्रसर हो जायेंगे। उस माया के आवरण को तोड़ने के लिए जिस क्रिया को धारण किया जाता है, उसको 'धारणा' कहते हैं . . . और जब तक माया का परदा टूटेगा नहीं तब तक हम उस जल में, जो प्रवाहमान है, मिलेंगे नहीं। गुरु कहते हैं – मैं नदी हूं, जो बह रही है पिछले दस हजार वर्षों से, बीस हजार वर्षों से, और इस नदी का प्रवाह पूर्णता की ओर है, मेरा ही जल तुम में भरा हुआ है, परन्तु वह बासी हो गया है, उस जल में अपने-आप में पूर्णता नहीं है, और इस घड़े का जल मुझ में मिलना जरूरी है।

इसलिए शंकराचार्य जी ने उल्लेख किया, कि किस सापेक्षता में वह जल और नदी का जल मिल सकता है, इसीलिए धारण करने की क्रिया को इतना महत्व दिया गया है। देवता को शरीर में धारण नहीं कर सकते, वह इसलिए,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

कि जब बगलामुखी का दर्शन ही नहीं किया, तो प्रामाणिकता के साथ बगलामुखी का चित्र नहीं बन सकता, जो चित्र उपलब्ध हैं, वे प्रामाणिक हैं कि नहीं, कह नहीं सकते, क्योंकि जिसने देखा ही नहीं, वह चित्र नहीं बना सकता, और यदि बनाता भी है, तो मात्र कल्पना से।

इसलिए राम का चित्र है, कृष्ण का चित्र है, वो प्रामाणिक है कि नहीं कह सकते। हमने देखा नहीं, हमने सुना है, और जो सुना है, वह सत्य हो, यह आवश्यक नहीं है। एक धारणा के आधार पर हम इन देवताओं के प्रति नमन होते है, लेकिन जिसको हमने देखा नहीं, उसको शरीर में हम धारण नहीं कर सकते। धारण तो उसको कर सकते हैं, जिसको देखा हो। इंग्लैण्ड में एक लड़की एलिस रहती है, आप उसको प्यार कर सकते हैं, अगर जानते हैं तो, और जब उसको देखा ही नहीं, तो आप उसको प्यार कैसे करेंगे।

इसलिए जो कुछ देखा है, वह धारण किया जा सकता है। गुरु को देखा है, इसलिए गुरु को धारण किया जा सकता है। हमें मालूम है, वह बिलकुल हमारे जैसा ही है, एक जैसा ही पानी है, समानधर्मी, उसका भी हमारे जैसा ही शरीर है, अतः उसको धारण किया जा सकता है। इस प्रकार गुरु को धारण करने की क्रिया को धारणा कहते हैं।

उस ध्यान तक पहुंचने के लिए, समाधि तक पहुंचने के लिए, उस सहस्रार तक पहुंचने के लिए गुरु को धारण करना आवश्यक है, और धारण संसार में केवल गुरु को ही किया जा सकता है . . . अन्य सभी को प्यार किया जा सकता है, उसके सुख-दुःख में भाग लिया जा सकता है, पर धारण नहीं किया जा सकता . . . और जब शिष्य, गुरु को धारण कर लेता है, तो उनके बीच की माया की दीवार टूट जाती है, क्योंकि गुरु बता देते हैं, कि यह माया है, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। माया अपना काम करेगी, तुम अपना काम करो, मैं तुम्हारे पास हूं। नदी प्रवाहशील है और नदी का उद्गम कहां है, यह मुझे मालूम है। अब तुम इस नदी की एक धारा बन गये हो, तुम्हें कहां पहुंचना है, गुरु जानते हैं। अब गुरु तुम्हारे साथ है, तुम चिन्ता मत करो।

गुरु को धारण कर लिया, तो धारण करते ही गुरु के, दिव्य प्रवाह के साथ हो गये। वे आपको पूरी बात समझा सकते हैं, एक माया को रखते हुए भी, एक माया के बीच में रहते हुए भी। गुरु ही बताएंगे – नदी की दो धाराएं हैं, और तुम्हें उनके बीच में बहना है। यदि नहीं आता, तो मैं बता दूंगा, कि कैसे बहा जाता है, क्योंकि मैं पिछले पच्चीस हजार वर्षों से बहता हुआ आया हूं।

मगर वह क्षमता, वह ज्ञान, वह चिन्तन तब आ सकता है, जब गुरु को धारण किया जाए।

– और गुरु को इस शरीर में कहां धारण करें ?

– आंखों में तो कर नहीं सकते और हाथ-पैरों में भी नहीं कर

सकते। एक मात्र स्थान है 'तीसरा नेत्र', 'थर्ड आई' जिसको हमारे ऋषियों ने आज्ञा चक्र कहा है, दोनों भौंहों के मध्य में . . . भगवान शिव का चित्र देखेंगे, तो पूरे नेत्र का चित्र बना हुआ है . . . इसी के ऊपर सिर में चोटी के पास छठी इंद्रिय है। दोनों भौतिक आंखों के बीच में जो स्थान है, उस स्थान पर गुरु को धारण करते हैं। यह क्रिया योग का पहला चिन्तन है, पहला चरण है।

और गुरु को धारण किया जाता है, गुरु के प्रति अटैचमेन्ट पैदा करके। जो घड़े का जल है, वह प्रयत्न करे, नदी तो प्रयत्न कर रही है, घड़े का जल भी उसमें प्रयत्न करे, बीच की दीवार को तोड़ दे, और यदि नहीं टूटता तो पांच सौ वर्ष भी घड़ा, घड़ा ही रहेगा, और तुम एक ही कला में रहोगे।

इस पहली कला से सीधा सोलहवीं कला में छलांग लगाने के लिए यह जरूरी है, सबसे पहले पूरा शरीर बने, क्रिया योगमय बने, और उसकी पहली शर्त धारण करना है . . . और धारण उनको करना है, जो तुम्हारे गुरु हैं। वे जो तुम्हें डांट भी सकते हैं, पुचकार भी सकते हैं, तुम्हें गाली दे भी सकते हैं . . . और क्रोध से लात भी मार सकते हैं, पर किसी दूसरे को लात मारने नहीं देंगे – वे ही गुरु कहलाते हैं . . . तुम अगर मेरे शिष्य हो, तो मैं तुम्हें डांट सकता हूं, भला-बुरा कह सकता हूं, पर कोई दूसरा तुम्हें भला बुरा कहेगा, तो मैं उसकी आंखें नोच लूंगा।

धारण हम उसको कर सकते हैं, जिससे हम परिचित हैं, जो हमारे सामने आदर्श हैं, जो हमसे महान हैं, हमारे मन में जिनके प्रति आदर है, और जिनसे हम एकीकृत हो गये हैं, और यह स्थिति बनती है दो तत्वों से . . . एक तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं, कि गुरु कोई 'नारायण दत्त श्रीमाली' ही नहीं हैं, गुरु अपने आप में उस परम्परा का एक सूत्र हैं, जो आज से चालीस पीढ़ियों पहले थी – आज मैं हूं कल कोई और होगा . . . गुरु तो एक प्रतीक हैं, पर गुरु और शिष्य अपने आप में समाप्त नहीं हो सकते। काल कभी समाप्त नहीं होता, और व्यक्ति भी कभी समाप्त नहीं होता, केवल शरीर और देह समाप्त होते हैं, और फिर यदि आप में ताकत है, तो इस देह को भी आप अक्षुण्ण रख सकते हैं। इस देह को भी अत्यधिक सामर्थ्यवान बना दें, तो यह देह समाप्त नहीं होगी।

यह देह भी एक नवीन रूप धारण कर सकती है, यह कोई कठिन कार्य नहीं है। आवश्यकता इस बात की है, कि उस अमृत तत्व को प्राप्त करने के लिए हम गुरु को धारण करें . . . और गुरु को धारण किया जा सकता है दो तरीकों से, उन तरीकों को कहते हैं – 'सेवा' और 'समर्पण'। केवल होठों से बोलने से या गुरु को मिठाई खिलाने से उन्हें धारण नहीं कर सकते, और गुरु पांच करोड़ रुपये देने से भी नहीं आ सकते, इसके माध्यम से गुरु धारण नहीं हो सकते।

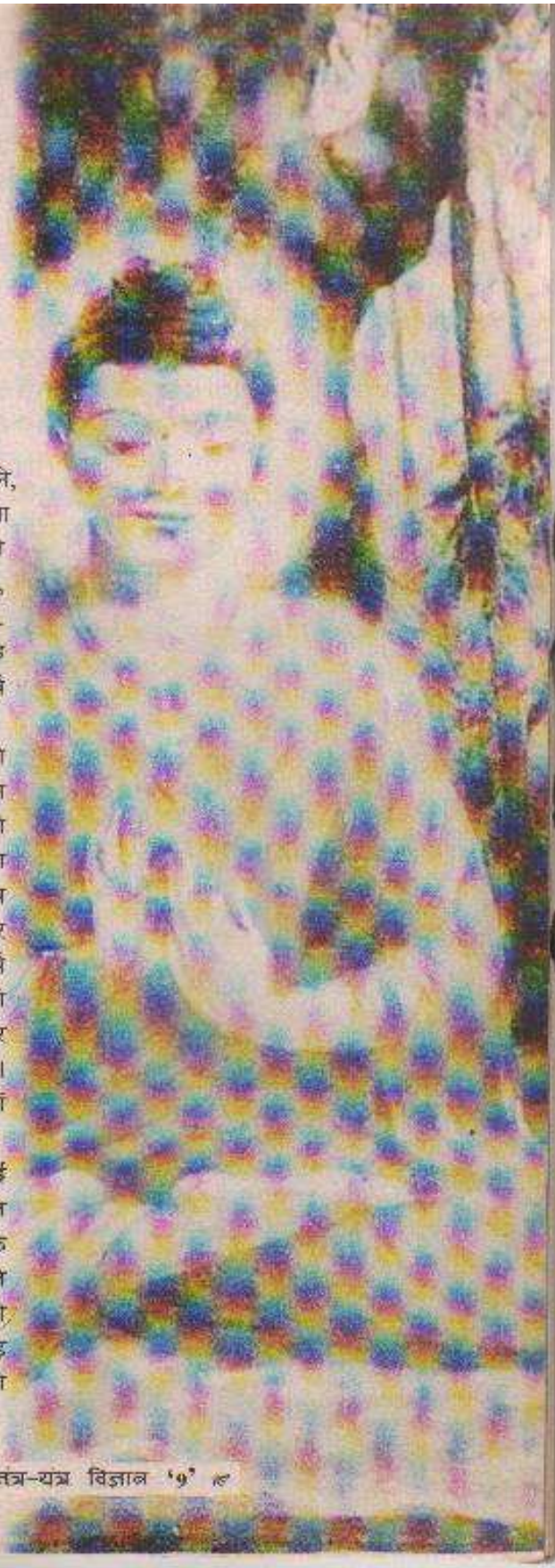

गुरु स्वयं धारण होते ही नहीं हैं, गुरु को तो शिष्य धारण करता है – सेवा के द्वारा। जिस चीज की गुरु को आवश्यकता है, उसकी पूर्ति की जाए, यह सेवा कहलाती है। गुरु को प्यास लगी है और गुलाब जामुन की प्लेट रख दें – गुरु जी! लीजिए खाइए। बेशक ये कीमती चीज है, पर इसकी उनको जरूरत नहीं है, यदि उनको पानी की जरूरत है, तो आप उनको पानी ही दें। गुरु को किस बात की आवश्यकता है, एक शिष्य का यही मूल चिंतन होना चाहिए।

यदि गुरु में स्वार्थी तत्व है, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते। अगर गुरु हैं, तो आप इस बात को ध्यान रखें, कि उनकी आंख के नर्तन को आप समझें और सीखें, कि गुरु को किस चीज की जरूरत है। गुरु नहीं भी बोलें . . . हो सकता है संकोच-वश नहीं बोलें।

एक गूढ़ तथ्य है – पैर दबाना, और यह अपने-आप में सामान्य प्रक्रिया नहीं है। ऐसे सैकड़ों साधु-संन्यासी हैं, जो अपने पैरों को स्पर्श नहीं करने देते।

क्योंकि गुरु के पैरों को स्पर्श करने का तात्पर्य है, कि गुरु के पास जो भी शक्ति है, जो भी तपस्या का अंश है, उसे प्राप्त करना। इसलिए वे अपनी तपस्या को अपने-आप में पुञ्जीभूत रखने की वजह से अपने पैरों को छूने नहीं देते . . . और अगर शक्ति है, पर विस्तृत न करें, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते।

गुरु का अर्थ है – देना, सेवा ले और अपनी सामर्थ्य और शक्ति को दे। यदि गुरु आप से पानी का गिलास मंगाकर पीते हैं, तो निश्चय ही कुछ तपस्या का अंश आपको प्राप्त होता ही है, और इसलिए गुरु संकोचवश काम नहीं सौंपते शिष्य को। परन्तु शिष्य उनकी आंख का नर्तन देख यदि समझ ले, कि गुरु को किस बात की आवश्यकता है – उसकी पूर्ति करने को सेवा कहते हैं।

मैं बिलकुल सरल और सामान्य सी भाषा में उस क्रिया योग को समझा रहा हूं। ब्रह्म, माया, चिन्तन जैसे जटिल प्रश्नों में मैं नहीं उलझा रहा हूं, क्योंकि क्रिया योग को समझाना अपने-आप में अत्यन्त जटिल है, बिना क्रिया में उतरे उसे कोई समझ भी नहीं सकता, और उस प्रक्रिया में उतार सकते हैं केवल गुरु।

इसलिए पहले आवश्यक है – गुरु सेवा . . . और सेवा ही आगे चलकर समर्पण बन जाती है। जब सेवा करते-करते व्यक्ति की स्टेज ऐसी आ जाती है, कि उसको अपना भाग नहीं रहता, तो वही अपने-आप में, गुरु में समर्पित हो जाता है, उसका शरीर, उसका चिंतन, उसका विचार, उसका धन, उसका मकान सभी कुछ अपने-आप में गुरुमय हो जाता है।

मैं भी उसी रास्ते से बढ़ा हूं, जिसका मैं उल्लेख कर रहा हूं। यदि मैं यह सलाह दे रहा हूं, तो मैंने भी उस सेवा और समर्पण के मार्ग पर पांव रखा होगा। उस सेवामें मैंने भी पच्चीस कदम भरे होंगे, और फिर समर्पण में पचास कदम भर के ही धारणा तक पहुंच होऊंगा। रास्ता तो एक ही है और उस रास्ते

जब चलकर यदि मैंने धारण किया है, तो वह बिलकुल प्रामाणिक रास्ता है, क्योंकि वह बिलकुल अनुभव गम्य है, और केवल इसी के माध्यम से, जिसको हम सिद्धाश्रम कहते हैं, वहां पहुंचा जा सकता है।

सेवा और समर्पण के माध्यम से ही गुरु को धारण किया जा सकता है। हां समय अवश्य लग सकता है – केवल पांच घंटे या फिर पांच सौ वर्ष। यह तो निर्भर है इस पर, कि आपकी सेवा किस स्तर की है – स्वार्थमय सेवा है या पूर्ण निःस्वार्थ सेवा है, और जब गुरु धारण हो जाता है, तब व्यक्ति अपने-आप में गुरुमय हो जाता है। जिस प्रकार से शादी का तरीका अलग है, संतान पैदा करने का तरीका अलग है, तो धारण करने का भी तरीका एकदम अलग है, इस रास्ते को अपनाना ही पड़ेगा, और यह इतना आसान है, कि इसके लिए यह भी कोई जरूरी नहीं है, कि गुरु आपके निकट हों, यदि आप अपनी जगह पर हैं और गुरु के प्रति चिंतन है, तो यह भी सेवा है। गुरु के पांव दबाने से ही सेवा होती है, यह कोई जरूरी नहीं। आप गुरु का चिंतन करें, आपको जो गुरु ने काम सौंपा है उसको करें, आप गुरु का स्मरण करें, आप गुरु की पूजा करें, ध्यान करें – यह सब कुछ गुरु सेवा ही है। आप यदि किसी कार्य को गुरु कार्य समझ कर करते हैं, तो यह अपने-आप में गुरु की ही सेवा है, और यही सेवा अपने-आप में समर्पण में बदल जाती है।

यदि तुम पूर्ण निष्ठा पूर्ण निष्ठा, समर्पण से मेरे पास दो दिन भी रहते, तो दो दिन दो सौ वर्षों के बराबर हो सकते हैं। यदि देने वाला सही हो और लेने वाला सही हो, तो दो दिन भी बहुत बड़ी बात है।

वैज्ञानिक ने बहुत मेहनत और मंथन करने के बाद में यह निश्चय किया, कि एक व्यक्ति सही ढंग से आठ घंटे काम कर सकता है। आठ घंटे से ज्यादा काम नहीं कर सकता, शरीर की एक लिमिट है, इसलिए सरकार आठ घंटे की नौकरी रखी . . . और यदि वह आठ घंटे काम करेगा, तो साठ साल तक बूढ़ा नहीं होगा।

मेरा उद्देश्य सदा यही रहा है, कि अधिक से अधिक शिष्यों को चेतना प्रदान कर सकूं। इसलिए समय की कभी परवाह नहीं की और लगातार वर्षों से बीस-बीस घंटे काम किया है, तो इस समय मैं हिसाब लगाऊं, कि बीस घंटे काम करके, घंटों के हिसाब से सौ वर्ष का हो चुका हूं मैं। अब सौ साल का व्यक्ति कैसा होगा, आप कल्पना कर सकते हैं। उसमें तकलीफ भी होगी, बेचैनी भी होगी, समस्याएं भी होगी। साधारणतः जब एक शरीर को बीस घंटे काम करवाएंगे, तो ऐसी स्थिति में एक क्षण ऐसा आता है, जब शरीर खुद खड़ा हो जाता है, सामने विद्रोह करने के लिए – यह क्या

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

है ? – ये कोई तरीका है क्या ? – मैं आज तक तुम्हारी हर बात मानता आया हूं।

– मगर मेरे साथ ऐसी कोई बात नहीं। इसमें तो कोई दो राय नहीं, कि जीवन के अन्तिम क्षण तक यह शरीर मेरे सामने विद्रोह तो कर ही नहीं सकता, यह तो गारण्टी है। मैं खुद निष्क्रिय नहीं हूं, तो उसको भी निष्क्रिय नहीं रख सकता। मैं पूर्ण चेतना में हूं, तो मेरे शरीर को भी चेतनावस्था में रहना ही पड़ेगा . . . और चाहे इसके लिए मुझे रातों-रात जागना पड़े, पर मैं अपने शिष्यों में इस चेतना को प्रवाहित करता ही रहूंगा।

– और अगर आप मेरे साथ रह सकें, कुछ पा सकें, तो इस पंक्ति को आप याद रखें –

"आने वाली पीढ़ियां इस बात पर विश्वास नहीं करेंगी, कि आप कभी निखिलेश्वरानंद के साथ रहे हैं!"

– मैं आप लोगों को बहुत आशीर्वाद दे रहा हूं, बता रहा हूं, कि शरीर

की दृष्टि से बेशक निखिलेश्वरानन्द का व्यक्तित्व छोटा सा हो, मगर एक गुरुत्व की दृष्टि से वे महान पुण्यदायक हैं। इसलिए कि वे उस कला से सोलहवीं कला तक धक्का देने में समर्थ व्यक्तित्व हैं। बस केवल उस व्यक्तित्व से स्पर्श प्राप्त करने की जरूरत है। यह जरूरत नहीं है, कि हम उनके साथ दो मिनट रहें या दो घंटे। केवल यह बड़ी बात है, कि हम उनके साथ रहें . . . यह बहुत बड़ा चिंतन है, यह मामूली चिंतन नहीं है। भवलाल गांधी के साथ मैं पांच मिनट रहा, यह मेरी पूंजी है, यह मेरी धरोहर है। मैंने उन्हें क्रिया योग की शिक्षा दी, मैंने उन्हें ध्यान, धारणा और समाधि सिखाई, यह मेरी पूंजी है . . . और शिष्य है, तो आप भी एहसास करेंगे और कहेंगे – यह मेरी पूंजी है, कि मैं निखिलेश्वरानंद जी के साथ रहा, दो साल रहा, दो महीने रहा, उनसे कुछ सीखा।

– और घड़ा तो आपका है, उस घड़े को फोड़ने की आवश्यकता है। मैं भी प्रवाह दे रहा हूं, प्रवाह तुम्हें भी देना पड़ेगा। एक गुरु की दृष्टि से वास्तव में ही मैं सौभाग्यशाली हूं। इसलिए कि मैं अपने आप में ही सैकड़ों हजारों रूपों में बिखरा हुआ हूं। इस शरीर का इतना मोह नहीं है, जो शरीर मेरे सामने हैं, वे सब मेरे हाथ हैं, पांव हैं, कान हैं, आंख हैं, नाक हैं, शरीर की धड़कन हैं, चिन्तन हैं। तुम सभी शिष्य समूह को मिलाकर जो पिण्ड बनाया जाता है, उसी को निखिलेश्वरानंद कहते हैं।

– और जब तक यह पिण्ड स्वस्थ है, तब तक मेरा शरीर तो अस्वस्थ हो ही नहीं सकता, और जब तक यह पिण्ड सक्रिय है, निखिलेश्वरानंद निष्क्रिय हो ही नहीं सकता।

मैं क्रिया योग जैसी गूढ़, दुष्कर, और अपने आप में अत्यधिक कठिन साधना को समझा रहा हूं, क्योंकि तभी मेरी मेहनत सार्थक होगी . . . और मैं आपको समझा सकूंगा, साधना के माध्यम से, मंत्रों के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से और योग के माध्यम से भी। यह अपने आप में अत्यन्त विशाल और जटिल विषय है, पर मैंने आपको संक्षेप में इस बात को समझाया, कि क्रिया योग चीज क्या है? और क्रिया योग को प्राप्त करने के लिए करना क्या है?

– कोई कठिन कार्य नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि हम उस व्यक्तित्व के साथ जुड़ सकें, एक हो सकें, मिक्स हो सकें, जो इसका पूर्ण ज्ञान रखता हो। अगर मिक्स हो जाएंगे, तो आप फिर घड़े का जल नहीं रहेंगे, नदी का जल हो जाएंगे . .

और अब नदी का जल हो जाएगे, तो नदी का एक सिरा ठेठ वहां तक है, जहां पच्चीस हजार वर्ष पहले हमारी पीढ़ियां अवस्थित थी – ज्ञान के क्षेत्र में . . . और अगला सिरा ठेठ सोलहवीं कला तक है। फिर कहीं आपको कोई व्यवधान, कोई परेशानी, कोई चिन्तन व्याप्त नहीं होगी, लेकिन आवश्यकता है – उसमें मिलने की, और इसके लिए माया के आवरण को तोड़ना ही पड़ेगा। निश्चित रूप से एकाकार होकर अपने आप में उन्हें धारण करना पड़ेगा, क्योंकि क्रियाशील आपको होना है, यह क्रिया पक्ष आपको करना ही है।

क्रिया योग आपको सीखना है, क्रियात्मक पक्ष आपका है, तो आपको धारण करना पड़ेगा। गुरु जबरदस्ती आपके तीसरे नेत्र में धारण नहीं हो सकते। आपको खुद ही इस बात के लिए बढ़ना पड़ेगा। समुद्र अपनी जगह पर ही है, नदी खुद गंगोत्री से तरंगित होती हुई, दौड़ती हुई समुद्र से जाकर मिलती है। समुद्र जाकर नहीं मिलता, उस नदी को जाकर मिलना है, समुद्र में एकाकार होना है। उसे अपने चिन्तन में, अपने विचार में धारण करना है . . . और गुरु शिष्य का यह जो सम्बन्ध है, वह एक पिता और पुत्र का सम्बन्ध है, एक हृदय और एक शरीर का सम्बन्ध है।

शंकराचार्य को बहुत परिश्रम करना पड़ा था, अत्यधिक दुःख, अत्यधिक तनाव उनको भोगना पड़ा था। उसके सामने सिद्धाश्रम का एक मार्ग, एक रास्ता, एक मार्गदर्शन था। काम सौंपा गया था शंकराचार्य को, शिष्यों को तैयार करने का . . . और मुझे भी उसी प्रकार शिष्यों को तैयार करना पड़ रहा है, और एक पिता के नाते मुझे अधिकार है अपने पुत्रों को आज्ञा देने का, क्योंकि मुझे आपकी पूंजी मांगने की आवश्यकता है नहीं, इसकी जरूरत नहीं है, कि आप मुझे कुछ दें। मेरा अधिकार है . . . मैंने कहा, कि मैं आपको डांट सकता हूं, भला बुरा कह सकता हूं, मगर यह सब दूसरों को नहीं करने दे सकता। इतनी हिम्मत तो मुझ में है, मैं वज्र की तरह आपके आगे खड़ा हूं, और मेरे होते हुए कोई आपका नुकसान नहीं कर सकता।

– और यदि गुरु हर क्षण आपके साथ है, तो आपको पूर्ण क्रियात्मक बनने से कोई प्रकृति, कोई माया रोक नहीं सकती है।

भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा – मैं महानिर्वाण ले रहा हूं, तुम्हें पूरे भारत में फैल जाना है, तो यह एक आदेश था।

और मैं भी कह रहा हूं – यह एक संक्रमण काल है, वर्तमान सभ्यता बहुत ही हल्की है, और हम पर हावी है, हमारे परिवार पर हावी है, हमारे दिल दिमाग पर हावी है, उसको धोना पड़ेगा और उसे धोने के लिए तुम्हें पूरे भारतवर्ष में फैलना पड़ेगा, चुनौती के साथ खड़ा होना पड़ेगा, चुनौती के साथ खड़ा होना पड़ेगा, उस सभ्यता के साथ में।

जो तुम्हें यह कहते हैं – मंत्र क्या होता है? तंत्र क्या होता है? योग क्या होता है? उनके बीच में दम ठोक के खड़ा होना पड़ेगा, कि मैं बताता हूं . . . और मेरे शिष्य जवाब देने के लिए सक्षम हैं। इतनी क्षमता आप में होनी चाहिए, और यह क्षमता आप में है, क्योंकि यदि उनको आप जवाब नहीं दे सकेंगे, तो वे आप पर हावी होंगे, और कायरता के साथ जिन्दा रहना गीदड़ की जिन्दगी से ज्यादा घटिया है। कायरता के साथ जिन्दा नहीं रहना है, जिन्दा रहना है दमखम के साथ, आंखों में चुनौती के साथ, आंख में अंगारे भरकर जिन्दा रहना है . . . और आंखों में वे अंगारे, आंखों में वह चेतना, आंखों में सक्रियता केवल गुरु ही प्रदान कर सकते हैं।

पूर्ण शरीर की एक सौ आठ इंद्रियों को जाग्रत कर सकें, यही जीवन की श्रेष्ठता है . . . और वे जाग्रत हो सकती हैं – ज्ञान के माध्यम से, वे जाग्रत हो सकती हैं – विचारों के माध्यम से, वे जाग्रत हो सकते हैं – विशिष्ट प्रक्रिया के माध्यम से, यह इस विशिष्ट प्रक्रिया . . . क्रिया योग का पहला चरण है – धारण।

मैंने तो आपको केवल एक ग्रंथि के बारे में ही बताया है, जो बहुत हल्की सी है, और ग्रंथियां तो एक सौ आठ हैं और एक सौ आठ ग्रंथियों से क्या-क्या प्राप्त हो सकता है, उसको तो एहसास किया जा सकता है, चिन्तन किया जा सकता है। मरुस्थल में भयंकर गर्मी होती है, परन्तु उससे भी ज्यादा गर्मी सोने को दी जाती है, अत्यधिक आंच के अन्दर उसे डाल दिया जाता है, जिससे कि वह खरा बन सके। गुरु उस विशिष्ट आंच तक पहुंचाने के लिए अभ्यास करवाते हैं . . . इससे भी ज्यादा तेज आंच, गर्मी, दुख को मैंने एहसास किया है।

संगुम्फन क्रिया रहस्य

प्रयोग प्रथमं प्रमथं प्रमेयं, प्रीतिः परेवं परितं पुरुषोत्थमार्थं।
प्रेमं प्रतां परिवोत परमेव प्रीयतं, प्रतीत्यर्थं रूप सवितं क्रियमेव तुत्वं॥

– "मेरा सारा जीवन जड़ता से भरा हुआ है। एक ऐसा जीवन जो अपने-आप में सक्रिय और जीवन्त है – उमंग, जोश, उल्लास और आनन्द नहीं है। यह तो एक ऐसा जीवन है – जिसको केवल मैं ढो रहा हूं, खींच रहा हूं . . . और किसी न किसी प्रकार से इस शरीर को अपने पांवों पर ढोता हुआ मृत्यु की तरफ निरन्तर अग्रसर हो रहा हूं, और इस तथ्य का मुझे ज्ञान है, इसलिए मैं इससे विचलित हूं, परन्तु मुझे कोई रास्ता नहीं मिल रहा है।"

– "मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है, कि मैं इस जड़ शरीर को जीवन्त कैसे बनाऊं? – मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है, कि मैं निरन्तर मृत्यु की ओर जाता हुआ ठिठक कर कैसे रुकूं? – अमृत्यु की ओर कैसे बढ़ूं, मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है? – मैं अपने जीवन की पूर्णता की ओर कैसे पहुंचूं, मुझे इस बात का भी ज्ञान नहीं है?"

– **" इसलिए हे जगदम्बा! हे भगवती!! अब मैं तुम्हारी शरण में हूं। आप मुझे उस गुरुत्व से मिलाकर क्रियमाण करिये, जिससे कि मैं अपने जीवन के सारे उद्देश्यों को प्राप्त कर सकूं।"**

भगवतपाद शंकराचार्य का यह श्लोक, एक अनूठा श्लोक है, जिसमें सारे अक्षर 'प' से ही शुरु होते हैं। उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य इस श्लोक द्वारा सामने रखे हैं। यह संसार केवल एकत्र होने के लिए कोई स्थान नहीं है, यह जीवन केवल इस बात के लिए भी नहीं है, कि तनावों में ही फंसे रहें, और यह जीवन इस बात के लिए भी नहीं

है, कि हम नृत्य बने रहें। यह जीवन तो अपने-आप में निरन्तर चैतन्य होने का, निरन्तर गतिशील बनने का, ऐसा नृत्य, जिससे सारा शरीर थिरकने लग जाए, हमारे शरीर के बाह्य अंग तो थिरकें, हमारा अन्तर भी नृत्यमय हो जाए, साथ ही हमारी आँखें मुस्कराने लग जाएं, होंठ गुनगुनाने लग जाएं, हमारी आवाज मुखरित हो जाए, हमारा चेहरा सौन्दर्यतम लगने लग जाए, हमारा सारा अंग-प्रत्यंग नाचने लग जाए।

— और ऐसा तब हो सकता है, जब गुरु धारण हो।

शंकराचार्य ने कहा है — ''मेरे पास अपने जीवन को परखने की कोई कसौटी ही नहीं है, कोई ज्ञान ही नहीं है, बस गुरु को सही ढंग से ढूंढ सकूं, उस गुरु को पहिचान सकूं।''

यदि शिष्य गुरु को पहिचानने की क्षमता उत्पन्न कर सकेगा, तो ही वह पूर्ण बन सकेगा . . . किन्तु शिष्य में यह सामर्थ्य होता ही नहीं है, क्योंकि केवल ज्ञान के स्तर से ही उस दिव्यता को पहिचाना जा सकता है।

— उस शिष्य ने . . . शंकराचार्य ने अपनी व्यथा व्यक्त की है।

जब ''स्वामी गोविन्दपादाचार्य जी के सामने शंकराचार्य पहुंचे, तब वे ठीक उसी प्रकार से थे, जिस प्रकार से आप हैं, ऐसा ही उनका व्यक्तित्व था। कोई प्रारम्भ से ही तो महान व्यक्तित्व नहीं बन जाता

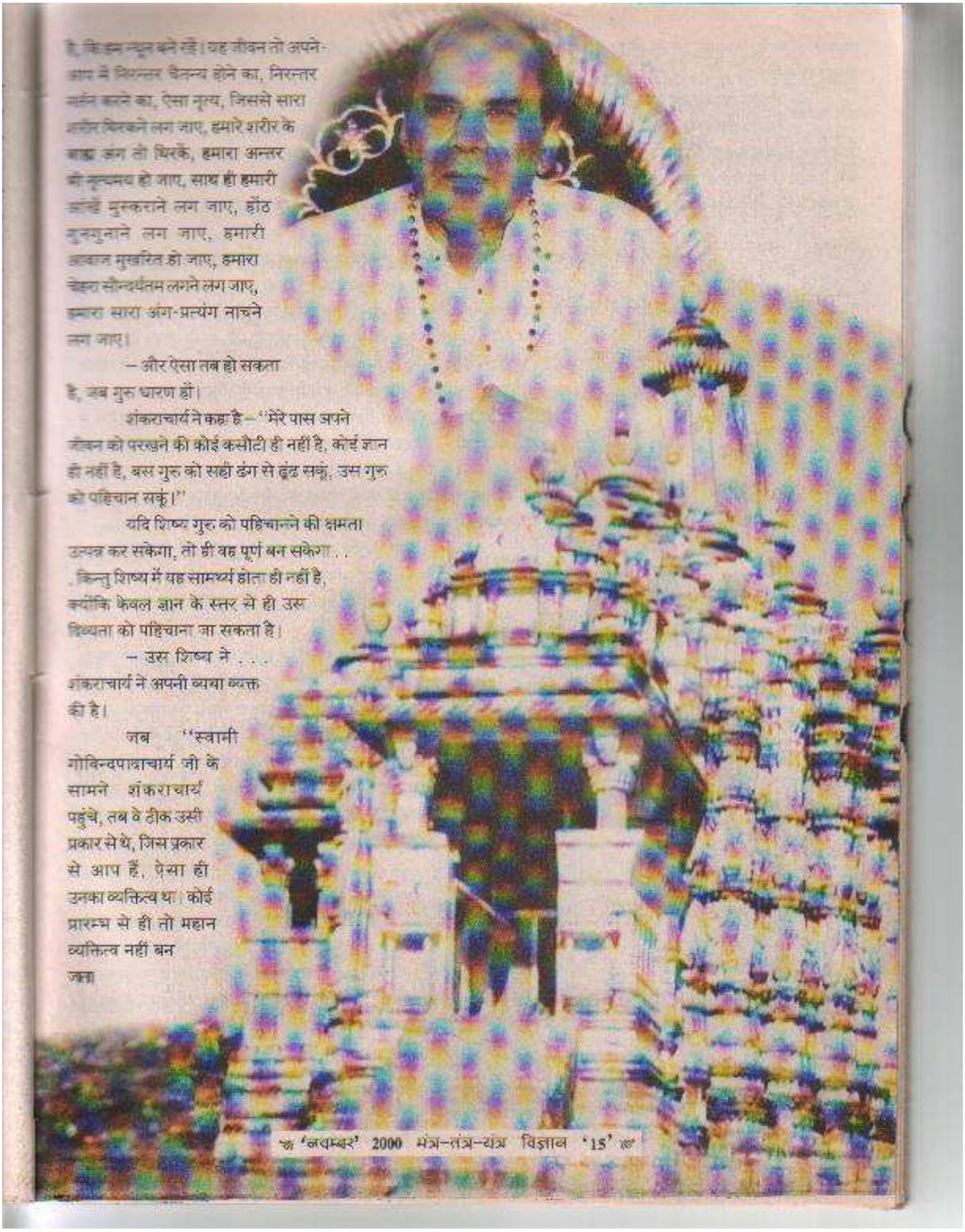

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह बात अलग है, कि उनके पिछले जीवन की कुछ कलाएं अपने-आप में जीवन्त रही होंगी और उन कलाओं की पूंजी उस दिन स्वतः प्रस्फुट हो सकीं।

– क्योंकि जब कलाएं जाग्रत होने की अवस्था आती है, तो सही गुरु मिल जाते हैं।

– पिछले जीवन की कलाएं जब अपने-आप में चैतन्य होने लग जाती हैं, तो गुरु का सान्निध्य मिल जाता है, गुरु का ज्ञान मिल जाता है, गुरु के ज्ञान को क्रियमाण करने का अवसर मिल जाता है . . . ये सब कुछ पुरानी पूंजी का ब्याज प्राप्त करने की क्रिया है। आप एकदम से नये सिरे से सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि आप नये सिरे से गुरु के पास नहीं आ सकते। आज अगर आप गुरु के पास बैठे हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है, कि आज आपने पहली बार कोई प्रयत्न किया है, जरूर पिछली पूंजी आपके पास है, और उसके ब्याज से ही आज आप गुरु के पास तक पहुंच सके हैं।

– और गुरु का द्वार कोई नृत्यशाला या रंगशाला नहीं है, आमोद-प्रमोद का स्थान नहीं है। वहां पर आपको कोई ज्यादा स्वागत-सत्कार या सुख-सुविधाएं दी जाए, केवड़ा और गुलाब जल छिड़का जाए – ऐसा कुछ नहीं है। ऐसा करने के लिए तो जीवन में सैकड़ों स्थान हैं, जहां हम अपने ऊपर गुलाबजल और केवड़े छिड़कवा सकते हैं – ऐसे बहुत से स्थान हैं . . . मगर वे इस जीवन की ऐसी पूंजी हैं, जो अगले जीवन में आपको तकलीफ देंगी। आप जो कमा रहे हैं, उसका ब्याज तो लेना ही पड़ेगा आपको अगले जीवन में। वह ब्याज ''भोगे रोग भयं'' भोग अपने-आप में रोग में ही परिवर्तित होता है . . . यदि मैं बहुत ज्यादा खाऊंगा, तो अजीर्ण होगा ही . . . बहुत ज्यादा चलूंगा, तो पैरों में गांठे पड़ेंगी ही . . . उसमें कोई बहुत कहने की जरूरत नहीं है। इसलिए अगर आप भोग में लिप्त हैं, तो भोग के माध्यम से आप जो कुछ भी प्राप्त करेंगे, उसका फल आप जीवन में भोगेंगे ही, और इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में, वह फल तो भोगना ही पड़ेगा।

जैसा कि मैंने बताया काल के टुकड़े नहीं हो सकते, जिस समय के स्थान पर आपने दस्तक दी, जो कार्य किया उसका प्रभाव प्लस या माइनस तो होगा ही, आपकी छोटी सी छोटी घटना भी रिऐक्शन करेगी ही।

एक छोटी सी गोली इतने बड़े शरीर में जाकर अपना प्रभाव दिखाती है – 'यदि मैं एक गोली लूं, और सिर का दर्द समाप्त हो जाएगा, और यदि चार छः गोली एक साथ ले लूं, तो सिर का दर्द और बढ़ जाएगा, वह रिऐक्शन एक घंटा तकलीफ दे सकता है, और चार घंटा भी तकलीफ दे सकता है, और नींद की गोलियां चालीस एक साथ ले लूं, तो मैं मर भी सकता हूं। वे गोलियां एक बटन जितनी बड़ी होती हैं, कोई बहुत बड़ी नहीं होती, परन्तु प्रभाव अचूक होता है।'

इसलिए यह शास्त्र सम्मत तथ्य है, यह व्यावहारिक तथ्य है कि हम जीवन में जो कुछ भी कर रहे हैं, हमारी वैसी ही संतान पैदा हो जाएगी। संतान हमने पैदा की, हमारे ही पुत्र और पुत्रियां हैं, और वे हमारा ही कहना नहीं मानते। हमसे विपरीत रास्ते पर चलने लग जाते हैं। हमारा ही आदर सम्मान नहीं करते। हमारा स्वयं का शरीर जिसको हमने खूब साबुन लगा लगा करके, खिला-पिला करके तैयार किया है, और वह ही हमारा कहना नहीं मानता, थक

जाता है, कमजोर हो जाता है, चल नहीं सकता, खा नहीं सकता, पी नहीं सकता।

– इसलिए कि हमने जो कुछ किया है, उसका परिणाम हम अब भोग रहे हैं। पिछले जीवन में आपने जो कुछ भी किया होगा, उसका फल आपके सामने बिलकुल प्रत्यक्ष होगा ही परन्तु पिछला जीवन तो आपको ज्ञात नहीं है, इसलिए सोचेंगे – आखिर मेरे जीवन में इतनी विडम्बनाएं, इतनी बेचैनी इतनी परेशानियां, इतनी बाधाएं क्यों हैं? चेहरे पर आनन्द नहीं है, चेहरे पर उमंग नहीं है, आंखों में जो एकदम से नृत्य होना चाहिए, मुस्कराती हुई आंखें होनी चाहिए . . . आखिर वह क्यों नहीं है? चेहरे पर जो ओज होना चाहिए, जो चमक होनी चाहिए . . . वह क्यों नहीं है?

आप घी खाते हैं, बिस्कुट खाते हैं, उसके बावजूद भी आपका चेहरा मुर्दे की तरह क्यों है? इसमें किसी प्रकार की कोई हलचल क्यों नहीं है? प्रभु ने तो चेहरा ऐसा नहीं दिया। आप जब पैदा हुए, तो खिलखिला रहे थे, मुस्करा रहे थे, बहुत नृत्य कर रहे थे, और आपकी आंखों का नृत्य देखकर आपके मां बाप बहुत खुश हो रहे थे – रोते हुए चेहरे को देखकर नहीं, रोते हुए चेहरे को देखकर वे उदास हो जाते हैं। उस समय आपके चेहरे में जरूर कुछ विशेषता रही होगी, जिससे आपके मां-बाप, आस-पड़ोसी खुश थे – वह खिला हुआ चेहरा आप ही का था, पर अब आपको क्या हो गया ? प्रभु ने तो आपको बड़ा सुन्दर जीवन दिया था, बड़ा सुन्दर चेहरा दिया था, तो फिर आज यह क्या हो गया?

– आपने जो कुछ कमाया, उसी का फल आपके सामने है, और ये सब आपके पिछले जीवन की कमाई है . . . यदि पिछले जन्म के कुछ पुण्य शेष होंगे, तो व्यक्ति को गुरु अवश्य मिलेंगे ही।

शंकराचार्य ने कहा – ''हे अम्बे! मैं जीवन में यही चाहता हूं, कि मुझे कोई ऐसे गुरु मिल जाए, जो यह समझ सकें, कि जीवन क्या है?''

और यह वही समझ सकते हैं, जो खुद समझे हुए हों, जो खुद पूरे उपनिषदों को समझ सकते हों, वे ही गुरु हैं। पढ़ना लिखना नहीं, पढ़ने लिखने से ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। उपनिषद को पढ़कर स्वयं मंथन करें, तो आप भ्रमित हो जाएंगे, क्योंकि यदि तैत्तरियोपनिषद में एक बात कही गयी है, तो आरण्यक उपनिषद में विरोधी बात क्यों कही?

इन उपनिषदों में एक ही बात को विरोधी भाव से क्यों कहा गया?

आखिर इन दोनों में सत्य कहां है?

जिस उपनिषदकार ने यह बात कही, इसके पीछे उनका मन्तव्य क्या था?

इन सभी प्रश्नों का उचित निष्कर्ष निकाल कर, उसके अनुसार ज्ञान के पुष्ठन को लेकर, जो खड़े होते हैं, उनको गुरु कहते हैं। भगवे कपड़े पहिनने से तो गुरु नहीं बना जा सकता। गुरु का अपने आप में कपड़ों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारे पिछले जीवन के तो कोई गुरु ऐसे थे ही नहीं, जो भड़कीले कपड़े पहिनते थे। कुरता था, वह भी खोल दिया, धोती भी खोल दी, बस लोक-लाज के भय से एक लंगोट अवश्य लगा कर रखा, ऐसे थे वे त्यागवृत्तिमय।

शंकराचार्य ने कहा – मैं जीवन के उद्देश्य चाहता हूं, मैं जीवन में आत्यात्मिकता के साथ ही साथ सभी भौतिक दृष्टियों से भी पूर्णता चाहता हूं।

संन्यासी जीवन में यदि कोई भौतिक दृष्टि से पूर्णता चाहे, तो कोई दोष नहीं है। कोई गुरु यदि मिठाई खाए, तो कोई पाप नहीं है। यदि गुरु सिनेमा देख ले, तो कोई अधर्म नहीं है। मैं

तो सिनेमा रोज देखता हूं – एक व्यक्ति खड़ा होता है, अपनी पत्नी को गालियां देता है, लातें मारता है, थप्पड़ मारता है। देखता हूं विलेन और हीरो के लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, और फिर हीरो उसको बहकाता है और उसकी लड़की के साथ भाग जाता है।

– ऐसे केस तो रोज मेरे पास आते हैं। मैं उनके चेहरे को देखता हूं, तो सोचता हूं, यह तो फिल्म का ही एक पार्ट है, उनका जीवन एक फिल्म की भांति मेरे मनःचक्षुओं के समक्ष स्पष्ट हो जाता है – दिन रात ऐसी फिल्म देखता हूं, तो फिर यदि तीन घंटे की एक फिल्म देख भी लूंगा, उसमें क्या दोष आ जाएगा।

मगर हमारी आंखें इतनी स्थूल हो गई हैं, कि हम कहते हैं – अरे ! गुरु जी बेकार हैं, गुरु जी को सिनेमाघर में देखा था आज। – अरे ! कमाल हो गया आज, मैंने उन्हें टिकट लेकर फिल्म देखते हुए देखा . . . अब गुरु जी में ज्ञान खत्म हो गया, अब जो उपनिषद का ज्ञान गुरु जी में था, वह समाप्त हो गया। गुरु जी ने जो वेद पढ़े थे, वे खत्म हो गए, क्योंकि गुरु जी ने सिनेमा देख लिया।

यह हमारी न्यूनता है, कि हम नहीं समझ पा रहे हैं। गुरु अपने आप में सिनेमा में देखने से, भगवे कपड़े पहिनने या नहीं पहिनने से, करोड़पति होने से, या भिखारी बनने से गुरु नहीं बन सकते – ये गुरु की परिभाषाएं हमने गलत बना दी हैं। वास्तव में ही हम गुरु को पहिचान नहीं पा रहे, इसीलिए ढोंगी और पाखण्डी गुरु बन गए, और जब वे ढोंगी और पाखण्ड गुरु अट्ठानवे प्रतिशत बढ़ गए, तो दो परसेन्ट जो गुरु थे – वे भी दब गए बेचारे, और वे छदम् गुरु घंटाल पूरी तरह से छा गए, जिनके छाने से हमारे मन में यह संदेह पैदा हो गया, कि मंत्र बेकार होते हैं।

शंकराचार्य ने कहा – मैं अपने शरीर को अत्यन्त भार स्वरूप लिये ढोते हुए जी रहा हूं। ऐसा लगता है,

मेरे मुर्दे को उठा कर श्मशान की ओर जा रहा हूं। मेरे जीवन में कुछ भी नवीनता नहीं है। मैंने गृहस्थ जीवन भी जी करके देख लिया, कुछ अलग से नहीं है।

उससे पहले तो व्यक्ति सोच रहा था, कि यों होगा, और ऐसा होगा, वैसा होगा, परन्तु देखने के बाद मैंने एहसास कर लिया। शादी करने के बाद भी जीवन में जो चेहरे पर उमंग, चैतन्यता और ओज होना चाहिए था, वह नहीं है। पैसा कमा कर भी देख लिया, मकान बनाकर भी देख लिया, शहर में रहकर भी देख लिया, और प्रकृति में घूम कर भी देख लिया, परन्तु जीवन का जो वास्तविक आनन्द है – वह मुझे भोग में मिला ही नहीं। संन्यासी बनकर भी देख लिया, भगवे कपड़े पहिन करके, और गंगा में खड़े होकर भी देख लिया, आनन्द उसमें भी प्राप्त नहीं हो सका – दोनों ही अवस्थाओं में मैं अपने शरीर को, अपने कंधों पर लेकर निरन्तर मृत्यु की ओर जा रहा हूं।

– और मैं चाहता हूं, कि मेरा जीवन नर्तनयुक्त बने, थिरकता हुआ बने, हंसता खिलखिलाता हुआ और अपने आप में पूर्ण आनन्द व उमंग लिए हुए हो, रोग रहित हो।

और तीसरी बात उन्होंने यह कहा है, कि मैंने जीवन में जो अधूरापन भोगा है, उसको पूर्णता की ओर ले जाना चाहता हूं।

जैसा कि मैंने बताया, कि प्रत्येक व्यक्ति अणु है, और वह अणु अपने आप में महान हो सकता है, और महान होता ही है, यदि अणु पूर्णता तक पहुंचने की क्षमता रखता हो –

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर उरूजाज से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है॥

ऐसा व्यक्तित्व ही सफल हो सकता है, जो जमीन पर खड़ा तो हो, मगर उसमें आसमान को छूने की ताकत हो, आगे बढ़ने का संकल्प हो, क्षमता हो।

– और शंकराचार्य के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनके गुरु जो अपने-आप में ज्ञान के विराट पुंज थे, उन्होंने कहा –

पूर्णं मदं पूर्णं मदेव सिन्धुं ज्ञानेव रूपं परिमं प्रवेयं।
सः शंकरं सहित रूप मदेव तुल्यं, क्रियायोग रूपं क्रियायोग रूपं॥

– और कोई दूसरा तरीका नहीं है तुम्हारे पास, और किसी दूसरे तरीके से तुम जीवन की पूर्णता प्राप्त भी नहीं कर सकते – तुम भौतिक जीवन का भी आनन्द चाहते हो – तुम संन्यास जीवन का भी आनन्द चाहते हो।

– तुम अपने जीवन को अणु रूप में भी देखना चाहते हो – तुम अपने जीवन को उस महान पूर्णता के रूप में भी देखना चाहते हो – तुम इस जड़-शरीर को चैतन्य भी करना चाहते हो – और तुम नर्तनयुक्त और थिरकनयुक्त भी बनना चाहते हो तो केवल क्रिया योग के माध्यम से ही जीवन की ये सभी स्थितियां प्राप्त हो सकती हैं, परन्तु साथ ही साथ उन्होंने कहा – यह दुर्लभ है, यह बहुत कठिन है, यह बहुत पेचीदा है।

पेचीदा इसलिए, क्योंकि इसको समझाना पेचीदा है . . . समझना पेचीदा नहीं है, परन्तु यदि समझाने वाला सही चिन्तनयुक्त नहीं है, तो नहीं समझा सकता, क्योंकि वह केवल यह कहे, कि "काल पुरुष स्वरूपी अणु को महान से जोड़ने की क्रिया, और अणु को महान में जोड़कर के ब्रह्मत्व में लीन कर देने की क्रिया, जिस प्रक्रिया से अपने-आप में अणु महान, विराटयुक्त बन जाता है, उसको क्रिया योग कहते हैं।"

– पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

मंत्र साधना सिद्धि यंत्र

व्यक्ति जब साधना पथ पर शुरु-शुरु में कदम रखता है, तो उसे सफलता प्रथम प्रयास में ही मिल पाना कोई आश्चर्य वाली बात नहीं है। सम्भव है, कि अनुभवी न होने के कारण, साधना विधि में त्रुटि तथा मंत्र उच्चारण में अशुद्धि हो सकती है . . . और इस तरह अपेक्षित फल प्राप्त नहीं हो पाता। लेकिन अनुभवी हो जाने पर भी यदि साधक को मंत्र साधनाओं में आंशिक रूप से भी सफलता हस्तगत नहीं होती, तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि साधक का अपने मन पर नियंत्रण नहीं है। बिना मन को एकाग्र किए मंत्र साधना में सफलता संदिग्ध ही रहती है।

इस यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित करने से साधना स्थल के वातावरण एवं साधक के मन में विशेष परिवर्तन होता है, साधक का चित शुद्ध होकर ध्यान में एकाग्रता को प्राप्त करता है। और यहीं से तो प्रारम्भ होता है यंत्र साधनाओं में सफलता का। एक प्रकार से यह यंत्र मंत्र साधना साफल्य यंत्र भी है। इसके प्रभाव से किसी भी साधना में सफलता की संभावना बनने लगती है।

विधि – यह यंत्र पूर्ण तेजस्विता युक्त होता है। इसके लिए किसी मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है। किसी पूर्णिमा की रात्रि ९ बजे के बाद इस यंत्र का पुष्प, अक्षत, धूप, दीप से संक्षिप्त पूजन कर पूजा स्थान में स्थापित कर दें। तीन माह बाद जल में विसर्जित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित **पोस्टकार्ड नं ४** को स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क – १९५/- डाक खर्च अतिरिक्त ३०/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर -३४२००१, (राज.)

फोन : ०२९१-४३२२०२, फैक्स -०२९१-४३२०१०

इसी देह में ही देवता निवास करते हैं

जो मनुष्य अपनी देह को समझ लेता है उसे ज्ञानी कहा जा सकता है, देह का तात्पर्य केवल शरीर के अंग नहीं अपितु उन अंगों में स्थित चेतना है, उस चेतना को पूर्ण रूप से समझना ही देह का ज्ञान है हमारी देह में प्रत्येक अंग के अधिष्ठाता देव है उन देवों की साधना आराधना करना शरीर को पुष्ट बनना है मन को शांत चित्त को निर्मल बनाने के साथ पूर्ण रूप से ज्ञान विवेक और बुद्धि से युक्त होना है।

यह देह जिसमें परमात्मा ब्रह्म का आवास माना जाता है शरीर की सारी क्रियाएं अपने आप चलती रहती हैं ऐसा लगता अवश्य है लेकिन मनुष्य शरीर में इन्द्रियों और अन्तकरण में प्रगट रूप में देवता स्थित है, भगवान ने अपनी अचिन्त्य शक्ति से माया से वृक्ष, सरीसृप (रेंगने वाले जन्तु) पशु, पक्षी, डांस और मछली आदि अनेकों प्रकार की योनियां रची, परंतु उनसे उन्हें संतोष न हुआ। तब उन्होंने मनुष्य शरीर की सृष्टि की। यह ऐसी बुद्धि से युक्त है जो ब्रह्म का साक्षात्कार कर सकता है। इसकी रचना करके वे बहुत आनन्दित हुए।

इस शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियां हैं और उतने ही देवता भी हैं। उनमें और सब तो अप्रकट रूप से हैं, किन्तु चौदह देवता (१० इन्द्रियों के तथा चार अन्तःकरण के अधिष्ठाता) प्रकट रूप में हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

१. चक्षुरिन्द्रिय के देवता –

चक्षुओं में भगवान सूर्य का निवास है और ये ही सूर्य चक्षुरिन्द्रिय के अधिष्ठाता देवता है। इसीलिए चक्षुओं द्वारा ही रूप दर्शन संभव हो पाता है। रूपदर्शन का अधिकार चक्षुरिन्द्रिय को ही है, अन्य को नहीं। नेत्र सम्बन्धी विकृतियों के लिए चाक्षुषोपनिषद, सूर्योपनिषद आदि सूर्यदेवतापरक उपासनाओं से विशेष लाभ होता है।

२. घ्राणेन्द्रिय के देवता –

नासिका के अधिष्ठाता देवता अश्विनी कुमार है। नासिका के द्वारा गन्ध का ज्ञान होता है। गन्ध तत्व के अधिकारी देवता अश्विनी कुमार है। इनका नासिका में अधिष्ठान है।

३. श्रोत्रेन्द्रिय के देवता –

श्रोत्र कान के द्वारा शब्द का श्रवण होता है। इसके अधिष्ठाता दिक् देवता है। इससे शब्द का ज्ञान होता है।

४. जिह्वा के देवता –

जिह्वा में वरुण देवता का निवास है, इससे रस का ज्ञान

होता है। इसीलिए जिह्वा को रसना भी कहा जाता है।

५. त्वक् के देवता –

त्वचा के द्वारा जीव स्पर्श का अनुभव करता है। इस त्वगिन्द्रिय के अधिष्ठाता वायु देवता हैं, त्वचा में वायु देवता का निवास है।

६. हाथों के देवता –

ग्रहण, त्याग, बल, और पराक्रम आदि से सम्बद्ध सभी कर्म हाथों के द्वारा सम्पन्न होते हैं, इनमें इन्द्र देवता का निवास होता है और ये ही हस्तेन्द्रिय के अधिष्ठाता देवता है।

७. चरणों के देवता –

चरणों के देवता श्री विष्णु हैं, इनमें विष्णु का निवास है। इनके द्वारा धर्म की सिद्धि के लिए तीर्थयात्रादि सेवा धर्म होते हैं।

८. वाणी के देवता –

जिह्वा दो इन्द्रियां हैं, एक रसना तथा दूसरी वाणी। रसना के द्वारा आस्वादन होता है और वाणी के द्वारा सब शब्दों का उच्चारण होता है। वाणी में देवी सरस्वती निवास है, ये देवी वाणी की अधिष्ठाता देवता हैं।

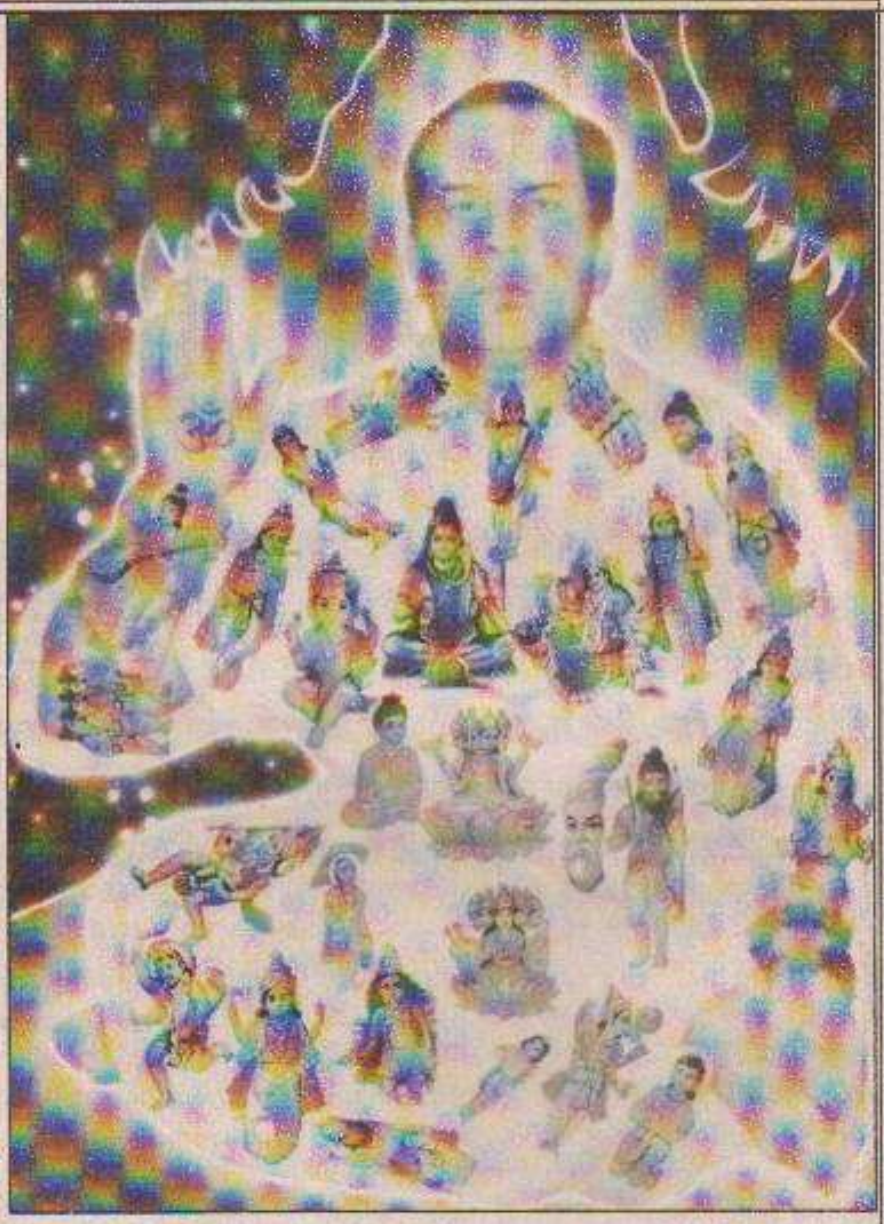

९. मेढ उपस्थ के देवता –

यह गुह्येन्द्रिय है। यह आनन्द का अधिष्ठान है और इसमें प्रजापति देवता का निवास है। इससे प्रजा संतति की सृष्टि होती है।

१०. पायु गुदा के देवता –

इस इन्द्रिय से शरीर के मल का निःसरण होता है, जिससे शरीर शुद्ध होता है। इसमें मित्र देवता का वास है।

उपर्युक्त दस बाह्येन्द्रियां हैं, जिनमें पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा पांच कर्मेन्द्रियां हैं। अन्तः करण भीतरी इन्द्रियां हैं। ये चार हैं – बुद्धि, अहंकार, मन और चित्त। इनका विवरण इस प्रकार है –

११. बुद्धिइन्द्रिय के देवता –

बुद्धि के अधिष्ठाता ब्रह्मा है इसी के द्वारा सांसारिक वस्तुओं का विवेक ज्ञान उत्पन्न होता है। बुद्धि की निर्मलता विवेक

और ज्ञान में अभिवृद्धि करती है पवित्र एवं निर्मल बुद्धि प्रज्ञा और तुरीय और साक्षात्कार सम्पन्न कराती है बुद्धि की तीव्रता हेतु ब्रह्मा और ब्रह्म स्वरूप गुरु का चिंतन निरन्तर करना चाहिए।

१२. अहंकार के देवता –

जीवन में अहम् तत्व अत्यन्त आवश्यक है योगी, यति और सांसरिक प्रत्येक व्यक्ति में अहम तत्व अवश्य होता है यह अहम् तत्व तीन प्रकार का कहा जाता है, सत्व, रज और तम स्वरूप अहम् राजस् और तामस् अहम द्वारा व्यक्ति सांसरिक वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करता है सत्व प्रधान अहम् तत्व से योग बुद्धि विकसित होकर मनुष्य को ऋषि, योगी बना देती है। इस अहम् तत्व के देवता रुद्र है, इसीलिए रुद्र सांसरिक व्यक्तियों में और योगियों में सर्व पूज्य है।

१३. मन के देवता –

मन का धर्म संकल्प विकल्प है, सांसरिक अवस्था में और यौगिक दोनों ही अवस्था में मन के अनुसार ही मनुष्य निर्णय करता है। जीवन में सुख और दुख का कारण न मनुष्य है न देवता है, न शरीर है और न ग्रह कर्म, काल संसार में सुख और दुख का कारण मन ही है, और मन ही संसार को चला रहा है।

मन जहां बंधन का कारण है वही मन मुक्ति का भी माध्यम है, यही मन मननीय शक्ति बनने पर पूर्णत्व परम तत्व की प्राप्ति करता है। मन को एकाग्र बनाने के लिए दान, अपने धर्म का पालन, नियम, यम, श्रेष्ठ अध्ययन, सत्कर्म और ब्रह्मचर्य पालन आवश्यक कहा गया है। मन की एकाग्रता सांसरिक सुखों को उपलब्ध कराती है, और इसका निग्रह होने पर व्यक्ति परमेष्ठि बन जाता है। इस मन के अधिष्ठाता देव चन्द्र है, इसीलिए मन हर समय चंचल रहता है।

१४. चित्त तत्व के देवता –

मनुष्य जीवन की मूल शक्ति चित्त रूपी चैतन्य शक्ति है, तंत्र में इसे शक्ति रूप में माना गया है, यह मूल प्राण शक्ति, प्रकृति शक्ति है। इसी शक्ति में मनुष्य देह में विराट स्वरूप संनिहित है। सच्चिदानन्द निर्मल शक्ति जिसमें सत् चित् और आनन्द तीनों तत्व है। वह शक्ति देवी भगवती शक्ति है, प्राण शक्ति है जो अन्य सभी शक्तियों को नियंत्रित करती है।

मनुष्य अपने देह और मन में स्थित देवताओं का ध्यान कर उनकी शक्ति जब प्राप्त करता है तो उसे जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्वेद पुरुषार्थ प्राप्त होता है।

रुद्राष्टाध्यायी तो साक्षात वेद है

६. पुत्र संतान प्राप्ति हेतु

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड॥ अ. ५ –५०

मंत्र – पुत्र जीवा माला से ४ माला मंत्र जप, और खीर, जायफल, कमल गट्टा से ३१ आहुति देना चाहिए।

७. शत्रुओं से रक्षा हेतु

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥ अ. ५ –३२

मंत्र – पीली हकीक माला से ११ माला मंत्र जप और पीली सरसों से ५१ आहुति देना चाहिए।

८. सर्व मनोकामना सिद्धि हेतु

नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ अ. ५ –३५

मंत्र – मनोकामना सिद्धि माला से ५ माला मंत्र जप और घी एवं मधु शहद से २१ आहुति देनी चाहिए।

९. अकाल मृत्यु निवृति के लिए

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वा रुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥५॥

मंत्र – रुद्राक्ष माला से ५ माला मंत्र जप, लौंग एवं काले तिल से ११ आहुति

इस प्रकार रुद्र साधना मंत्रों के माध्यम से भी सम्पन्न की जाती है। जिससे जीवन में पूर्णता प्राप्त हो और जीवन शिवत्व भाव से युक्त हो सके।

रुद्राष्टाध्यायी के कुछ प्रयोग यहां पर दिये जा रहे हैं ।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जिस विराट साधना में साधना तत्व प्रारम्भ से पूर्णता की ओर है वही साधना है

पंचदेव साधना

शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु, महागणपति ही तो आधार देव हैं

शरीर को ही पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप माना गया है, और इस शरीर में पंचतत्व ही माने गये हैं, ये पांच तत्व आकाश तत्व, अग्नि तत्व, वायु तत्व, पृथ्वी तत्व और जल तत्व हैं, इनमें से प्रत्येक तत्व का विशेष स्थान है, प्रत्येक तत्व के परस्पर सहयोग से ही शरीर गतिमान रहता है, विशेष बात यह है, कि ये पांच तत्व ही ब्रह्म के स्वरूप हैं, इसी कारण इन पंच तत्वों से बने शरीर से पंचदेव ब्रह्म की साधना सम्पन्न की जाती है।

देव तो अनेकानेक हैं, और साधक को इस संबंध में किसी भी प्रकार का भूल-भुलावा नहीं रखना चाहिए, कि क्या साधना, उपासना, आराधना करे, और किस साधना-उपासना को छोड़ दे, चाहे हजार देवता हो, अथवा लाख, पंचदेवों से ही सभी देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है, ऐसा क्यों है? और इसका मूल रहस्य क्या है? यह समझना भी आवश्यक है।

पंचदेव साधना

क्या शरीर के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है? यह असंभव लगता है, क्योंकि जब आप स्वयं अर्थात शरीर ही नहीं रहे, तो उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, इसीलिए शरीर तत्व को प्रधानता दी गई है और शरीर पंचतत्वों का मिश्रण है और प्रत्येक तत्व के विशिष्ट अधिपति हैं – विष्णु आकाश तत्व के, सूर्य वायु तत्व के, शक्ति अग्नि तत्व की, शिव पृथ्वी तत्व के तथा गणेश जल तत्व के अधिष्ठाता देवता हैं, जिस प्रकार किसी एक तत्व की कमी हो जाती हो जाने पर शरीर में व्याधि आ जाती है, उसी प्रकार इन देवों की उपासना का भी आवश्यक विधान, उस बाधा को दूर करने के लिए आवश्यक है।

विष्णु का तात्पर्य है 'सर्व व्याप्त', शिव का अर्थ है 'कल्याणकारी' गणेश का अर्थ है 'समस्त गणों के ईश', सूर्य का अर्थ है 'सर्वगत', शक्ति का तात्पर्य है 'सामर्थ्य', और यही तो पूरे ब्रह्माण्ड की घटना है, इसीलिए तो पंचदेव साधना ही पूर्ण साधना है।

यदि शास्त्र कहीं शिव की, कहीं सूर्य की, कहीं विष्णु की, कहीं देवी शक्ति की उपासना लिखते हैं, और इनमें से प्रत्येक

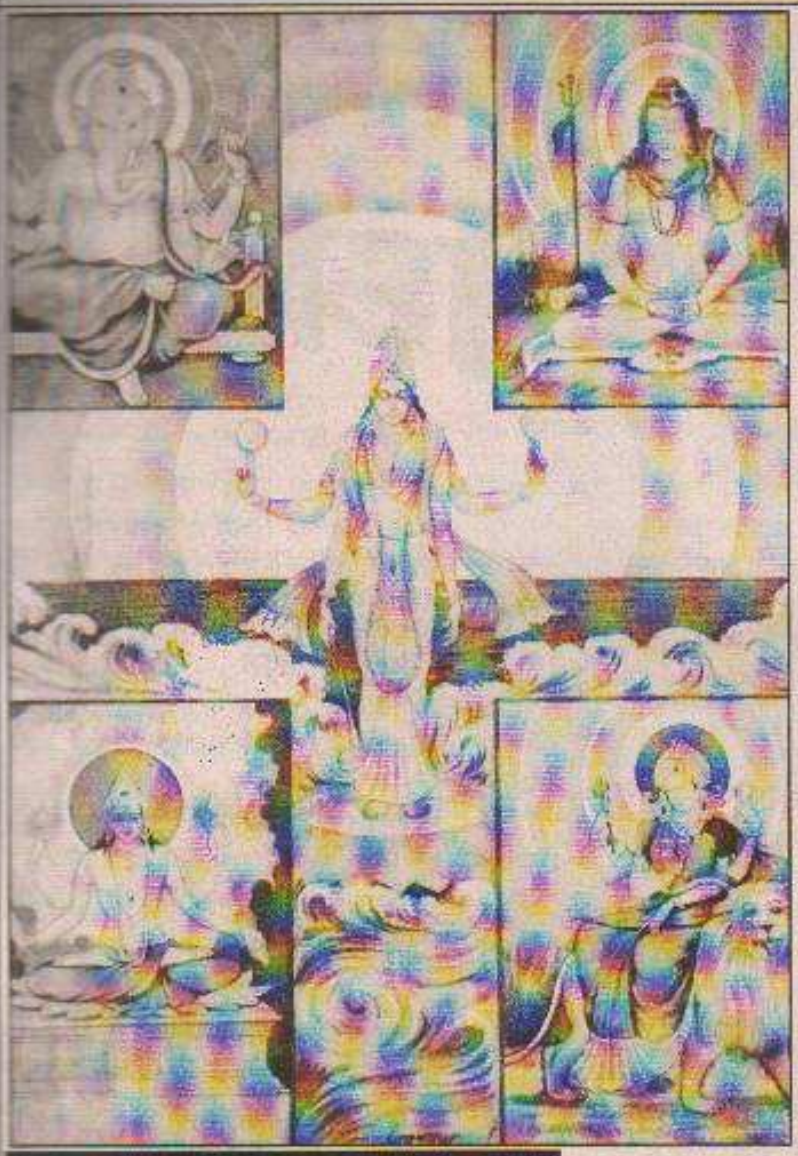

के बारे में हजारों-हजारों ग्रंथ हैं, तो इसमें संवेह का कोई तत्व ही नहीं है, क्योंकि ये सभी उपासनाएं ही तो साकार निराकार, परब्रह्म, परमबिन्दु, परमतत्व के प्रतिरूप की साधनाएं हैं, और जिस साधक की जो भावना रहती है, उसी के अनुसार तो उसे फल प्राप्ति होती है।

साधना का रहस्य कोई गहरा रहस्य नहीं है, क्योंकि साधक को साधना के समय बुद्धि के उपयोग की आवश्यकता नहीं है, उस समय तो अपने हृदय में, देवता के ध्यान में, पूजन में, वह भाव प्रकट करने की आवश्यकता है, जिससे कि शरीर का निर्बल तत्व उस देव की कृपा के कारण, अभीष्ट फल के कारण प्रबल हो जाए यही तो रहस्य है, मनुष्य, मनुष्य के साथ छल कर सकता है, लेकिन क्या कोई साधक अपने देवता के साथ छल कर सकता है? जब कुछ पाना ही है, तो अपने मन को निर्मल बना कर, अपने जीवन के श्रद्धा-सुमन इस प्रकार अर्पित करना चाहिए, कि देवता का आशीर्वाद, वरदहस्त पूर्ण रूप से प्राप्त हो।

आदि शंकराचार्य ने केवल पांच देवताओं के ही लिंग पूजन का विधान एवं व्यवस्था लिखी है, ये पंचलिंग – १ शिव का बाण लिंग, २ भगवान विष्णु का सालिग्राम लिंग, ३ सूर्य का स्फटिक बिम्ब, ४ शक्ति का धातु यंत्र तथा ५ गणपति का चतुष्कोणीय प्रस्तर माना है, साधक का कोई इष्ट हो सकता है, हमारे यहां वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शक्ति सम्प्रदाय के अलावा भी कई अन्य सम्प्रदाय हैं, अब जो जिस देवता को इष्ट मानता हो, उसे केन्द्र में स्थापित कर अन्य देवताओं की आवरण देवता रूप में पूजा साधना सम्पन्न करनी चाहिए, ऐसा ही विधान है।

नोट – पंचदेवों की साधना उपासना के सम्बन्ध में पाठकों के नियमित पत्र प्राप्त हो रहे हैं, और जब यह साधना प्रकाशित हो रही है, यह तो आवश्यक ही हो गया है, कि इन पंचदेवों के रहस्य, साधना उपासना का विवरण पूर्ण रूप से दे दिया जाए।

पंचमहाभूत तत्व जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी ही तो सबक शरीर में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, इन तत्वों के देव ही तो पंचदेव – शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु और गणपति हैं, साधना में साधक अपने शरीर के निर्बल तत्व को प्रबल बनाकर ही पूर्णता की ओर अग्रसर होता है, मूल (जड़) के बिना विराट वृक्ष की कल्पना ही नहीं है, उसी प्रकार पंचदेव साधक तो पूर्णता, ब्रह्मत्व, देवतत्व, कुण्डलिनी जागरण का आधार है।

शिव साधना

यदि कोई परम तत्व है, परम स्थिति है, परम प्रकाश है, और परमेश्वर है तो वह शिव ही है, जो जाग्रत, स्वप्न और सुप्त तीनों अवस्थाओं से परे है – वह शिव ही है, जो ॐकार स्वरूप है, दिव्य ज्ञान है, समस्त शक्तियों के मूल आश्रय है वह शिव ही है, जो सबके रक्षक, सब सिद्धियों के स्वरूप, ज्ञान, बल, इच्छा, क्रिया शक्ति के सम्पूर्ण तत्व, देवों के देव महादेव है – वह शिव ही है।

जो स्वयं साकार निराकार दोनों स्वरूपों में है, पृथ्वी तत्व के स्वामी है, अर्थात किसी भी प्रकार का भार उठाने में समर्थ है, जो मंत्र तथा तंत्र के चरम स्वरूप है सृष्टि के नियन्ता है, तथा अपने पास कुछ भी नहीं रखते हुए अपने साधकों, भक्तों पर परम प्रसन्न हो कर सभी ऐश्वर्य, सौभाग्य प्रदान कर देते हैं, वह शिव ही तो हैं, जो गणों, भूतों-पिशाचों में भी पूज्य है, और योगियों व देवताओं में भी आराध्य है, जो महामृत्युंजय है, शक्ति के स्वरूप है, क्योंकि जहां शिव है वहीं शक्ति है, वे शिव ही तो हैं, ऐसी कोई सिद्धि नहीं, ऐसा कोई ज्ञान नहीं ऐसा कोई निर्वाण नहीं, जो शिव साधना से प्राप्त न होता हो।

कुबेर ने शिव की साधना से धनपति पद प्राप्त किया, इन्द्र ने अमोघ वज्र, ब्रह्मा ने पूर्ण चैतन्य सिद्धि, रावण ने स्वर्ण लंका, तो फिर साधारण जन में शिव के विभिन्न स्वरूपों के पूजा साधना का इतना अधिक विधान है, तो आश्चर्य ही क्या?

शिवत्व है पुरुषार्थ, प्रेम, शक्तिमान, सौभाग्य, बल, साहस, सिद्धि, सभी तांत्रिक साधनाएं शिव साधना का स्वरूप ही है, शिव की कृपा से कोई अधूरा नहीं रह सकता, चाहे वह किसी भी अवस्था में हो, किसी भी स्वरूप में हो, किसी भी रूप से उसने साधना भक्ति की हो, शिव अर्द्धनारीश्वर है, त्रिनेत्र है, ध्यानमग्न है, लेकिन उनसे कुछ भी अछूता नहीं है, वे पार्थिव भी है, और साकार भी, पार्थिव स्वरूप में शिवलिंग रूप में पूजित होते है, और साकार रूप में मूर्ति, चित्र, यंत्र स्वरूप में पूजित होते है, शिव के साधक को न तो अपमृत्यु का भय रहता है, और न ही रोग का, और न ही शोक का, क्योंकि जहां शिव है वहां यमराज भी नहीं आ सकते, शिवत्व तो एक रक्षा चक्र है, शक्ति चक्र है, ब्रह्म चक्र है, जो साधक को हर प्रकार से सुरक्षित कर देता है।

शिव साधना के नियम

शिव की साधना के नियम अत्यन्त सरल हैं, साधक भय रहित होकर, अपना इष्ट मानते हुए शिव की पूजा, अर्चना, ध्यान करें।

१. शिव पूजन में साधक ललाट पर लाल चन्दन का त्रिपुण्ड और बाहों पर भस्म अवश्य लगाएं।

२. शिव साधना में रुद्राक्ष माला से ही मंत्र जप करना आवश्यक है।

३. शिव पूजा में श्वेत पुष्प, धतूरे का पुष्प तथा औंधा अर्थात उल्टा (तीन पत्तियों से युक्त) बिल्व पत्र और दुग्ध मिश्रित जल धारा अर्पित करनी चाहिए।

४. शिव मंदिर में प्रदक्षिणा आधी ही होती है, अर्थात पीछे जहां जल धारा बहती है जिसे सोमसूत्र कहा जाता है, वहां से प्रारम्भ कर आगे नन्दीश्वर तक ही करनी चाहिए, पूर्ण परिक्रमा सर्वथा वर्जित है

५. शिव की स्तुतियां अभिषेक तो हजारों हैं, लेकिन पंचाक्षरी मंत्र **नमः शिवाय** का पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

शिव पूजा साधना

साधक शिक्षा साधना घर पर ही कर सकता है, और मंदिर में त्रयोदशी को भी जो प्रदोष कहलाती है, वह शिव प्रदोष व्रत है तथा प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी मास शिवरात्रि कही जाती है, इन दिनों में शिव साधना प्रारम्भ की जा सकती है, सोमवार ही शिव का दिन है।

प्रातः स्नान कर अपने सामने दो ताम्र पात्र स्थापित करें, एक में **शिव यंत्र** तथा दूसरे में **शिवलिंग** स्थापित करें, गृहस्थ साधक को अंगुष्ठ प्रमाण अर्थात अंगूठे के बराबर शिवलिंग स्थापित करना चाहिए, शिवलिंगों में भी नर्मदा का बाणलिंग सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो कि पूर्ण सिद्धि भक्ति, मुक्ति प्रदायक है, लिंग के साथ वेदी अवश्य होनी चाहिए, वेदी तांबा, स्फटिक, सोना, पत्थर अथवा चांदी की बनाई जा सकती है।

वेदी, महादेवी अर्थात शक्ति का स्वरूप है, और लिंग मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपर शिव स्वरूप है, इसी कारण एक शिवलिंग की पूजा से सभी पूजाओं का फल प्राप्त होता है।

प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, सर्वप्रथम स्नान शुद्धि, आसन शुद्धि कर, शिव का ध्यान करें, तथा रक्त चंदन से यंत्र पूजा कर, एक सुपारी रखें, चावल चढ़ाए और एक बिल्व पत्र अर्पित करें, उसके पश्चात एक माला '**ॐ नमः शिवाय**' मंत्र का जप बोलते हुए करें, इसके पश्चात शिवलिंग पूजन करें, सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर लिंग के मस्तक पर एक पुष्प चढ़ाएं, और निम्न मंत्र से शिव का आह्वान करें –

आह्वान मंत्र

''॥ ॐ पिनाक धृक् इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि इह सन्निधत्स्व, यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः। एतत् पाद्यं नमः शिवाय ॥''

इसके पश्चात '**ॐ शूलपाणे इह सु प्रतिष्ठितो भवः**' इस मंत्र से लिंग प्रतिष्ठा करें, और '**ॐ पशुपतये नमः**' मंत्र से लिंग के मस्तक पर तीन बार जल चढ़ाएं, फिर चावल अर्पित करें, उसके पश्चात बिल्व पत्र चढ़ाए और शिव की अष्ट मूर्ति पूजा, गंध पुष्प द्वारा क्रमशः करें –

एते गन्धपुष्पे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

इसके पश्चात मंत्र जप करें, मंत्र जप अपने कार्य के अनुसार करना चाहिए।

१. '**ॐ नमः शिवाय**' यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल शिव मंत्र है, इसकी पांच माला प्रतिदिन जप करना चाहिए।

२. '**ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं**' यह अष्टाक्षर शिव मंत्र शत्रु बाधा निवारण व भयनाशक मंत्र है।

३. '**रं क्षं मं यं ओं अं**' यह सर्व सिद्धि प्रदायक गृहस्थ सुख शांति, संतान प्राप्ति का शिव मंत्र है।

४. महामृत्युंजय मंत्र –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

यह मंत्र जप नहीं अपितु ऐसा चमत्कारी विधान है जिसके जप करने से अकाल, मृत्यु, रोग, बाधा, निर्बलता निश्चित रूप से दूर हो जाते हैं।

शिव पूजा में शुद्ध शिव यंत्र तथा शुद्ध शिवलिंग जो प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, का ही प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

साधना पैकेट – 350/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शक्ति साधना

शक्ति का तात्पर्य है प्रकृति, माया अर्थात जिसने प्रकृति के माया के विशाल भण्डार में से एक अंश को भी अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है, जहां शक्ति है, वहां दुःख, वेदना, दारिद्रय, दुर्भाग्य, अधर्म, अन्याय, आलस्य नहीं हो सकता, जहां बुद्धि, विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है, शक्ति अग्नि तत्व की स्वामिनी है, जो शांत नहीं रह सकती, इसीलिए उपनिषद में कथन है, कि महादेव ही शक्ति के रूप में ईश्वर हैं, शक्ति के बिना शव रूप हैं, शक्ति के बिना किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न हो ही नहीं सकता, तो फिर इस आधारभूत शक्ति की साधना उपासना साधक पूर्ण रूप से सम्पन्न क्यों नहीं करता?

शक्ति सगुण और निर्गुण, दोनों स्वरूपों में है, शक्ति के स्वरूप तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, तुष्टि, पुष्टि क्रांति, लज्जा तो हैं ही इस महाशक्ति का स्वरूप ही लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री है, जब शक्ति सर्व सम्पन्न रूप में होती है, तो यह अपनी प्रकृति के अनुसार लक्ष्मी कहलाती है, तो चण्डी, काली, तारा, गौरी, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, भैरवी इत्यादि अपने गुणों के अनुसार नाम धारण करती है।

शक्ति और साधक

जिस प्रकार अग्नि केवल हवा में नहीं रह सकती, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान के बिना अर्थात साधक के बिना नहीं रह सकती, यह तो उससे जुड़ी हुई एक विशेष शक्ति है, जो केवल जन्म से ही उसके साथ हो, आवश्यक नहीं, अपितु उसकी साधना, इच्छा के अनुसार प्रवाहित होती है।

शक्ति, साधक को गतिशील बनाती है, जिस प्रकार अग्नि तीव्र होने पर ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्व का विकास होने पर वह अपने जीवन में ऊपर उठता जाता है, अपने दुर्भाग्य पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन समझने वाले साधक को तो शक्ति कभी प्राप्त हो ही नहीं सकती जब वह स्वयं उठ खड़ा होता है, साधना करता है तो उसके भीतर छिपी शक्ति का विस्फोट होता है, और यह निश्चित है, कि एक शक्ति दूसरी शक्ति से जुड़ी है, तभी तो शक्ति साधक की पूर्णता करती है, माया और प्रकृति को उसके वश में करती है, यह महाशक्ति ही मायेश्वरी है, आद्या नारायणी शक्ति है, नारायण की महालक्ष्मी है, शिव की पार्वती है, गणेश की ऋद्धि सिद्धि है, सूर्य की ऊषा है, इसके बिना तो सब कुछ अधूरा है।

आदि शक्ति महादुर्गा

दुर्गा को ही आदिशक्ति माना गया है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है और यही परब्रह्म स्वरूपा, परम तेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, विश्व जननी, मूल प्रकृति, ईश्वरी है, आदि देवी दुर्गा से ही मरुद्गण गंधर्व अप्सरा, इन्द्र अग्नि, अश्विनी कुमार की उत्पत्ति हुई, और देवी के तेज स्वरूप में महाकाली के अतिरिक्त, धूमावती इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ, जो सब संसार की शत्रु बाधा को नष्ट करने में समर्थ है।

दुर्गा की साधना सभी प्रकार के साधकों को अवश्य ही करना चाहिए, जिससे अष्ट सिद्धियां, विजय, लक्ष्मी, दीर्घायु प्राप्त होती है, जिससे किसी भी प्रकार की रोगबाधा, कष्टबाधा दूर हो जाती है, दुर्गा साधना हेतु वर्ष की चारों नवरात्रि के अतिरिक्त किसी भी पक्ष की अष्टमी अथवा मंगलवार को प्रारम्भ की जा सकती है।

दुर्गा पूजा का मूल आधार शक्ति का धातु यंत्र ही है अतः इस **दुर्गा यंत्र** को जो चार द्वार, तीन वृत्त, आठ कमल, षट्कोण वाले विदुमय श्रीचक्र से पूर्ण हो, तथा प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, उसे अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर, मध्य में ताम्र पात्र रख कर, चावल का आसन देकर, **दुर्गा यंत्र** को घी तथा दूध से शुद्ध कर, फिर जल धारा से स्वच्छ कर, सुगन्धित पुष्प के ऊपर स्थापित करना चाहिए।

तत्पश्चात साधक सर्वप्रथम पुष्पांजलि अर्पित कर देवी का ध्यान करे कि शंख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल धारण किए हुए त्रिनेत्रे, सिंह पर आरूढ़ अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण करने वाली, जिसके चारों ओर देवता स्थित हैं, और सिद्धि की इच्छा रखने वाले सेवारत हैं, उन जया दुर्गा का मैं ध्यान करता हूं।

अपने पूजा स्थान में एक ओर घी का दीपक अवश्य जलाएं फिर **'नवदुर्गा चक्र'** स्थापित कर, नौ पुष्प चढ़ाएं और नवपीठ शक्तियों का पूजा निम्न मंत्रों से सम्पन्न करें –

ॐ प्रभावै नमः।
ॐ मायायै नमः।
ॐ जयायै नमः।
ॐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ विशुद्धायै नमः।
ॐ नन्दिन्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।

इसके पश्चात सामने जल अर्पित करें, अष्ट सिद्धियों की स्वामिनी दुर्गा के अष्टाक्षर मंत्र का जप **'सिद्धि माला'** से सम्पन्न करें, प्रथम पूजन के दिन पांच माला मंत्र जप आवश्यक है।

दुर्गा मंत्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

दुर्गा साधना का यह प्रयोग पूर्ण हो जाने पर दुर्गा आरती सम्पन्न करें, तथा पुनः एक सुगन्धित पुष्पों की माला अवश्य चढ़ाएं।

दुर्गा पूजा साधना आराधना का क्षेत्र एवं महिमा अत्यन्त विशाल है, क्योंकि इसकी साधनाओं के विविध स्वरूपों में शान्तिकारक, पुष्टिकारक तथा लक्ष्मी प्रदायक प्रयोग तो है ही, देवी के विभिन्न मंत्रों का विभिन्न प्रकार की तांत्रिक सामग्रियों सहित स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण एवं उच्चाटन में भी प्रयोग किया जाता है।

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती

व्यक्ति वही पूर्ण है, जिसमें बल पराक्रम हो, धन-धान्य अर्थात पैसा हो, ज्ञान एवं वाणी में सिद्ध हो, और इन तीनों गुणों का साक्षात स्वरूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं, जो कि देवी के तीन प्रधान स्वरूप है।

नवार्ण मंत्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

इन साधनाओं को सम्पन्न करने से पहले साधक को देवी की मूल दुर्गा साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना पैकेट – 330/-

सूर्य साधना

क्या सूर्य के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है? सूर्य ही तो ऐसे प्रत्यक्ष देव हैं, जो जगत के नेत्र हैं, जो कालचक्र के प्रणेता हैं, सूर्य से ही दिन रात्रि, घटी, पल, मास आदि की गणना की जाती है, सूर्य से ही तो संसार प्रकाशमान है, और सूर्य के चारों ओर ही तो सभी ग्रह और यह पृथ्वी निरन्तर परिक्रमा करती है, सूर्य से प्रकाशित तेज के कारण ही तो इस संसार में ऊष्मा और तेज है, तात्पर्य यह है, कि सूर्य ही जीवन, तेज, ओज, बल, यश, नेत्र, श्रोत, आत्मा और मन के कारक हैं, और तीनों लोक सूर्य के ही अंग हैं।

अन्य देवताओं को तो साधना उपासना द्वारा, उनके स्वरूप को भीतर ही भीतर, भावना द्वारा ही समझा जा सकता है, लेकिन सूर्य देव तो नित्य प्रति प्रत्यक्ष होने वाले, साधक के सामने ही स्थित हैं, तो इनको क्यों न सिद्ध किया जाए? सूर्य की साधना साधक के भीतर ज्ञान और क्रियाशक्ति का उद्दीपन करती है, यह तेज कभी शांत नहीं हो सकता, सूर्य की शक्ति संज्ञा, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं, अपितु प्रारम्भ से पूर्णता तक है।

सूर्य पूजा साधना के नियम

१. साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठकर सर्व प्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक है।

२. सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत्त

होकर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर ले।

३. सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलदायक है, अतः सूर्योदय के पश्चात पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध ही नहीं होता।

४. सूर्य को लाल कनेर के पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक यही पुष्प सूर्य को अर्पित करे।

५. सूर्य देव को सूर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपत्र से तीन बार अर्घ्य देकर प्रणाम करना चाहिए।

६. नेत्र रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य नमस्कार को रविवार के दिन नमक तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए, तथा उसे चाक्षुष्मति विद्या का पाठ करना चाहिए।

सूर्य साधना का क्रम

रविवार के दिन प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए, साधक अपने सामने **'सूर्य यंत्र'** को स्थापित कर, उस पर चंदन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिंदूर भी अर्पित करें, और अपने सामने सिंदूर को शुद्ध जल में घोलकर, दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि –

हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमलनेत्र स्वरूप वाले, ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार ! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दन युक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।

इसके साथ ही ताम्रपत्र से जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, और इसके पश्चात मणिमाला से अपने पूजा स्थान में स्थान ग्रहण कर पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर निम्न सूर्य मंत्र का जप करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

सूर्य साधना का यह प्रयोग यदि साधक प्रतिदिन करे तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उसकी साधनाएं सफल होती हैं।

सूर्य साधना और रोग

सूर्य तो आरोग्य के देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, और जड़ता ठहर ही नहीं सकती, सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का दूषित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है।

चाक्षुष्मति साधना तो सूर्य उपासना का एक स्वरूप है, जो नेत्र रोगों को सम्पूर्ण रूप में दूर कर देती है, इसमें चाक्षुष्मति यंत्र स्थापित कर चाक्षुषी विद्या का पाठ नियमित रूप से सम्पन्न किया जाता है।

गायत्री मंत्र साधना मूल रूप से सूर्य साधना ही है जिसमें सविता अर्थात सूर्य से बल, बुद्धि, वीर्य, पराक्रम, तेज तथा सब प्रकार से उन्नति प्रगति की प्रार्थना की गई है।

चाक्षुषी विद्या पाठ

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय। मम जात रूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहम अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि-निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे विश्वाय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय अमृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्यो-र्मा अमृतं गमय। ऊष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मति विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीयते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान्। ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ॥

चाक्षुष्मति यंत्र भी **सूर्य यंत्र** का स्वरूप माना जाता है, और इस यंत्र को स्थापित कर प्रतिदिन

॥ ॐ ह्रीं हंसः ॥

बीज मंत्र का **सफेद हकीक की माला** से जप कर चाक्षुषोपनिषद का पाठ कर, सूर्य को अर्घ्य देने से, नेत्र रोग के अलावा पेट सम्बंधित एसीडीटी रोग, पीलिया, गठिया, शारीरिक दुर्बलता दूर होती है।

लाल रंग की बोतल में जल भर कर सूर्य के प्रकाश में दिन भर रख कर वह जल ग्रहण करने से पेट से सम्बंधित बीमारियां दूर होती हैं।

यह सूर्य ही है, जिसके द्वारा प्रकृति की समस्त शक्तियां प्राप्त होती हैं, नवग्रहों में ये प्रथम देव हैं, इनकी साधना उपासना विजय की साधना है, एक दिन प्रातः जरा उठ कर उदय होते हुए सूर्य की पूजा कर, नमस्कार कर इस साधना का आनन्द तो लें, यह आनन्द शरीर को ही नहीं मन को भी, कुण्डलिनी जागरण के बिन्दुओं को भी कंपित कर देने वाला आनन्द है।

साधना पैकेट – 300/-

ऋद्धि सिद्धि के साथ आते हैं गणपति

प्रत्येक घर में जो इस प्रकार से इस साधना को सम्पन्न करते हैं

शिव पुराण में भगवान शिव स्वयं गणेश की स्तुति में कहते हैं –

यं यं कामयते यो वै तं तमाप्नोति निश्चितम् ।
अतः कामयमानेन तेन सेव्यः सदा भवान् ॥

अर्थात्, जो पूर्ण भक्ति से गणपति की पूजा साधना करता है, उसके विघ्नों, संकटों का नाश होता रहता है, कार्य सिद्धि निरन्तर होती रहती है, उन्नति के इच्छुक, निर्धन, पूर्णता के इच्छुक, धन तथा सुख सौभाग्य के इच्छुक सभी स्त्रियों को यह व्रत पूजन करना चाहिए, किसी वस्तु विशेष की कामना अभिलाषा की पूर्ति इसी से संभव है।

गणेश आदि देव तथा पूर्ण देव माने गये हैं, जिनकी पूजा प्रार्थना का उल्लेख, विधान सबसे पहले आता है, और उसके पश्चात ही हर कार्य सम्पन्न किया जाता है, विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न स्वरूपों में, श्री गणेश पूजन का विधान अया है।

इन सब ग्रंथों में एक बात सारभूत रूप में लिखी गई है, कि चतुर्थी तिथि ही गणपति की तिथि है, और इस दिन व्रत अनुष्ठान का फल पूर्ण रूप से प्राप्त होता है।

चतुर्थी चतुर्विध फल प्रदायिनी तिथि है, और इस तिथि को गणपति की प्रकट तिथि माना गया है, जिसके सम्बन्ध में ब्रह्म वैवर्त पुराण के गणेश खंड में लिखा है, कि इस तिथि के व्रत के पूजन के प्रभाव तथा निरूपण और महात्म्य को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

कष्ट कैसा भी हो, दुख कैसा भी हो, दारिद्रय कैसा भी हो, शत्रु दोष कितना ही प्रबल क्यों न हो, संकष्टी चतुर्थी पूजन पूर्ण निवारण दिवस है।

स्त्रियों के लिए भी इस दिवस का विशेष महत्व है, अपने लिए श्रेष्ठ वर प्राप्त करने की इच्छुक कन्याओं हेतु पूर्ण सुखी वैवाहिक जीवन प्राप्त करने व गृहस्थ जीवन में श्री एवं सौभाग्य दोनों की निरन्तर वृद्धि के लिए यही व्रत यही पूजन सर्वाधिक आवश्यक है।

साधना विधान

गणपति साधना के लिए प्रत्येक पक्ष की गणेश चतुर्थी के अलावा बुधवार शुभ दिवस माना गया है भारत के कई प्रांतों में विशेष कर महाराष्ट्र इत्यादि में शनिवार को गणपति दिवस माना गया है। अतः गणपति का ध्यान नित्य प्रात करना ही चाहिए इसके अलावा किसी भी बुधवार शनिवार और चतुर्थी को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में **पारद गणपति विग्रह** की पूजा ही सम्पन्न की जाती है, इसके अतिरिक्त **संकर्षण शंख** का पूजन तथा केवल **ऋद्धि सिद्धि माला** से मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

साधना दिवस के दिन अपने पूजा स्थान में साधक गणेश चित्र लगाए, तथा पारद गणपति को स्थापित करे, और उसके सामने एक थाली में कुंकुम, केसर छिड़क कर मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर संकर्षण गणेश विग्रह स्थापित करें।

अब पारद गणपति के सामने नैवेद्य स्वरूप लड्डू तथा गुड़ के बने हुए तिल के लड्डू अर्पित करे, हाथ में जल लेकर चारों ओर जल की प्रदक्षिणा बनाएं और गणपति को नमस्कार कर अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर पुष्पांजली अर्पित करें।

अब शांत चित्त से गुरु का ध्यान कर अपने कार्य सिद्धि की प्रार्थना हेतु साधना का आदेश आशीर्वाद, पूर्ण मनोयोग से मन

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

ही मन स्मरण कर, प्राप्त कर साधना पूजन प्रारम्भ करें।

सर्वप्रथम पूर्ण भक्तिभाव से गणेश मंत्र –

॥ ॐ गं गणेशाय नमः ॥

इक्कीस बार जप कर गणपति को अर्घ्य प्रदान करे, इस पूजन में अर्घ्य का विशेष महत्व है।

अर्घ्य का तात्पर्य है, कि मैं अपने सर्वस्व के साथ अपनी भक्ति, अपना ज्ञान, योग, शक्ति सभी कुछ अर्पित कर रहा हूं, गणेश अर्घ्य में गणेश स्तुति मंत्र निम्न प्रकार से है –

गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धि प्रदायक।
संकष्टहर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु सम्पूजित विधूदये।
क्षिप्रे प्रसीद देवेश गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इस श्लोक का उच्चारण करते समय श्लोक के पहले तथा श्लोक के पश्चात **'संकष्टहरण गणपतये नमः'** उच्चारित करें, इसके पश्चात नियत साधना को अर्घ्य प्रदान करें।

इसके पश्चात एक पात्र (लोटे) में चंदन, दूब, पुष्प, चावल, दही और जल एकत्र कर, इस पात्र के ऊपर पूजा में रखा हुआ विशिष्ट **संकर्षण शंख** स्थापित कर दें, फिर उस पात्र को दोनों हाथों में रख कर इस जल का अर्घ्य चन्द्रमा की ओर मुख कर, बाहर खुले में चन्द्रमा की ओर देखते हुए अर्पित करें, और यह प्रार्थना करें –

गगनार्णव माणिक्य पूर्ण लम्बोदरस्तथा।
विनायकं प्रसन्नास्य गणेश प्रतिरूपकः॥

चन्द्रमा जीवन का अत्यन्त आवश्यक तत्व है, सुख, सौभाग्य, कामनापूर्ति, रोग बाधा प्रभाव निवारण तथा जीवन में सरसता, सौन्दर्य तत्व, मधुरता के लिए चन्द्र तत्व से बढ़ कर कोई तत्व नहीं है, इसलिए चन्द्रोदय व्यापिनी इस गणेश चतुर्थी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

गणेश पूजन विधान

अब साधक अपने सामने स्थापित **पारद गणपति** का पुनः पूजन करें तथा २१ पीपल के पत्तों की व्यवस्था पहले से कर गणेश के २१ नामों का उच्चारण करते हुए, प्रत्येक पत्ते पर नैवेद्य रूप में लड्डू अर्पित करें, ये २१ नाम तथा प्रत्येक नाम के साथ 'नमः' उच्चारण करते हुए समर्पण आवश्यक है।

सुमुखाय नमः	**गणाधीशाय नमः**
उमापुत्राय नमः	**गजमुखाय नमः**
लम्बोदराय नमः	**हरसूनवे नमः**
सूपकर्णाय नमः	**वक्रतुण्डाय नमः**
गुहाग्रजाय नमः	**एकदन्ताय नमः**
हेरम्बाय नमः	**चतुर्होत्रे नमः**
सर्वेश्वराय नमः	**विकटाय नमः**
हेम तुण्डाय नमः	**विनायकाय नमः**
कपिलाय नमः	**वटवे नमः**
भालचन्द्राय नमः	**सुराग्रजाय नमः**
सिद्धिविनायकाय नमः॥	

इसके पश्चात दूब के दो पत्ते लेकर उसके साथ कुंकुम, केसर, पुष्प तथा चावल पारद गणपति पर चढ़ाएं।

यह पूजन क्रम समाप्त हो जाने के पश्चात कमल गट्टे की माला से उसी स्थान पर बैठे-बैठे तीन माला मंत्र जप **'संकटहरण गणपतये नमः'** मंत्र का जप करें, तत्पश्चात आरती इत्यादि कर अपने स्थान को छोड़ें और गणपति पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण करें।

यह पूजन सायंकाल चन्द्रोदय होने के पश्चात ही सम्पन्न किया जाता है, इस हेतु उस दिन पूरे दिन साधक को व्रत अवश्य ही रखना चाहिए, यदि पूर्ण निराहार न रह सके तो केवल दूध फल इत्यादि ही ग्रहण करना चाहिए।

विशेष

पूजन में जिस संकर्षण शंख का प्रयोग किया जाता है उस शंख को किसी देव स्थान में, अर्पित कर देना चाहिए तथा पारद गणपति विग्रह को अपने पूजा स्थान में सभी देवी देवताओं के आगे स्थापित कर देना चाहिए।

त्री स्थली सेतु ग्रंथ में लिखा है, कि यदि किसी विशेष संकट नाश का संकल्प ले कर यह सम्पूर्ण विधान इस तिथि को सम्पन्न किया जाए तो सात दिनों के भीतर-भीतर संकटनाश व अनुकूल फल प्राप्त होता है।

'स्कन्द पुराण' के अनुसार जो पुरुष धन धान्य की कामना से यह विधान करता है, उसे ऋद्धि सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

स्त्रियों के लिए व्रत का फल अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यदि स्त्रियां पुष्प, कुंकुम, लाल धागा, महावर, धूप, दीप, गुड़ अदरक, दूध, खीर, नमक, इत्यादि से यह पूजन सम्पन्न करती हैं, तो उन्हें अक्षत सौभाग्य, गृहस्थ सुख लाभ, तथा घर में परिपूर्णता प्राप्त होती है।

गणपति का यह विधान ऐसा पवित्र, उत्तम, शीघ्रफलदायक विधान है, जिसे जो भी साधक चाहे वह गृहस्थ हो अथवा अविवाहित, स्त्री हो या पुरुष, सम्पन्न करे तो उसे अपने संकटों का समाधान तथा सौभाग्य प्राप्त होता ही है।

साधना पैकेट –410/-

विष्णु साधना

भारतीय शास्त्रों में कहीं पर भी किसी भी साधना के सम्बन्ध में, समाप्ति या अन्त का उल्लेख नहीं आता है, आदि देव को अनन्त माना गया है, अर्थात जो प्रारम्भ से सीमारहित, अनन्त तक विस्तृत हो, वही अनन्त देव हैं, इस रहस्यमय प्रकृति का समाधान है – श्री विष्णु ।

जो आदि है वही अनन्त हो सकता है, और भगवान विष्णु आदि देव हैं तथा अनन्त देव भी, जिन्हें समय काल की सीमा में बांधा नहीं जा सकता, जिनके स्वरूप को किसी एक रूप में स्थिर नहीं किया जा सकता, जिनके तेज से उत्पन्न सहस्रों देवी देवताओं को नित्य प्रति पूजा जाता है, उस अनन्त देव विष्णु के तेज का अंश भी प्राप्त हो जाए, तो फिर जीवन में कोई न्यूनता रह जाए यह असंभव है, श्री विष्णु आकाश तत्व के अधिष्ठाता हैं, आकाश का तात्पर्य है – विशालता, गहनता, महानता, ऊंचाई, और ये सब मन की स्थितियां ही तो हैं।

कौन अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ना चाहता?

कौन जीवन में अनन्त सिद्धियां प्राप्त नहीं करना चाहता?

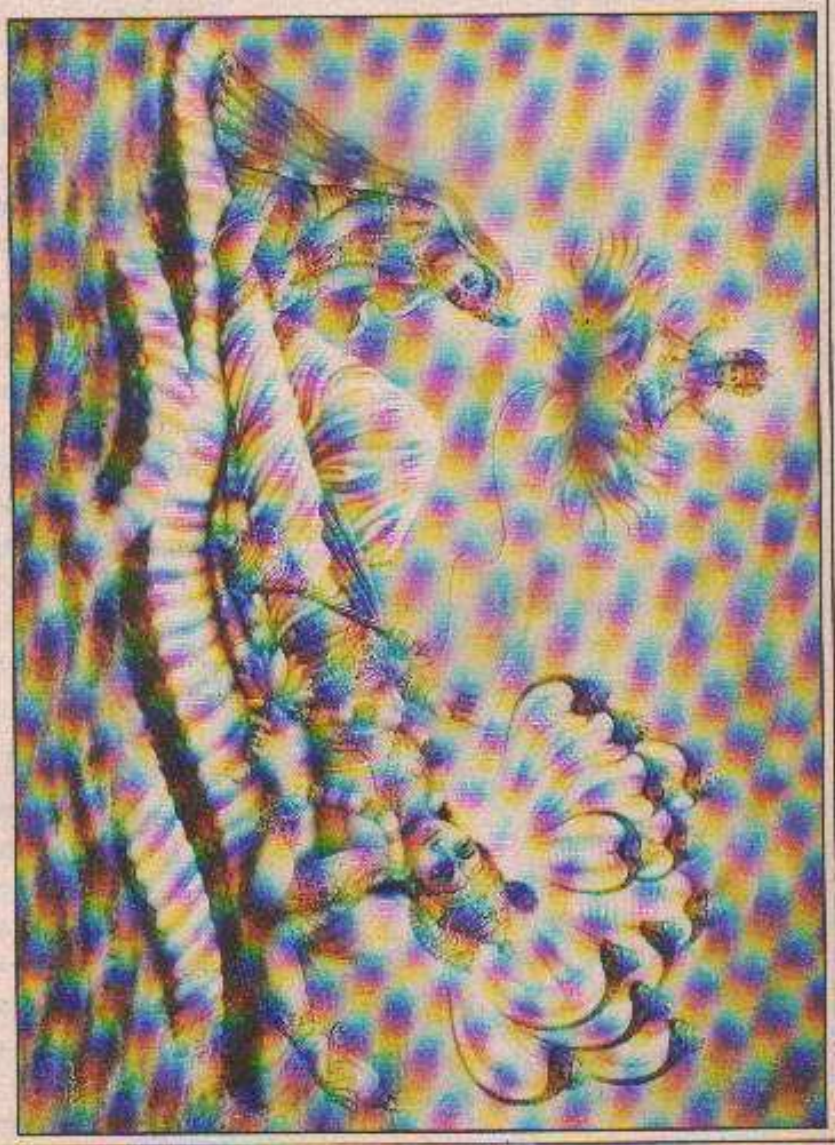

उसके लिए उस व्यक्ति में विष्णु तत्व तो प्रबल होना आवश्यक है, क्यों सभी नेतृत्व नहीं कर पाते? क्योंकि उनमें विष्णु तत्व नहीं है, उनमें तो केवल आंख मूंदकर एक निश्चित मार्ग पर चलने की भावना ही नहीं है, तो फिर जीवन घिसटना ही रहेगा।

विष्णु तो यह केन्द्रीय बिन्दु है, जहां से शक्तियों का देवों का उद्भव हुआ, विष्णु के ही तो अवतारों का परिवर्तन हम नित्य देखते हैं, चाहे वह राम हो, कृष्ण हो, नृसिंह हो अथवा वाराह अवतार हो तो आदि देव विष्णु को कैसे भूला जा सकता है।

विष्णु साधना क्यों ?

विष्णु की साधना, अनन्त की साधना है, जो साधक के शरीर ही नहीं, मन के ऊपर आए दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का उद्भव कर, उसकी शक्ति को जागृत कर, शक्ति का विकास कर, साधक को अनन्त की ओर अर्थात विशालता की ओर, उठने की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धरती से आकाश की ओर उठने की साधना विष्णु साधना ही तो है, जिस एक स्वरूप की साधना करने से अनन्त साधनाओं का, अनन्त देवों के प्रभाव का फल मिलता हो – वही विष्णु साधना है।

साधना क्रम

विष्णु का मूल नाम नारायण है, गायत्री इनका छन्द है, ॐ बीज है नमः शक्ति है, तथा इनका मूल अष्टाक्षर मंत्र – ॐ नमो नारायणाय ही है।

ये साधना किसी भी चतुर्दशी को प्रारम्भ की जा सकती है, विष्णु मूल रूप से रजोगुण अर्थात राज्य तत्व के देव हैं, इस कारण इनकी पूजा से व्यक्ति को राज्य लाभ, राज्य उन्नति, राजबाधा से निवृत्ति, प्रतिष्ठा विशेष रूप से प्राप्त होती है।

स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने सामने एक बाजोट पर विष्णु का **'सालिग्राम लिंग'** ताम्रपत्र पर अंकित **'विष्णु यंत्र'** स्थापित करें, सर्वप्रथम स्नान शुद्धि के पश्चात दोनों हाथ जोड़कर तुलसी पत्र ले कर, जल में डुबो कर, विष्णु के बारह स्वरूपों का ध्यान करते हुए सब दिशाओं में जल छिड़कें, विष्णु के ये बारह स्वरूप मंत्र हैं –

ॐ ऐम केशवाय धात्रे नमः।
ॐ नम आम नारायणाय अर्यम्णे नमः।
ॐ ओम् इम् माधवाय मित्राय नमः।
ॐ मम ईम् गोविन्दाय वरुणाय नमः।
ॐ जम उम् विष्णवे अंशवे नमः।
ॐ वम् ऊं मधुसूदनाय भगाय नमः।
ॐ तेम एम् त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः।
ॐ वाम ऐम् वामनाय इन्द्राय नमः।
ॐ लुम् ओम् श्रीं धराय पूष्णे नमः।
ॐ वेम् औम् हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः।
ॐ वाम अम् पद्मनाभाय त्वष्टे नमः।
ॐ वम् अः दामोदराय विष्णवे नमः।

इसके पश्चात विष्णु मंत्र की एक माला का जप **वैजयन्ती माला** से करें, प्रत्येक बीज मंत्र के साथ एक कमल बीज चंदन में डुबोकर **सालिग्राम लिंग** को अर्पित करें, पूजा स्थान में शुद्ध घी का दीपक तथा धूप अवश्य ही होनी चाहिए।

श्री विष्णु बीज मंत्र

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

विविध मंत्र

॥ ॐ नमः भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ श्री विष्णवे नमः ॥
॥ ॐ श्री अनन्ताय नमः ॥

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात साधक दोनों हाथों में सुगंधित पुष्प को अंजलि में लेकर भगवान को अर्पित करे, कि मैं आपको अभीष्ट सिद्धि हेतु अपनी सम्पूर्ण पूजा समर्पित करता हूं।

साधना पैकेट – 330/-

विष्णु साधना लक्ष्मी रहस्य

लक्ष्मी कहां निवास करती है? जहां विष्णु की पूजा होती है जहां शंख, तुलसी, सालिग्राम की अर्चना होती है, लक्ष्मी तो विष्णु पत्नी है, जो विष्णु की शक्ति और विश्व का ऐश्वर्य है, इसीलिए विष्णु पूजा के साधक विष्णु साधना में लक्ष्मी की पूजा भी पूरे विधि विधान सहित सम्पन्न करते हैं।

जब भी विष्णु की पूजा साधना और स्थापना की जाए उसके साथ ही लक्ष्मी की पूजा, **लक्ष्मी यंत्र** चित्र स्थापित कर **कमल गट्टे माला** से लक्ष्मी बीज मंत्र का जप भी अवश्य करना चाहिए।

लक्ष्मी बीज मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

जिस प्रकार विष्णु सर्व व्यापक हैं उसी प्रकार उनकी दिव्य शक्ति महालक्ष्मी भी सर्वव्यापिका है, लक्ष्मी की कृपा दृष्टि से निर्गुण मनुष्य में भी ज्ञान, गम्भीरता, तेज सौभाग्य, सुख सहित सभी गुण प्राप्त हो जाते हैं, और सबके लिए वह आदर और श्रद्धा का पात्र बन जाता है।

साधना पैकेट – 330/-

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप अमृत कार्यालय, फोन (0141) - [illegible] पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

रुद्राष्टाध्यायी तो साक्षात वेद है

जिसने साधा रुद्र को

उसने पायी विजय तीनों लोक में

पंचदेवों में शिव और शक्ति आदि देव माने गए हैं, शिव अर्थात रुद्र और मूल ईश्वरीय शक्ति प्रकृति के सहयोग स्वरूप ही जगत की क्रिया चलायमान है, इसी कारण भारत वर्ष में शिवोपासना और शाक्त उपासना प्रमुख रूप से प्रचलित है। दो गुप्त नवरात्रि और दो प्रकट नवरात्रि चैत्र नवरात्रि और आश्विन नवरात्रि में शक्ति की उपासना विशिष्ट रूप से की जाती है। शिवोपासना पूरे वर्ष सम्पन्न की जाती है, इसके लिए विशेष मुहूर्त सिद्ध सोमवार, प्रदोष, श्रावणमास और महाशिव रात्रि है।

शक्ति उपासना के लिए दुर्गाशप्तसती की रचना भी शिव भक्त मार्कण्डेय ऋषि ने की। मूल रूप से मार्कण्डेय ऋषि शिव भक्त थे और उनके पिता मृकण्ड ऋषि को शिव तपस्या के पश्चात यह फल प्राप्त हुआ था कि तुम्हारे यहां योग्य विद्वान पुत्र उत्पन्न होगा लेकिन उसकी आयु केवल १६ वर्ष की ही रहेगी। अपनी किशोरवस्था में यह ज्ञान होने पर भगवान विश्वनाथ की नगरी काशी में जाकर उन्होंने रुद्र तपस्या सम्पन्न की, भगवान शिव के चन्द्रशेखर नाम की स्तुति करते हुए उन्होंने चन्द्रशेखर स्तोत्र की रचना की जिसमें मूल भाव यही था कि जब भगवान चन्द्रशेखर शिव मेरे आराध्य है तो यमराज अर्थात मृत्यु मेरा क्या बिगाड़ सकता है। आज भी भय पीड़ा और मृत्यु निवारण के लिए चन्द्रशेखर स्तोत्र का ही पाठ किया जाता है।

भगवान शिव से साक्षात वरदान प्राप्त कर मार्कण्डेय ऋषि ने ७०० श्लोकों में भगवती दुर्गा के स्वरूपों का वर्णन करते हुए दुर्गाशप्तसती की रचना की। वास्तव में जो शिव का साधक है वह शक्ति का साधक अवश्य होगा, और जो शक्ति का साधक है वह शिव का साधक अवश्य होगा। जो शिव और शक्ति में भेद करता है, उसे दोनों में से किसी की कृपा प्राप्त नहीं हो सकती है।

क्या माता और पिता दोनों में से एक का चयन किया जा सकता है ? पुत्र के लिए तो माता और पिता दोनों ही समान रूप से आदरणीय है, दोनों का ही प्रेम और कृपा बालक को चाहिए ही।

भगवान शिव की महिमा

भगवान शंकर को महादेव कहते हैं, देवाधिदेव देवताओं में अग्रगण्य है, इसलिए सर्वमान्य देवता के रूप में पूजे जाते हैं, इन्द्र आदि देवगण जितने अधिकार युक्त होकर इनकी साधना और आराधना करते हैं उतनी ही तल्लीनता से मानव भी इनकी साधना करके अद्वितीय शक्तिशाली बने है, ये अत्यधिक कारुणिक देव हैं, इसलिए थोड़ी सी अर्चना और साधना से शीघ्र प्रसन्न होकर अपने भक्तों पर अभीष्ट वरदान प्रदान करके कृत कृत्यज्ञ कर देते हैं प्रातः शिवलिंग पर एक लोटा पानी और पत्र पुष्प चढ़ा देने से ही अभीष्ट वरदान देते हैं इसलिए औघड़ दानी कहलाते हैं।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अनादिकाल से ही इनकी अर्चना और उपासना चली आ रही है, हमारे प्राचीन आर्य सभी शिवभक्त थे जिन्होंने समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की, मध्य कालीन भारत में कपिल कणाद तथा पतञ्जलि तथा बुद्ध आदि ने अहिंसा का पक्ष लिया जिससे शिव उपासना शिथिल हो गई इसीलिए मध्य कालीन भारत के इतिहास इतना उज्वल नहीं रहा, जितना की उत्तर काल में था उसके बाद भगवतपाद शंकराचार्य ने शैवधर्म को पुन पुन जीवित करके वैदिक शैव धर्म को स्थापित किया। उन्होंने शैव धर्म के प्रचार के लिए चार मठ स्थापित किया काश्मीर का शैव धर्म जिसमें भगवान शंकर की अर्धनारीश्वर की आराधना होती है, बंगाल, गुजरात तथा नेपाल का पाशुपात सम्प्रदाय आज भी जीवित है आज भी दक्षिण भारत का शैव सम्प्रदाय पूर्ण शक्ति से स्थित है।

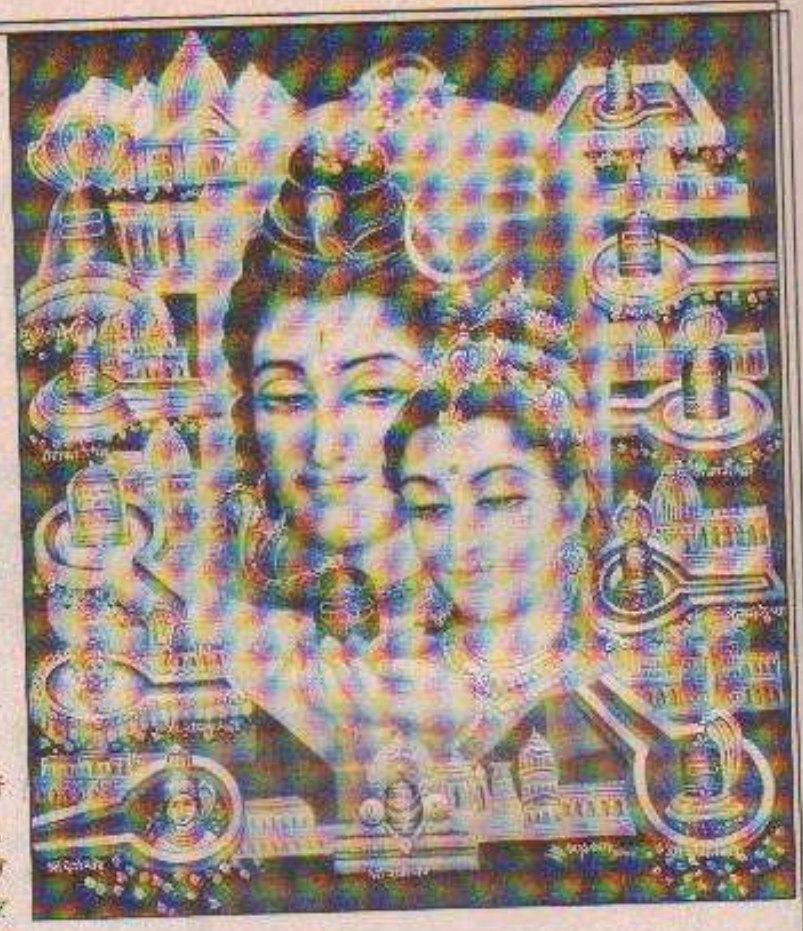

भगवान शंकर की आराधना में दानव भी पीछे नहीं रहे, इसीलिए रावण, कंश, बाणासुर, एवं भस्मासुर आदि ने अपार शक्ति प्राप्त करके भगवान शंकर की कृपा से रक्षाः संस्कृति को स्थायित्व दिया, उनके आराधना में ऊंच नीच वर्ण एवं जाति का कोई भेद नहीं है आबाल वृद्ध इनके उपासक हैं, इसीलिए भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी किसी न किसी रूप में इनकी आराधना अर्चना और साधना की जाती है।

रुद्राष्टाध्यायी – रुद्र स्तुति

भगवान के इस प्रचलित पूजा पद्धति के अनुसार अनेक वैदिक एवं लौकिक भाषाओं में भावना अनुसार स्तुति साहित्य प्रचुरता से प्राप्त होता है अन्य देवों की अपेक्षा भगवान शिव के उन्नत स्तोत्रों में इन्हें प्रसन्न करने के लिए वैदिक स्तोत्र अधिक प्रचलित न होने पर भी भगवान शंकर को बहुत प्रिय है, इससे शीघ्र ही प्रसन्न होकर अपने आराधक को अभीष्ट प्रदान करते हैं।

ऋग् यजुः और साम जिसे हम वेद त्रयी कहते हैं उसमें यजुर्वेद की श्रेष्ठता है उसमें रुद्र की एकादश अनुवाकों में स्तुति की गई है जिसे हम अष्टाध्यायी कहते है, यह ऋग्वेद में उत्कृष्टता से पाई गई है इसी कारण यजुर्वेद की विशेषता सर्वोपरी है। यजुर्वेद के चतुर्थ कांड में पंचम और सप्त प्रपाठक में मंत्र आए हुए है, उन मंत्रों को रुद्र आराधना के मंत्र होने के कारण इस में भगवान शंकर को रुद्र के नाम से स्तुति की गई है। परब्रह्म परमेश्वर रुद्र शब्द का पर्याय है जो रुद्राध्यायी के नाम से प्रसिद्ध है, जिस प्रकार माला में सुमेरु की विशेषता होती है। उसी तरह वेद मंत्रों में इस रुद्राध्यायी की विशेषता है इसी रुद्राध्यायी के कारण यजुर्वेद सभी वेदों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

रुद्राष्टाध्यायी का रचनाकार कौन

वेद मंत्रों को आदि मंत्र कहा गया है, और यह माना जाता है कि भगवान के श्री मुख से ही उद्धत वचन माने जाते हैं, इसी कारण प्रत्येक वेद वाक्य शाश्वत मंत्र है, **'वेदों में इन्द्रा'** आदि देवताओं के साथ पंच तत्व विज्ञान, आयुर्वेद, वनस्पति, प्रकृति के नियम सब की व्याख्या की गई है। जिस काल में वेद मंत्र की ऋचाओं का गान होता था और वेद मंत्रों से यज्ञ इत्यादि सम्पन्न होते थे उस समय संस्कृत भाषा अत्यन्त सुदृढ एवं व्याकरण युक्त

शुक्लतम स्वरूप में थी इन मंत्रों के उच्चारण में एक विशेष लय होती थी, गुरु के यहां शिष्य को सबसे पहले रुद्राष्टाध्यायी का ही ज्ञान कराया जाता था। रुद्राष्टाध्यायी की भाषा अत्यधिक संगीतमय और कर्ण प्रिय है, शुद्ध उच्चारण के साथ यदि इसका पाठ किया जाए। तो व्यक्ति आनन्द विभोर हो उठता है।

भगवान रुद्र की ग्यारह स्वरूप है – मन्यु, मनु, महिनस, महान, शिव, ऋतधवज, उग्ररेता, भाव, काल, वामदेव, धर्तवत

इसमें से प्रत्येक स्वरूप का ध्यान रुद्राष्टाध्यायी में आया है, रुद्राष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं।

प्रथम अध्याय

प्रारम्भ – **गणानां त्वा----- सुषारथिरश्वानिव** यह अंतिम मंत्र है इस अध्याय में भगवान शंकर से यह प्रार्थना की गई है कि हे जगदीश्वर आप सभी संसार के रक्षक और पालन कर्ता हैं समस्त ऐश्वर्य को देने वाले हैं, संसार के समस्त विधान आपके अधीन है, हम पूर्ण आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी बुद्धि को आप लोक कल्याणकारी बनावे जिससे लोकोपकारी कार्य को हम कर सकें।

द्वितीय अध्याय

प्रारम्भ – **सहस्रशीर्षा ---- श्रीश्चते लक्ष्मीश्च** इस मंत्र से समाप्त होता है इसमें भगवान शंकर के निगुण और निराकार स्वरूप का वर्णन है इस समस्त विश्व का उपादान कारण रुद्र ही है। उसी से यह समस्त संसार उत्पन्न हुआ है। इसीलिए वे हजारों पैर वाले, हजारों हाथ वाले, हजारों सिर वाले कहे गए हैं। श्री और लक्ष्मी आपकी शक्तियां है हे भगवान रुद्र! हमें आप यह श्रेष्ठ तथा सुख और ऐश्वर्य प्रदान करें।

तृतीय अध्याय

प्रारम्भ **आशु शिशानो वृषभः -----मर्माणि ते वर्मणा छादयानि** यह अंतिम है, भगवान रुद्र समस्त सेनाओं का अधिपति हैं यह अत्यधिक शूरवीर और बलशाली है, समस्त शत्रुओं को मारने वाले है, वे हमें अपने उपासकों को शक्ति प्रदान करें, जिससे हम युद्ध वीर बनें, अपनी तथा अपने प्रजाओं एवं परिवार की रक्षा कर सकें।

चौथे अध्याय

प्रारम्भ **विभ्राड बृहत्पिबतु ----- आ कृष्णेन रजसा** तक पूरा होता है। भगवान रुद्र सूर्य रूप में सभी प्रजाओं की रक्षा करते है, शीत उष्ण और वर्षा आदि से अपनी प्रजा को परिपुष्ट करता हुआ समस्त प्राणियों को जीवनदान देते हैं ये सविता रूप में समस्त विश्व में भ्रमण करते हुए सभी प्राणियों के अच्छे और निम्न कर्मों का साक्षी बने रहते है।

पांचवें अध्याय

प्रारम्भ – **नमस्ते रुद्र मन्यव ------ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो** यहां पूर्ण होता है इस अध्याय में शत्रुओं को मारने के बाद अत्यन्त क्रोधोउन्मत्त भगवान रुद्र को शांत करने के लिए स्तुति की गई है इस अध्याय में **'नमो नमः'** शब्द का प्रयोग किया गया है इसीलिए इस अध्याय का नाम नमकम् है। उनके अस्त्र और शस्त्रों की भी स्तुति की गई है इसके बाद पृथ्वी में चोरी आदि कुत्सित कर्म करके अव्यवस्था फैलाते हैं उन्हें मार डालिये जिससे हम सुरक्षित रह सकें, आप सभी रुद्रों को मेरा बारम्बार प्रणाम स्वीकार हो।

षष्ठम अध्याय

प्रारम्भ – **ॐ वयं सोम व्रते --- शिवो नामासि स्वधितस्ते** हे भगवान रुद्र आप सोम स्वरूप हैं, आप शांति के अधिष्ठातृ देव हैं, आप हम पर कृपा करें, जिससे हम पुत्र पौत्र आदि से सम्पन्न होकर आपकी आराधना कर सकें। आप हमारे सभी शत्रुओं को अपने अस्त्र शस्त्र से मारकर हमारी रक्षा करें।

सातवें अध्याय

में **ॐ उग्रश्च भीमश्च ----- यमाय स्वान्तकाय स्वाहा** यह अंतिम मंत्र है, हे रुद्र देव आप शत्रुओं के लिए भयंकरतम है समस्त शत्रुओं को मारने वाले जो सप्त मरुणगण है, उनके आप अभिन्न मित्र हैं। आपकी कृपा से हम यज्ञादि कर्मों को सम्पन्न करते हुए सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त करें और स्वाहाकार से देवताओं को प्रसन्न करें। इसमें नमः शब्द का अधिक प्रयोग हैं, इस अध्याय को नमकम् कहा जाता है।

आठवा अध्याय

प्रारम्भ – **ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च ------ आयुयज्ञेन कल्पताम्** यहां पूर्ण होता है, इस अध्याय में भगवान रुद्र देव से बारम्बार यही प्रार्थना की है कि हमें अन्न आदि ऐश्वर्य प्राप्त हों। पुत्र, पौत्र आदि से हम सम्पन्न हों यज्ञों के द्वारा दीर्घायु को प्राप्त होकर इसी यज्ञ के माध्यम से देवताओं को प्रसन्न करें, इस तरह इस अध्याय में भगवान रुद्र से अधिकाधिक याचना की गई है इसमें अत्यधिक चकार का प्रयोग किया गया है, **'यह भी हमें दीजीये' – 'यह भी हमें दीजिए'** इसके कारण इस अध्याय को चमकम् कहा गया है।

इन्ही नमकम् और चमकम् के कारण अष्टाध्यायी की विशेषता है इसी के कारण यजुर्वेद की विशेषता है। और इसी

कारण भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए अष्टाध्यायी सबसे श्रेष्ठतम उनका प्रिय स्तोत्र है।

रुद्राष्टाध्यायी पाठ के नियम

अष्टाध्यायी पाठ करने से पहले न्यास अवश्य किया जाना चाहिए न्यास का अर्थ है स्थापित करना बाह्य तथा आभ्यन्तर अंगों में अपने इष्ट देवता तथा मंत्र शक्ति को स्थापित किया जाता है क्योंकि मनुष्य के अंग अपवित्र और अशुद्ध होते हैं, 'देवो भूत्वा यजेद् देवं' इस उक्ति के अनुसार देवताओं की आराधना पवित्र होकर किया जाना चाहिए, जब तक न्यास न किया जाए तब तक मानव मन में प्रमाद तथा आलस्य बना रहता है उस स्थिति में भगवान की सम्यग आराधना संभव नहीं है इसीलिए न्यास आदि करने का विधान है।

रुद्राष्टाध्यायी साधना ग्रंथ

साधना करने वाले प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह अभ्यास कर रुद्राष्टाध्यायी का पाठ भगवान शिव के विग्रह शिवलिंग पर जल चढ़ाते हुए नित्य प्रति अवश्य करें। नित्य प्रति करना यदि संभव नहीं हो तो प्रत्येक सोमवार को थोड़े एक अध्याय का ही पाठ करें, शिवाभिषेक अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। जिस घर में रुद्र पाठ होता है उस घर से जरा, व्याधि, पीड़ा, संकट, अकाल मृत्यु दूर ही रहते हैं। भगवान शिव से बढ़कर कोई बड़ा देव नहीं है इसीलिए तो इन्हें महादेव कहा गया है।

रुद्र पाठ में कई ऐसे गोपनीय मंत्र हैं, जिनका अभिषेक करते हुए केवल मंत्र पाठ ही किया जाए तो वह कार्य सिद्ध हो जाता है, ऐसे ही कुछ अनुभूत सिद्ध मंत्र नीचे स्पष्ट किए जा रहे हैं। गुरु पूजन सम्पन्न कर **पारदेश्वर शिवलिंग** पर जल और दूध मिलाकर अभिषेक करते हुए **रुद्राक्ष माला** से मंत्र जप करना चाहिए प्रत्येक माला मंत्र जप के पश्चात शिवलिंग पर बिल्व पत्र अर्पित करना चाहिए।

१. राज्यकीय कार्य में सफलता के लिए

मंत्र

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान्रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

अ. ५ – १६

मंत्र – सिद्धि माला से २ माला मंत्र जप, जौ, सफेद तिल्ल तथा घी से २१ आहुति देना चाहिए।

२. नौकरी एवं व्यापार में सफलता के लिए

मंत्र

वितंचं मे वेशंच मे भूतंच मे भविष्यच्च मे सुगंच मे सुपथ्थंच मऽ ऋद्धंच मऽ ऋद्धिश्च मे क्लृप्तंच मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

अ. ८ – ११

मंत्र – सफेद हकीक माला से १ माला जप, हवन सामग्री काले तिल की घी के साथ २१ बार आहुति देना है।

३. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु

मंत्र

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टंग्रामे अस्मिन्नानातुरम्॥

अ. ५ – ४८

मंत्र – कमल गट्टे की माला से ४ माला मंत्र जप, और हवन सामग्री कमल बीज और घी की आहुति ५१ बार देना है।

४. धन धान्य प्राप्ति हेतु

मंत्र

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥

अ. ५ – ९

मंत्र – धनवर्षिणी माला से १ माला मंत्र जप, और हवन सामग्री कमल बीज, काले तिल, चंदन की ११ बार आहुति देना है।

५. आयुवृद्धि एवं रोगनाश हेतु

मंत्र

मा नो महान्त मुतमा नो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥

अ. ५ – १५

मंत्र – स्फटिक माला से ५ माला मंत्र जप, और शहद एवं पुष्प से ११ आहुति देना है।

शेषः रुद्राध्यायी के आगे के प्रयोग आप पृष्ठ नं २३ पर देखिये।

संसार की अद्वितीय सम्मोहन वशीकरण शक्ति सम्पन्न

पारद मुद्रिका

पारद रसराज है, पूर्ण वशीकरण युक्त पदार्थ है और वशीकरण का तात्पर्य है शक्ति को वश में कर उस शक्ति को अपने लिए उपयोग करना।

पारद मुद्रिका अपने भीतर अनोखे गुण समेटे है, इस वशीकरण शक्ति मुद्रिका का निर्माण, चैतन्य प्रक्रिया एक जटिल एवं श्रम साध्य कार्य है।

संसार में कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं, जो अपने आप में दुर्लभ और अलौकिक होती हैं, हो सकता है कि इनमें से कुछ चीजें सहज सुलभ हों, परन्तु जब तक उनके उपयोग और उससे सम्बन्धित ज्ञान नहीं होता, तब तक उनसे लाभ भी नहीं उठाये जा सकते।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने इन दुर्लभ वस्तुओं की गणना करते हुए बताया है कि मात्र ३६ पदार्थ ऐसे हैं जो दुर्लभ हैं, अद्वितीय हैं, परन्तु मानव जाति के लिए अत्यन्त उपयोगी और अद्वितीय प्रभाव युक्त है, पारद मुद्रिका का भी उसमें एक नाम है।

मनुष्य हमेशा से ही सम्मोहन वशीकरण का ज्ञान प्राप्त करने या इसका उपयोग करने के चिंतन में रहा है, प्राचीन काल से लेकर आज तक सम्मोहन वशीकरण पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे गये हैं, और वर्तमान समय में तो स्थिति यह है कि सम्मोहन विज्ञान को पूर्ण विज्ञान का दर्जा दे दिया है, संसार का शायद ही कोई देश ऐसा होगा जो सम्मोहन विज्ञान का उपयोग न करता हो, सम्मोहन विज्ञान से सम्बन्धित सैकड़ों अकादमियां खुल गई हैं, जिसमें इनका विधिवत ज्ञान और प्रशिक्षण दिया जाता है, अमेरिका जैसे उन्नत देशों में सम्मोहन को मेडिकल साइन्स में प्रधान स्थान दिया है, और इसकी अनिवार्यता स्वीकार की गई है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में सम्मोहन का उपयोग किया जाता है इसके साथ ही साथ शत्रु के मन का भेद लेने के लिए, पत्नी के मन के विचारों को जानने के लिए, पति के गुप्त कार्यों को पहिचानने के लिए, व्यापार के पार्टनर की धूर्तता को पहले से ही ज्ञात करने के लिए, प्रेमी या प्रेमिका को अपने अनुकूल बनाने के लिए गलत रास्ते पर जाने वाले बेटे या बेटी को सही रास्ते पर लाने के लिए, किसी अधिकारी को अपने अनुकूल बनाने के लिए, और कहीं पर अपना काम निकालने के लिए इस सम्मोहन विज्ञान या वशीकरण का उपयोग किया जाता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सम्मोहन वशीकरण क्या है ?

यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण ज्ञान है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को ज्यादा सुखी ज्यादा सम्पन्न बना सकता है, इसके माध्यम से मन की बातों को जाना जा सकता है, सम्मोहित करके शराबी व्यक्ति की शराब छुड़वाई जा सकती है, जिसको सिगरेट पीने की लत पड़ गई हो उसका यह दोष दूर किया जा सकता है, और अपने बालकों या युवकों में यदि दूषित प्रवृति पनप गई हो, तो उसे समाप्त करने में यह विधि या प्रयोग सर्वाधिक सहज है, इसके माध्यम से मनोवांछित कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं, यदि कोर्ट कचहरी में मुकदमा चल रहा हो तो शत्रु को अपने अधीन किया जा सकता है, विपरीत पक्ष वाले वकील को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

यह एक टेक्निक है, एक क्रिया है, एक तरीका है, जो अधिकतर प्रक्टिकल है, और जिसे किसी योग्य सम्मोहनकर्ता के साथ रह कर सीखा जा सकता है, यूं तो पूज्य गुरुदेव ने प्रेक्टिकल हिप्नोटिज्म नामक ग्रंथ कई वर्षों पूर्व लिखा था, जो आज भी बाजार में सुलभ है और जिसे अपने आप में अद्वितीय ग्रंथ कहा जाता है, जिसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है, इसे पढ़ कर के भी सैकड़ों हजारों व्यक्ति सम्मोहन विज्ञान के ज्ञाता बने, और अपने जीवन में सफलता एवं पूर्णता प्राप्त की।

पारद

पारे को पारद कहा जाता है, शास्त्रों में इसे रसराज या भगवान शिव का सत्व कहा है, यह अपने आप में तरल पदार्थ होता है और पकड़ में नहीं आता, यदि इसको हथेली या जमीन पर रखें तो यह फैल जाता है, यह सफेद मूल्यवान और दुर्लभ पदार्थ है, जो अपने आप में महत्वपूर्ण और उपयोगी पदार्थ माना गया है।

किसी भी हालत में इस तरल पदार्थ, पारद को ठोस बनाया जा सकता, पर कुछ विशेष जड़ी बूटियों का सहयोग दे कर एवं उच्चकोटि की रसायन विद्या के माध्यम से इसे ठोस बनाया जा सकता है, और इसको मनचाहा आकार दिया जा सकता है।

हमारे शास्त्रों में पारद को पूर्ण वशीकरण युक्त पदार्थ माना है, कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी प्रकार से पारद की अंगूठी बन जाए और कोई व्यक्ति इसे धारण कर ले, तो यह अपने आप में अलौकिक और महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, क्योंकि पारद को अंगूठी का आकार देना अत्यन्त कठिन है।

यह पारद से निर्मित मुद्रिका सहज सुलभ नहीं होती, बड़ी कठिनाई से इसे तैयार किया जाता है, पर हमारे शास्त्र गवाह हैं कि उच्चकोटि के राजा महाराजा इस पारद अंगूठी को धारण करते रहे हैं, क्योंकि इस अंगूठी के प्रभाव से शरीर के रोग समाप्त होते हैं, नपुंसकता दूर होती है और व्यक्ति वीर्यवान, यौवनवान एवं पौरुषवान बनने में सफलता प्राप्त करता है।

पारद मुद्रिका

सैकड़ों हजारों साधकों के आग्रह पर हमने पारद मुद्रिका का निर्माण किया है, जिसे आश्चर्य के रूप में पहली-पहली बार इस तंत्र विशेषांक में इसके बारे में जानकारी दी जा रही है, इस मुद्रिका को आसानी से किसी भी हाथ या किसी भी उंगली में धारण किया जा सकता है, क्योंकि यह सभी प्रकार के नाप की बनाई जा सकती है और इसे बालक, वृद्ध, स्त्री या पुरुष कोई भी पहिन सकता है, इससे कोई विपरीत प्रभाव नहीं होता और हानि नहीं होती।

पर यह वशीकरण में अत्यन्त प्रभाव युक्त एवं श्रेष्ठ मानी गई है जब पारद मुद्रिका का निर्माण हो जाता है, तब इसे विशेष मंत्रों से मंत्र सिद्ध किया जाता है, वशीकरण मंत्रों से सम्पूरित बनाया जाता है, सम्मोहन मंत्रों से सम्पुटित किया जाता है, और चैतन्य मंत्रों से इसे सिद्ध किया जाता है।

इस प्रकार से यह मुद्रिका अपने आप में दुर्लभ बन जाती है, जिसे कोई सौभाग्यशाली व्यक्ति ही धारण कर सकता है, मेरी राय में तो आज इस व्यस्त युग में इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रत्येक स्त्री या पुरुष को यह मुद्रिका धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है, यह दिखने में अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक होती है।

जब यह मुद्रिका पहनी होती है, तो सामने वाले व्यक्ति की ज्यों ही इस पर नजर पड़ती है, वह अपने आप सम्मोहित सा हो जाता है, यदि धारण करने वाला व्यक्ति मन ही मन यह कहे कि अमुक व्यक्ति या स्त्री मेरे वशीकरण प्रभाव में रहे और तब उस स्त्री या पुरुष की नजर इस मुद्रिका पर पड़ती है तो वह पुरुष या स्त्री निश्चय ही उस व्यक्ति के प्रति सम्मोहित सी हो जाती है और जिस प्रकार से वह पुरुष या पहिनने वाला बात कहता है, उसी प्रकार से वह कार्य होने लगता है।

वास्तव में ही आज के युग में यह अलौकिक तथ्य है, यह अद्वितीय मुद्रिका है, तंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि वस्तु है, जिससे हमारा जीवन, सहज, सुगम, सरल और प्रभावयुक्त बन जाता है।

साधना सामग्री पैकेट – 80/-

शिष्य धर्म

शिष्यः कुलीनः शुद्धात्मा पुरुषार्थ परायणः ।
अधीतवेदः कुशलः दुरमुक्त मनोभयः ॥

हितैषी प्राणिनां नित्य मास्तिकस्त्यक्त नास्तिकः ।
स्वधर्म निरतो भक्त्या मातृ पितृ हितोद्यतः ॥

वामनः कायवसुभिर्गुरु शुश्रुषणे रतः ।
त्यक्ताभिमानो गुरुषु जाति विद्या धनादिभिः ॥

गुर्वाज्ञा पालनार्थं हि प्राण व्यय रतोद्यतः ।
विहत्य च स्वकार्याणि गुरु कार्यरतः सदा ॥

दासवन्निवसेद्यस्तु गुरो भक्त्या सदा शिशुः ।
कुर्वन्नाज्ञा दिवा रात्रौ गुरु भक्ति परायणः ॥

आज्ञाकारी गुरो शिष्यो मनोवाक्काय कर्मभिः ।
यो भवेत्स तदा ग्राह्या तेतरः शुभकांक्षया ॥

मंत्र पूजा रहस्यानि यो जोपयति सर्वदा ।
त्रिकालं यो नमस्कुर्यादागमाचार तत्ववित् ॥

स एव शिष्यः कर्त्तव्यो नेतरः स्वल्प जीवनः ।
एतादृश गुणोपेतः शिष्यो भवति नापरः ॥

शिष्य के लिए आवश्यक है, कि वह सदैव पुरुषार्थ, परिश्रम करने में तत्पर रहे, वेदों के बारे में जिज्ञासा एवं ज्ञान हो तथा उसे जो भी कार्य गुरु सौंपे, सुघड़ता, तत्परता, एवं चातुर्यता से वह उसे सम्पन्न करे । इसके साथ ही इस बात की शिष्य में नितांत आवश्यकता है, कि वह कामवासना से दूर हो तथा काम, क्रोध व लोभ जैसे दुर्गुणों को काफी दूर रखता हो ।

शिष्य समस्त प्राणियों के हित को चाहने वाला, आत्महितचिन्तक, आस्तिक तथा प्रभु चरणों में पूर्ण श्रद्धा रखने वाला हो, जो अपने धर्म का कट्टरता से पालन करता हो तथा जिसकी माता-पिता के प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति हो । योग्य शिष्य की पहली और आखिरी कसौटी यह है, कि वह गुरु के प्रति घमंड प्रदर्शित न करे, जाति कुल या धन की वजह से गुरु से अपने आप को सर्वोपरि न समझे तथा शरीर से, मन से तथा धन से गुरु के प्रति समर्पित भाव हो ।

'त्वदीयं वस्तु गोविन्दं, तुभ्यमेव समर्पत' की भावना जिसके विचारों में हो वही सच्चा शिष्य हो सकता है ।

– श्रीमन्

गुरु वाणी

* उस पशु जीवन से केवल गुरु ही ऊपर उठा सकते हैं। मनुष्य जीवन का क्या उद्देश्य है, इसे देवता भी नहीं बता सकते, क्योंकि जिन्होंने जन्म लिया ही नहीं वे इस मर्म को नहीं समझ सकते। परन्तु गुरु ने जन्म लिया है, और जन्म लेकर पूर्णता तक पहुंचे हैं, इसलिए वह शिष्य को उस जगह तक पहुंचा सकते हैं।

* गुरु तुम्हें मात्र दीक्षा ही नहीं देता है, वह तुम्हारे रक्त को शुद्ध करता है, जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी का छल, कपट, असत्य, व्यभिचार समाया हुआ है। गुरु तुम्हें एक चिन्गारी देता है, एक क्रान्ति देता है, एक विस्फोट देता है, और मृत्यु से अमृत्यु की ओर ले जाने की क्रिया देता है।

* मां बाप ने जन्म दिया, वह तो एक स्वाभाविक क्रिया थी, परन्तु गुरु शिष्य को वापस नए सिरे से एक नया जन्म देता है, उसे चेतना प्रदान करता है, इस नए जीवन का लक्ष्य होता है, धारणा होती है, एक आगे बढ़ने की क्रिया होती है।

* मनुष्य की दुर्धर्ष प्रवृतियां स्वतः अपने आप में जन्म लेती हैं, उनको बैलेंस करने के लिए सिद्धाश्रम कुछ विशिष्ट योगियों, कुछ विशिष्ट महात्माओं को प्राणियों के बीच भेजता है, जो अपनी पवित्रता और दिव्यता के संदेश के माध्यम से उन लोगों में आध्यात्मिक चेतना पैदा करते हैं।

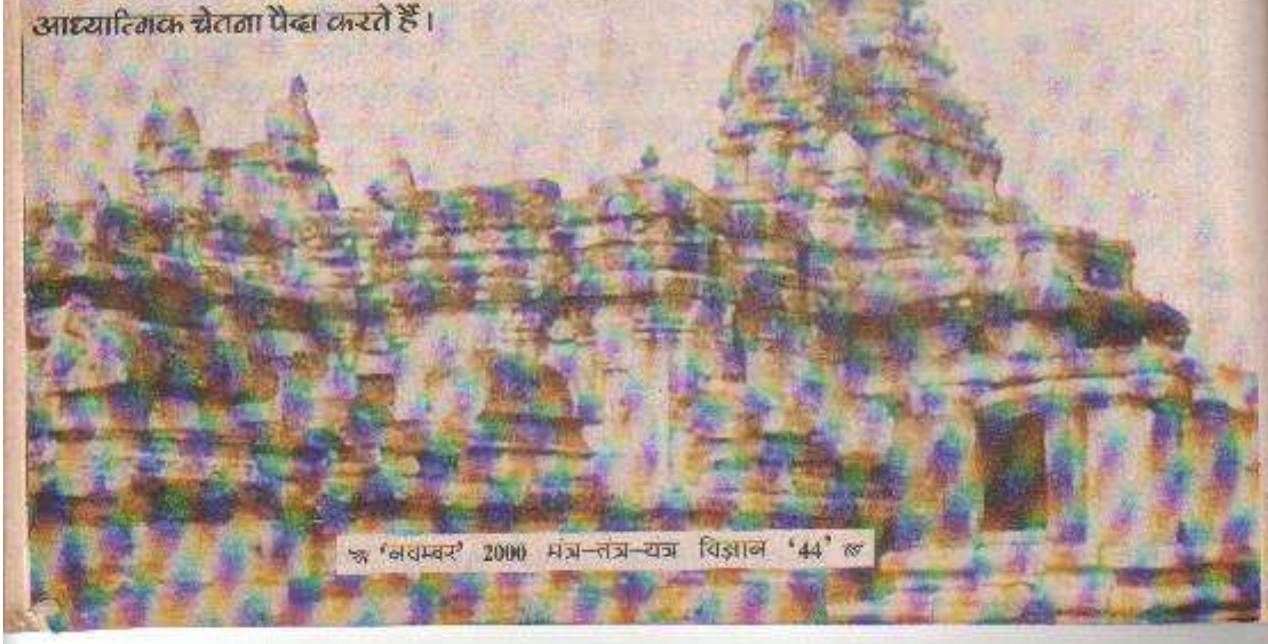

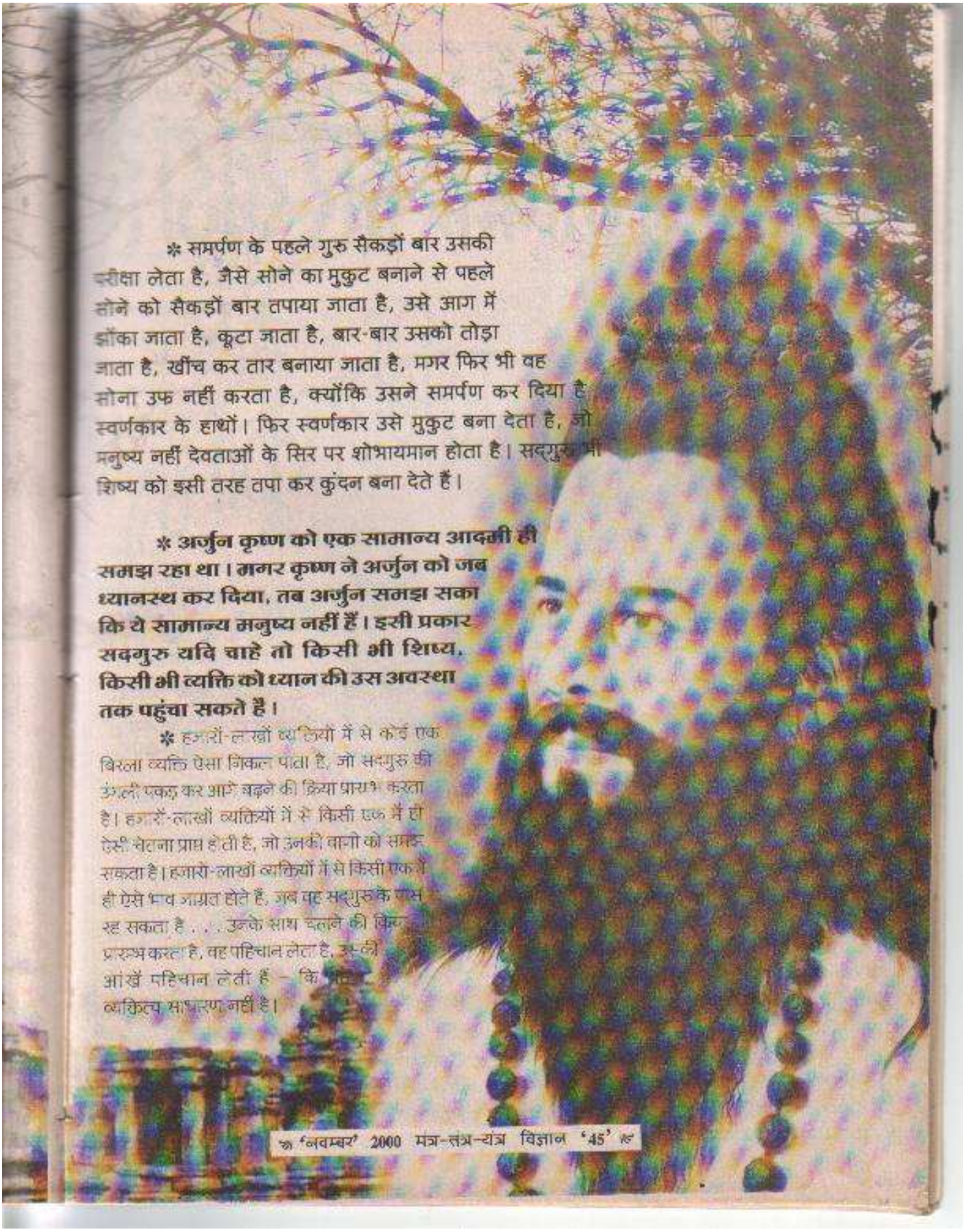

* समर्पण के पहले गुरु सैकड़ों बार उसकी परीक्षा लेता है, जैसे सोने का मुकुट बनाने से पहले सोने को सैकड़ों बार तपाया जाता है, उसे आग में झोंका जाता है, कूटा जाता है, बार-बार उसको तोड़ा जाता है, खींच कर तार बनाया जाता है, मगर फिर भी वह सोना उफ नहीं करता है, क्योंकि उसने समर्पण कर दिया है स्वर्णकार के हाथों। फिर स्वर्णकार उसे मुकुट बना देता है, जो मनुष्य नहीं देवताओं के सिर पर शोभायमान होता है। सद्गुरु भी शिष्य को इसी तरह तपा कर कुंदन बना देते हैं।

*** अर्जुन कृष्ण को एक सामान्य आदमी ही समझ रहा था। मगर कृष्ण ने अर्जुन को जब ध्यानस्थ कर दिया, तब अर्जुन समझ सका कि ये सामान्य मनुष्य नहीं हैं। इसी प्रकार सद्गुरु यदि चाहे तो किसी भी शिष्य, किसी भी व्यक्ति को ध्यान की उस अवस्था तक पहुंचा सकते हैं।**

* हजारों-लाखों व्यक्तियों में से कोई एक बिरला व्यक्ति ऐसा निकल पाता है, जो सद्गुरु की उंगली पकड़ कर आगे बढ़ने की क्रिया प्रारम्भ करता है। हजारों-लाखों व्यक्तियों में से किसी एक में ही ऐसी चेतना प्राप्त होती है, जो उनकी वाणी को समझ सकता है। हजारों-लाखों व्यक्तियों में से किसी एक में ही ऐसे भाव जाग्रत होते हैं, जब वह सद्गुरु के पास रह सकता है . . . उनके साथ चलने की क्रिया प्रारम्भ करता है, वह पहिचान लेता है, उसकी आंखें पहिचान लेती हैं – कि [illegible] व्यक्तित्व साधारण नहीं है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सौभाग्य आपके द्वार खड़ा है

अपनाइये इन स्वर्णिम सूत्रों को

कहते हैं 'ब्रह्माण्ड माण्डो धरा विधाता लिखे ललाट पड़े ' अर्थात ब्रह्मा संसार में मनुष्यों की रचना करते हैं, और विधाता भगवान विष्णु व्यक्ति के ललाट पर उसके भाग्य का लेखन कर देते हैं / तो क्या व्यक्ति अपने जीवन में अपने भाग्य को परिवर्तित नहीं कर सकता है? क्या भाग्य सूत्र व्यक्ति स्वयं नहीं रच सकता है / यदि मनुष्य चेतना युक्त है श्रेष्ठ गुरु का सान्निध्य है तो वह अपनी जीवन लेखनी से अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है /

प्रस्तुत है कुछ ऐसे महान सूत्र जो हर शिष्य को अपनाने ही चाहिए अपना जीवन धर्म बनाकर स्वयं लिखें अपना भाग्य

मनुष्य अपने जीवन में निरन्तर दूसरों से तुलना करता रहता है, जो जीवन में अभाव है उनके लिए यही विचार उत्पन्न होता है कि मैं अपने जीवन में इन अभावों से क्यों घिरा हूं? वह देखता है कि कई व्यक्ति अपने जीवन में प्रारम्भ में ही श्रेष्ठ कुल धनवान परिवार में उत्पन्न होकर जीवन की सारी सुख सुविधाएं भोग रहे हैं, तो उसे ईश्वर की इस लीला पर आश्चर्य होता है कि ऐसा अन्याय ईश्वर के द्वारा कैसे हो सकता है ?

कई बार ऐसा देखा गया है कि कोई व्यक्ति केवल श्रेष्ठ घर में राज परिवार अथवा धन और ऐश्वर्य के साथ ऐश्वर्य युक्त घर में उत्पन्न हो कर आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता है। उसके कर्म उसके संस्कार ज्ञान इत्यादि सब कुछ खराब होते हुए भी जीवन में कोई कमी नहीं रहती, बिना पुरुषार्थ ही अनायास धन प्राप्ति और अन्य सुख उपलब्ध हो जाते हैं, ऐसा किस कारण सम्भव हो पाता है ?

ईश्वर के विधान में कहीं कोई कमी नहीं है, ईश्वर और प्रकृति अपनी ही गति से लीला रचना करते हुए मनुष्य का निर्माण करती है, और मनुष्य निर्माण के साथ ही उसमें प्राण आत्मा इत्यादि सभी तत्व समाहित हो जाते है। और सबसे बड़ा तत्व जो मनुष्य अपने जीवन में लेकर उत्पन्न होता है, वह तत्व कहलाता है। भाग्य! इसीलिए कहा जाता है कि संसार में जितने भी स्त्री पुरुष है सब

का भाग्य अलग-अलग होता है।

भाग्य की गति बड़ी ही विचित्र होती है। भाग्य किस समय दुर्भाग्य में बदल जाता है और किस समय सौभाग्य में बदल जाता है कोई कह नहीं सकता है। वास्तविक स्थिति यह है कि ईश्वर द्वारा भी भाग्य लेखन एक दिन में नहीं किया जा सकता और नहीं ईश्वर अपने मन मर्जी से सौभाग्य बांट देता है। मनुष्य तो ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसकी रचना कर वह उसे स्वतंत्र कर देता है। उसके देह के साथ ही उसमें मन बुद्धि विचार की शक्ति भी दे देता है। जिससे वह अपनी जीवन की गति स्वयं निर्धारित कर सके।

इस सम्बन्ध में एक विशिष्ट पहलू यह भी है कि मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के कर्म होते है, जिनके अनुसार ही वह अपने जीवन में गतिशील होता है। ये तीन कर्म है।

१ संचित कर्म

२ प्रारब्ध कर्म

३ क्रियमाण

आइए अब प्रत्येक की विवेचना करते हैं, जन्म मरण के इस आवागमन में पूर्व जन्म में जिस प्रकार से जीवन जीया है और जिन कर्मों का फल अभी तक नहीं भोगा है वह कर्म संस्कार बन कर इस जीवन में साथ रहते है। संस्कार और जीवन की चारित्रिक विशेषताएं अथवा दुर्बलताएं जीवन के प्रथम दिवस से ही अपने आप दृष्टिगोचर होने लगती है। प्रारम्भ से ही गुण दूर्गुण स्वस्थता अस्वस्थता सोचने विचारने का ढंग विभिन्न प्रकार की रुचियां अरुचियां पनपती है। इन सब के पीछे संचित कर्म ही होते है।

दूसरा कर्म **'प्रारब्ध कर्म'** कहलाता है। प्रारब्ध अर्थात भाग्य पूर्व जन्म में किये गए अनगिनत कर्मों में से जिन कर्मों को इस जीवन में भोगना निश्चित हुआ है वह प्रारब्ध अर्थात भाग्य कहलाता है। यह भाग्य सौभाग्य भी हो सकता है और दुर्भाग्य भी हो सकता है। सौभाग्य की स्थिति में उसे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहती है। जिस कार्य में भी हाथ डालता है उसमें उसे पूर्णता प्राप्त होती है, और दुर्भाग्य की स्थिति में परिश्रम करने पर भी असफलताएं ही हाथ आती है। इसीलिए कहा गया है कि भाग्य की गति अतिविचित्र है किसे कब सिंहासन पर बिठा दे, किसे कब पाताल पर पहुंचा दे उच्चता से निम्नता की ओर ले जाएं। यह सब प्रारब्ध भाग्य का खेल है। व्यक्ति कहता है कि परमात्मा की लीला है जब कि वास्तव में यह उसकी अपनी ही लीला होती है जो अपने जन्मों में कि हुई होती है। ईश्वर तो व्यक्ति की सारी लीलाएं देखता है उसने तो अपनी लीला का चमत्कार व्यक्ति को बनाकर कर ही दिया है।

वर्तमान जीवन में अपनी इच्छाओं अपनी धारणाओं अपने संस्कारों के प्रभाव स्वरूप जो क्रिया करता है वे कर्म **'क्रियमाण कर्म'** कहलाते है। तीनों प्रकार के कर्मों में क्रियमाण कर्म सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि इन्हें मनुष्य स्वयं अपनी इच्छा से विचार बुद्धि ज्ञान के द्वारा सम्पन्न करता है। क्रियमाण कर्म के द्वारा वह अपने आने वाले जीवन की नींव का निर्माण करता ही है, साथ ही साथ पूर्व जन्म में किये गए संचित कर्म और प्रारब्ध कर्म के दोषों को भी मिटाने में समर्थ हो सकता है।

पूर्व जन्म तो देखा नहीं और भविष्य अज्ञात है वर्तमान व्यक्ति के स्वयं के हाथ में है। उसका निर्णय उसे स्वयं अपने आप करना है। क्रियमाण वास्तव में प्रारब्ध और संचित कर्मों के दोषों को पराजित करने की क्रिया है।

नीतिकारों ने कहा है कि जीवन किस प्रकार से जीया जाए जिससे जीवन में सौभाग्य की स्थिति बन सके मनुष्य के

स्वयं के हाथ में वह कुंजी है, जिनके द्वारा वह सौभाग्य का द्वार खोल सकता है। ऐसे सिद्धांतों को जीवन में अपना कर मनुष्य स्वयं अपना नव निर्माण कर सकता है। और ये सिद्धांत यदि जीवन सिद्धांत बन जाए ऐसा ही निरन्तर प्रयास होना चाहिए

प्रथम सूत्र – चरित्र सुप्त अवस्था से जाग्रत अवस्था में लाता है चरित्र के द्वारा ही तीव्र बलवती भावना हमें क्रियाशील बनाती है और अनुशासन हमें उसी मार्ग पर आगे निरन्तर चलाता रहता है इसीलिए जीवन में सबसे पहले चरित्र, चरित्र के साथ क्रियाशीलता और उसके साथ स्वअनुशासन।

द्वितीय सूत्र – अत्यन्त बुद्धिमान गुणी व्यक्ति की सभी प्रसन्नता कर सकते है, धनी व्यक्ति को आश्चर्य से देखते है, शक्तिशाली व्यक्ति को देखकर भय या डर उत्पन्न हो सकता है लेकिन विश्वास आप केवल चरित्रवान व्यक्ति पर ही कर सकते है। आप का सच्चा मित्र वही हो सकता है जो चरित्र का खरा हो ।

तृतीय सूत्र – ध्यान रहे जब आप उन कार्यों को करने के लिए अनुशासित और क्रियाशील करते है जिन्हें उसी समय करना अवश्यक है तो निश्चय ही एक समय ऐसा आता है जब आप उन कार्यों को सम्पन्न कर सकते है, जिन्हें आप सम्पन्न करना चाहते है। अनुशासन द्वारा कार्य की आवश्यकता देखते हुए क्रियाशील हो जाने से धीरे धीरे व्यक्ति महान कार्य भी सम्पन्न कर सकता है।

चतुर्थ सूत्र – यह ध्रुव सत्य है कि जिनके जीवन में निश्चित दिशा, निश्चित लक्ष्य होता है वे ही अपने जीवन में बहुत तेजी से बहुत आगे जा सकते है, और अपने जीवन में सभी क्षेत्रों में ज्यादा प्राप्त कर सकते है। लक्ष्यहीन जीवन, दिशा हीन जीवन पशु के समान जीवन है।

पांचवा सूत्र– आपकी विचार धारा का आपकी क्रियाशक्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है अतः अपकी विचार धारा ठोस एवं सही विचारों से ही अन्तर निहित होनी चाहिए। विचार धारा पल-पल बदलती है तो क्रियाशक्ति भी छिन्न भिन्न होती है और क्रियाशक्ति नहीं है तो जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता है।

विद्या अर्थात ज्ञान ही ऐसा धन है जिसे कोई आपसे छिन नहीं सकता यह देते रहने पर भी वृद्धि करता है। अतः निरन्तर प्रयत्न कर अधिक ज्ञान अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करते रहना चाहिए।

अपने बारे में दूसरों से राय जानने के बजाय आप अपने बारे में जो राय रखते है वह महत्वपूर्ण है और वही बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जो आप अपने आप से करना चाहते है।

छठा सूत्र – सज्जनों के साथ मित्रता की इच्छा पराये के गुणों से प्रेम, गुरुजनों के प्रति विनम्रता, विद्या के प्रति अनुराग, स्व पत्नी से प्रीति, लोक निन्दा से भय, शिव और शक्ति की भक्ति, इन्द्रीय दमन की शक्ति और दुष्टों की संगति का त्याग सर्वोतम गुण माने गए है।

सातवा सूत्र– जिनके साथ आप अपना लक्ष्य निश्चित करते है वे आपके जीवन में मुख्य भूमिका निभाते है कि आप अपने जीवन में अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते है या नहीं। अतः आपके सहयोगी, मित्र कैसे है, आपके आर्दश कैसे है इन पर बार बार विचार कर ही निश्चित करना चाहिए।

जो समाज से दबता है उसे समाज और दबाता है, जो समाज से भयभीत होता है, समाज उस पर अधिक जुल्म करता है।
– पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

आठवां सूत्र –तपते हुए लोहे पर पड़ने वाला जल तत्काल नष्ट हो जाता है। वहीं जल कमल के पत्तों पर गिरकर मोती जैसा चमकता है, और वही जल स्वाती नक्षत्र में सीपी के मुंह में गिर कर मोती बन जाता है। अतः व्यक्ति में अधम मध्यम और उत्तम गुण संसर्ग से ही अर्थात मित्रता से ही उत्पन्न होते है। जैसे मित्र रहेंगे वैसे ही आप बन जाएगें।

नौवा सूत्र –कार्य विशेष की स्थिति में लगा हुआ व्यक्ति क्षणिक दुख और सुख की परवाह नहीं करता जैसी भी स्थिति है वह उसे लक्ष्य प्राप्त के मार्ग में आने वाली क्रियाएं समझता है और व्यथित नहीं होता है वही व्यक्ति जीवन में लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

दसवां सूत्र – मनुष्य शरीर में रहने वाला आलस्य ही उसका प्रमुख शत्रु है, और पुरुषार्थ के बराबर उसका कोई मित्र नहीं है क्योंकि पुरुषार्थ के रहने पर मनुष्य कभी दुखी नहीं रह सकता।

ग्यारहवां सूत्र – कर्म को बार बार नमस्कार है क्योंकि कर्म में ही ब्रह्माण्ड रूपी पात्र में ब्रह्मा को कुमार के समान नियुक्त किया, कर्म ने ही विष्णु को दशावतार धारण करने रूपी घोर संकट में डाला, कर्म ने ही रुद्र को खप्पर हाथ में देकर भीक्षा के लिए बाध्य किया। कर्म ने ही सूर्य को रोज आकाश में भ्रमण करने का कार्य सौंपा, उस कर्म को महान ही कहा जा सकता है।

बारहवां सूत्र – जो भाग्यहीन अभागा मनुष्य इस कर्म प्रधान संसार में जन्म लेकर भी अकर्मण्य रहता है उसका तो परमात्मा भी भाग्योदय नहीं कर सकते है।

जीवन में ये सिद्धांत कोई कठिन सिद्धांत नहीं है ऐसे गीति वाक्य भी नहीं है जिनकी पालना नहीं की जा सके। जिसके जीवन में कर्म है, लक्ष्य है, क्रियाशीलता है, बुद्धि है, वही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकता है इसीलिए कहा गया है कि हाथों की प्रसन्नता दान में है, सिर की शोभा गुरुजनों चरणों में प्रणाम और नमन में है, मुख की शोभा सत्य भाषण में, भुजाओं की शोभा बल प्रदर्शन में, हृदय और मन की शोभा स्वच्छता में, कानों की शोभा श्रेष्ठ शास्त्रों को सुनने में है।

जीवन में दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलना कोई महान कार्य नहीं है यह तो प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में है। उसने जीवन के प्रति अनुराग, जीवन के प्रति प्रेम, जीवन में एक ही ईष्ट, एक ही गुरु को मानते हुए निरन्तर क्रियाशीलता में है। जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की लिए इसी अनुशासन और निष्ठा के साथ जीवन संग्राम में प्रबल क्रियमाण कर्म करें, तो इसी जीवन में स्वर्ग प्राप्त हो सकता है जीवन का वास्तविक आनन्ददायक स्वरूप प्राप्त हो सकता है।

❊ अमृत वचन ❊

समुद्र में नदी का जल आकर मिलता है, परन्तु तब भी समुद्र वैसा का वैसा ही पूर्ण बना रहता है, जैसा पहले था। सूर्य की रश्मियां समुद्र से जल खींचती हैं, परन्तु फिर भी समुद्र की पूर्णता और विस्तार में कोई प्रभाव नहीं पड़ता, समुद्र घट नहीं जाता और न ही नदी के जल से समुद्र का विस्तार अधिक हो जाता है। समुद्र तो पहले से ही पूर्ण होता है, और बाद में भी पूर्ण बना रहता है। सदगुरुद भी समुद्र की ही भांति होते हैं। कई शिष्य गुरु चरणों में आकर दीक्षा प्राप्त करते हैं, पूर्णता प्राप्त करते हैं, परन्तु इससे गुरु की पूर्णता कोई न्यून नहीं हो जाती। पूर्णता तो ऐसा बिन्दु है, जो फिर किसी भी कारण से घटता नहीं है। यही वास्तविक पूर्णता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

साधक साक्षी है

गुरु कृपा से असंभव कार्य भी संभव

गुरु दीक्षा के बाद से मुझे निरन्तर आध्यात्मिक एवं भौतिक क्षेत्र में सफलताएं मिल रही हैं। मैंने वर्ष ९९ में विशक्ति साधना सम्पन्न की, मैं वन विभाग मध्य प्रदेश के हरदा वनमंडल में वनरक्षक के पद पर कार्यरत हूं। हरदा वनमंडल के इतिहास में अभी तक अलग-अलग वारदातों में वन अपराधियों ने चार वनरक्षकों की जंगल में वनसुरक्षा के दौरान निर्मम हत्या कर दी थी। तथा अन्यों को जानलेवा हमले में घायल भी किया जा चुका है। एक वनरक्षक की हत्या का आरोपी जो पिछले तेरह वर्षों से फरार था, जिसे कई बार पुलिस के प्रयास के उपरांत भी पकड़ा नहीं जा सका था, उसे पकड़ना पुलिस के लिए चुनौती बनकर रह गया था। मैंने सदगुरुदेव का स्मरण कर हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कराने का संकल्प लेकर बीड़ा उठा ही लिया। इस कार्य के लिए मैंने अपने विभाग से तीन दिन का समय लिया। प्रयास करने के पहले एवं दूसरे दिन मुझे सफलता नहीं मिली। तीसरे, अंतिम दिन असफलता के कारण निराशा में डूबा हुआ था तथा दोपहर में अपने घर में लेटा हुआ था तथा कार्य की सफलता के लिए सदगुरुदेव का स्मरण तथा गुरु मंत्र का जप कर रहा था। जप करते समय मैंने अपने पास रखी बावन भैरव प्रयोग की कैसेट को दोनों हाथ में लेकर उसमें विराजित सदगुरुदेव के चित्र पर अपलक वाटक किया तथा प्रार्थना की। तभी अचानक मेरे नाभी स्थान में कुछ अजीब सी क्रिया हुई। मैं उठकर बैठ गया। दिन के तीन बज रहे थे। मैं निर्भीक होकर चल पड़ा अपने पुनीत कर्तव्य के निर्वहन हेतु निसंकटक, यंत्रवत जिसके फलस्वरूप आरोपी कुछ ही घंटों में वह मेरी गिरफ्त में था।

सदगुरुदेव की कृपा से तेरह वर्षों से चुनौती भरा कार्य मात्र नौ घंटों में मेरे द्वारा पूर्ण हो गया।

अब किसी वनरक्षक के साथ दुर्घटना की खबर नहीं आ रही है। यह सब सदगुरुदेव जी के आशीर्वाद का ही चमत्कार है, जो हम सब गुरुभाईयों पर बना रहे।

२६ जनवरी को गणतंत्र दिवस पर वनमंडलाधिकारी द्वारा पारित प्रशस्ति पत्र साहसपूर्ण सराहनीय कार्य के लिए जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं जिलाध्यक्ष द्वारा मुझे प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सब गुरु कृपा से ही संभव हुआ है।

– जुगलकिशोर अंडारिया म. प्र. वन रहटगांव हरदा (म. प्र.)

गुरुकृपा जान बची

एक वर्ष पहले की बात है, मैं और मेरा मित्र दोनों स्कूटर से जा रहे थे। घर हमें शीघ्र पहुंचना था, इसलिए मैं गाड़ी बहुत तेज चला रहा था कि अचानक रोड़ के समीप बने मकान से एक व्यक्ति ने काइनेटिक होन्डा निकाली जिस पर आगे एक दो वर्ष की नन्ही बालिका खड़ी थी। अचानक मेरी गाड़ी के सामने आ जाने से उनकी गाड़ी के पिछले हिस्से में तेज टक्कर हुई। तभी मैंने तुरंत गुरुदेव का स्मरण किया। नन्ही बालिका करीब दस फीट दूर उछल गई, हम भी गाड़ी सहित गिर गये। मेरा मन तो गुरुदेव का स्मरण कर रहा था। मैं उठा देखा, तो कहीं कोई खरोंच भी नहीं थी किन्तु मेरे पीछे बैठे मित्र को कमर में तेज चोट आई। खून तो नहीं निकला किन्तु अंदरूनी चोट से वे दो माह तक नहीं उबरे। और नन्ही बालिका को उठाकर देखा तो सारे लोग आश्चर्य चकित हो गये कि उसे एक भी खरोंच नहीं आई। ऐसा लगा जैसे गुरुदेव ने नन्ही बालिका को ऊपर ही पकड़ कर जमीन पर लिटा दिया हो। इस पूरे हादसे में यदि गुरु का सानिध्य नहीं होता तो मुझे भी गंभीर चोट का खतरा था और नन्ही बालिका को कुछ भी हो सकता था। काइनेटिक होन्डा वाला स्वयं भी चोट के दर्द को एक माह तक भुगतता रहा।

– डा. अनिल शर्मा सुल्तानाबाद, भोपाल

स्वास्थ्य सौरभ

वैसे तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज हैं, परन्तु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

1. क्या आपके नेत्र कमजोर हैं?

आपको पास या दूर की वस्तु को देखने के लिए चश्मे का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है अथवा डॉक्टर ने नेत्र पर अनावश्यक दबाव न पड़े, इस कारण भी आपको चश्मा लगाने की सलाह दे दी है, कुल मिलाकर आपकी आंखों की दृष्टि कमजोर हो, तो यह प्रयोग करें।

अपने पूजा स्थान में पूर्वाभिमुख होकर बैठें। किसी पात्र में **चाक्षुष** को स्थापित कर दें। उसके समक्ष **मूंगा माला** से निम्न मंत्र की ५ माला मंत्र जप करें। मंत्रोच्चार के साथ चाक्षुष पर एक-एक आचमनी जल चढ़ाते जाएं।

मंत्र

// ॐ चं क्षं जं चक्षुष्मते दृष्टि देवाय नमः //

मंत्र जप समाप्त करने के उपरांत उस जल से अपने दोनों नेत्र धो लें। यह प्रयोग आप ३० दिन तक करें। इस प्रयोग को आप सूर्योदय के समय ही करें तथा इसे किसी भी दिन से आरम्भ किया जा सकता है।

साधना सामग्री : 200/-

२. अब कोई स्त्री बांझ नहीं रह सकती

जिस तरह रेगिस्तान में एक बूंद की तलाश व्यक्ति को रहती है, उसी तरह किसी स्त्री को भी अपने सूने जीवन को खुशियों से भरने के लिए एक नन्हें शिशु की ललक मन में रहती ही है। आज यदि विवाह के दो तीन साल बाद भी कोई स्त्री मां नहीं बनती, तो उसे हीन दृष्टि से देखा जाने लगता है, और यदि वह मां बनने योग्य न हो, तो समाज उसे हीन दृष्टि से देख, घुटघुट कर जीने पर मजबूर कर देता है। संतान का न होना अर्थात बांझपन सामाजिक दृष्टि से स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप माना गया है।

स्त्रियों में बांझपन गर्भाशय में विकार उत्पन्न होने के कारण ही होता है, क्योंकि स्त्री के जननांगों की विकृति ही उसके गर्भ में अवरोध उत्पन्न कर, उसे कमजोर बनाकर बांझ बना देती है। गर्भाशय दोष या अन्य रोगों के कारण शारीरिक बल क्षीण हो जाना आदि ऐसे ही कारण हैं, जो किसी स्त्री को गर्भ धारण नहीं करने देते, इसके लिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है हमारे ऋषियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से लाभ उठाने की।

ऐसी स्त्रियों को चाहिए कि वे प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नान आदि दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके निम्न मंत्र का खड़े होकर **'जयंती माला'** से ११ माला जप कर ११ बार अक्षत सामने रखे जल पात्र में डालें।

मंत्र

//ॐ कृष्णाय वासुदेवाय पुत्रान देहि नमः //

फिर इसी मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें तथा ७ बार प्रदक्षिणा करें, ऐसा सात रविवार तक करें। उस दिन केश खुले होने चाहिए और मन में अपने इष्ट या गुरु का चिंतन मनन कर उनसे प्रार्थना करते हुए ही इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

बांझ शब्द से कलंकित स्त्रियों के लिए यह प्रयोग शीघ्र सफलतादायक सिद्ध होगा, और वे शीघ्र ही गर्भ धारण कर इस अद्भुत प्रयोग की सफलता अनुभव कर सकेंगी।

साधना सामग्री : 150/-

३. अधिकतर बीमारियों से छुटकारा पाइये?

कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जो रोगग्रस्त न हो, कोई न कोई रोग, व्याधि, पीड़ा उसे व्याप्त होती ही रहती है। हमारे शरीर में वात, पित्त, और कफ ये तीन प्रकार के तत्व होते हैं, जिनका बराबर संतुलन बने रहने ही पर हमारे शरीर के आन्तरिक अंग व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से कार्य करते रहते हैं, और जरा सा भी असंतुलन होने पर वे अव्यवस्थित हो विभिन्न रोगों के जन्म का कारण बन जाते हैं, अतः हमारा शरीर इन तत्वों पर ही निर्भर करता है, किन्तु बाहरी वातावरण के प्रभाव के कारण या अन्य किसी कारणवश इन तत्वों में आपसी संतुलन अव्यवस्थित हो जाने के कारण उसका दुःखद परिणाम हमें स्वयं भुगतना पड़ता है।

अनेकों बीमारियां शरीर में घर कर लेती हैं, और धीरे-धीरे यही बड़ी कष्टप्रद एवं असाध्य बीमारियों का रूप धारण कर लेती हैं, जिनसे मुक्ति पाना असम्भव सा हो जाता है।

– और फिर लगाने पड़ते हैं दिन रात डॉक्टरों के चक्कर, कभी ऐलोपैथी का सहारा लेना पड़ता है, तो कभी होम्योपैथी का तो कभी आयुर्वेद का। व्यक्ति यदि स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त हो, तो उसे खान-पान, मौज-मस्ती, रहन-सहन सब कुछ अच्छा लगता है, और यदि बीमार, अस्वस्थ हो, तो उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, फिर चाहे उसके पास करोड़ों रुपये क्यों न हो, वे भी उसे बेकार लगने लगते हैं, क्योंकि उसका वह आनन्द नहीं उठा पाता।

अब आपको दुःखी होने की जरूरत नहीं, क्योंकि हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों ने अपनी साधना के माध्यम से रोग को जड़ से समाप्त करने की विशेष मंत्र शक्ति प्रदान की है, जिससे कि आने वाली पीढ़ी उससे लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को रोग मुक्त कर सके। अतः व्याधियों को समूल नष्ट करने के लिए व्यक्ति को अब कहीं भटकने की जरूरत नहीं है।

रोग से पीड़ित व्यक्ति को चाहिए, कि वह नाभि में सरसों की कुछ बूंदें निम्न मंत्र का **'काली हकीक माला'** से ५ माला मंत्र जप करने के बाद डाल ले।

मंत्र

॥ ॐ ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसे रोगहराय ॐ ॥

ऐसा १० दिन तक करें, वह स्वयं अपने आप को रोगमुक्त अनुभव करने लगेगा।

यह मंत्र अपने आप में अचूक फलदायी है, जिसके प्रभाव से व्यक्ति के अन्दर के रोगाणु विखंडित होने लगते हैं, फलस्वरूप रोगी धीरे-धीरे पूर्ण स्वस्थ होने लगता है।

साधना सामग्री : 150/-

४. मानसिक तनावों से मुक्ति पाइये न

आए दिन मानसिक तनाव से पीड़ित व्यक्ति आत्महत्या का शिकार हो जाते हैं, शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो इस रोग से ग्रसित न हो, यह रोग तो मानव जाति के उद्भव के समय से आज तक अन्याय रूप में उसके साथ चला आ रहा है, जो उसे मृत्यु का ग्रास बना देता है।

मनुष्य जो जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जो उसके मन को प्रभावित करते हैं, जिसमें कुछ सुखद क्षणों की अपेक्षा दुखद घटनाएं उसके मन पर बुरा असर डाल कर निराशा की खाई में उसे इस तरह डुबो देती हैं, कि वह मौत के मुंह में जाने को विवश हो जाता है।

यदि आप प्रसन्नचित, आनन्दित बने रहना चाहते हैं, और चाहते हैं कि आपका मनोबल बना रहे, आप किसी भी प्रकार के तनाव से मुक्त रहे, तो आपके लिए सर्वथा नवीन उपाय, जो आपके जीवन को परिवर्तित कर देने के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं, जो ईश्वर की विशेष अनुकम्पा ही कही जा सकती है आपके लिए।

मानसिक रूप से पीड़ित व्यक्ति को चाहिए, कि वह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नान आदि कर पद्मासन में बैठ जाय और शक्ति चक्र पर १०-१५ मिनट तक त्राटक करे, त्राटक करने के पश्चात आंख बंद कर ५ मिनट तक अपने इष्ट का ध्यान करे और **'सिद्धि माला'** से निम्न मंत्र की ४ माला जप करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं ॐ फट् ॥

मंत्र जप के पश्चात अभ्यास को नित्य क्रम से जारी रखें, थोड़े दिन के बाद वह स्वयं अपने में परिवर्तन अनुभव करने लगेगा और अत्यधिक हल्कापन महसूस करने लगेगा, उसे ऐसा अनुभव होगा, मानो हजार-हजार मन भारी चट्टानों के नीचे से उसे निकाल दिया गया हो, गहन अंधकार में उसे प्रकाश की किरण मिल गई हो, क्योंकि मंत्र जप अपने आप में ही दिव्य प्रभावयुक्त है, जो व्यक्ति को समस्त तनावों से मुक्त करने का एकमात्र सरल एवं सर्वोत्तम उपाय है।

साधना सामग्री : 150/-

मां काली

श्मशानलयवासिनीम् स्तोत्र

यह काली श्मशानलयवासिनीम् स्तोत्र आराधकों एवं उपासकों को संसार के समस्त वैभव को प्रदान करने वाला है, यह स्तोत्र अपने आप में दिव्य और उज्जवलतम है, अलौकिक तथा गुह्यतम है। जो भी साधक इसका प्रतिदिन नियम पूर्वक पाठ करता है उसे निश्चित रूप से भगवती महाकाली की सुरक्षा प्राप्त होती है। इस स्तोत्र का पाठ अपनी आवश्यकता अनुसार ऋषि, मुनि करते हैं तथा असीमित लाभ लेते हैं।

विरंच्यादिदेवास्त्रवस्ते गुणास्त्रीम्,
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥१॥

जगन्मोहिनीयम तु वाग्वादिनीयम्,
सुहृत्पोषिणी शत्रुसंहारणीयम्।
वचस्तम्भनीयम किमुच्चाटनीयम,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥२॥

इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,
मनोजास्तु कामान्यथार्थं प्रकुर्यात्।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥३॥

सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता,
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते।
जपध्यान पूजासुधाधौतपंका,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥४॥

चिदानन्दकन्द हसन्मन्दमन्द,
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुंज बिम्बम्।
मुनिनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं,
स्वरूप त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥५॥

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,
कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥६॥

क्षमास्वापराधं महागुप्तभावं,
मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतंयत्।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

तयध्यान युतेन चापरत्वभावात्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥७॥

यदि ध्यान युक्तं पठेद्यो मनुष्य
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्ति,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥८॥

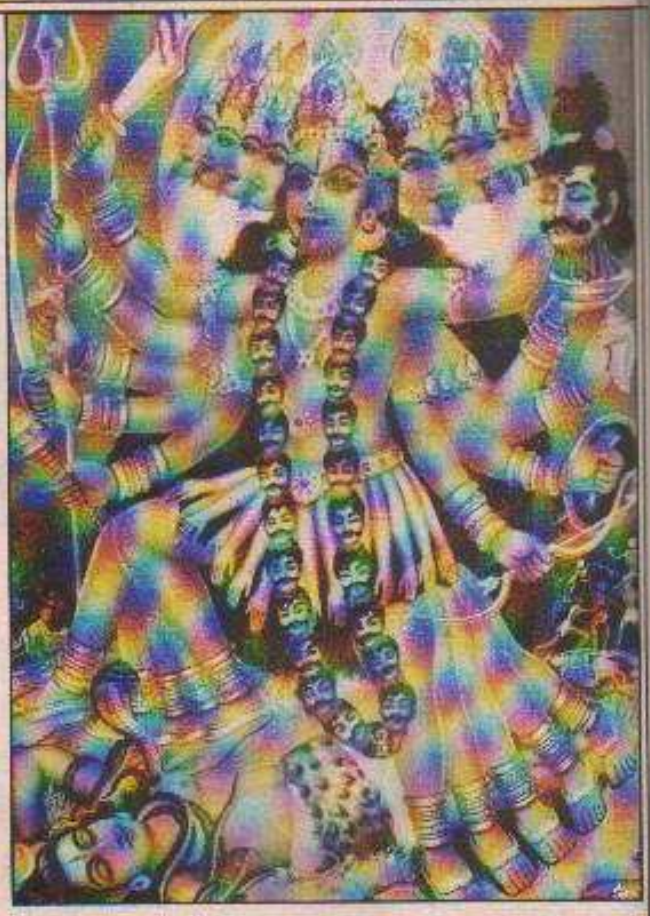

ऊपर लिखा यह स्तोत्र यदि कहा जाए कि मां काली का आवाहन मंत्र है तो कोई अनुचित बात नहीं क्योंकि श्रेष्ठ साधकों ने श्रद्धा युक्त होकर सस्वर पाठ करके **'मां काली'** का बिम्बवत अथवा साकार दर्शन भी प्राप्त किया है। सामान्य रूप से भी इसका पाठ करने से सारे वातावरण में अद्भुत चैतन्यता और उत्साह का वातावरण बन जाता है, प्रत्येक स्तोत्र अपने अंदर कुछ न कुछ विशेषता छुपाये ही होता है और यह स्तोत्र भी इतना अधिक तीक्ष्ण प्रभाव युक्त है कि यदि साधक इसको सिद्ध कर किसी भी उग्र साधना में अथवा श्मशान साधना में प्रवृत्त होता है तो उसे सफलता मिलती ही है। मां काली तो श्मशानालयवासिनीम् कही गयी है और श्मशान की अधिष्ठात्री इस देवी की उपासना करने के उपरांत साधक को कौन सी ऐसी श्मशान साधना है जो सिद्ध न हो जाए। केवल श्मशान साधनाएं ही नहीं, जीवन की वह प्रत्येक विपरीत स्थिति जो जीवन की जीवन्तता में बाधा बनकर जीवन को श्मशान तुल्य, नीरस एवं निश्चेष्ट बना गई हो, उसका निवारण भी मां भगवती महाकाली की कृपा से ही संभव होता है। स्तोत्र जहां मंत्र स्वरूप होते हैं, वहीं उनमें प्रार्थना एवं याचना का ऐसा मधुर स्वर मिला होता है कि सम्बन्धित देवी या देवता के भाव पक्ष को स्पर्शित करने वाला होता है और यही विशेषता इस स्तोत्र में भी समाहित है।

इस स्तोत्र को सिद्ध करने की विधि अत्यन्त सरल है, **कृष्ण पक्ष के किसी भी मंगलवार अथवा अष्टमी** की रात्रि में आरम्भ कर नित्य ११ दिन तक की जाने वाली इस सरल साधना में केवल इस स्तोत्र का नियम पूर्वक ११ पाठ करना आवश्यक होता है, जो इस लघु स्तोत्र को देखते हुए बहुत नहीं है। यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि जितने दिन तक यह पाठ किया जाए उतने दिनों तक साधक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे, यदि संभव हो तो एक समय ही भोजन करे, भोजन तामसिक न हो एवं भूमि शयन करे।

यदि इसी स्तोत्र को **सिद्ध चण्डी यंत्र** (जो ताबीज रूप में हो) के समक्ष किया जाए तो यह अनुष्ठान मात्र न रहकर सिद्ध प्रयोग में बदल जाता है और ऐसे यंत्र पर किये गए प्रयोग के उपरान्त उसे शरीर पर धारण करने से व्यक्ति को स्थायी लाभ मिलता है तथा वह लाभ उसके साथ जीवन पर्यन्त बना रहता है।

यदि साधक प्रयोग रूप में करना चाहता है तो गुरुधाम से **सिद्ध चण्डी यंत्र** जो श्मशान काली मंत्रो से अभिमंत्रित हो उसे प्राप्त कर, भूमि को साफ कर उस पर लकड़ी का बाजोट बिछाए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर तांबे के पात्र में यह यंत्र रखे। स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर, लाल रंग के आसन पर बैठे, उसका मुख दक्षिण दिशा की ओर हो। इस यंत्र पर सिंदूर, काजल एवं कुंकुम अर्पित कर, तेल का दीपक लगा लें तथा स्तोत्र के ११ पाठ करें। ऐसा प्रयास करें कि प्रथम दिन आपने साधना जिस समय से प्रारम्भ की है, प्रत्येक दिन उसी समय से प्रारम्भ करें।

केवल साधक ही नहीं यदि कोई सामान्य रूप से भी इस अनुष्ठान को सिद्ध कर यह यंत्र अपने शरीर पर धारण करता है, तो उसे प्रत्येक आकस्मिक कष्ट एवं दुर्घटना से मुक्ति मिलती ही है।

साधना सामग्री पैकेट – 600/-

निः शुल्क उपहार

नवरात्रि के शुभ मुहूर्तों में सिद्ध दुर्लभ उपहार

'इच्छा विहीनं पशुः' – जिस मनुष्य की कोई इच्छा न हो, आकांक्षा न हो उसका जीवन पशुतुल्य ही है। जीवन का सौभाग्य तो तब है, जब व्यक्ति इच्छा करे और वह पूरी भी हो जाए। आपा-धापी के इस युग में, मनुष्य की इच्छाएं तो बढ़ गई हैं, परन्तु प्रयास के बाद भी जब वह उन इच्छाओं को साकार नहीं कर पाता है, तब उसका निराश व हताश हो जाना स्वाभाविक है।

आपकी अनेक आकांक्षाओं व समस्याओं को देखते हुए पत्रिका कार्यालय द्वारा समय-समय पर विशिष्ट प्रभावकारी दिव्य ऊर्जा से पूरित सामग्री उपलब्ध कराई गई है –

हिरण्यगर्भ गुटिका – भगवान सूर्य के तेजस्वी मंत्रों से चैतन्य इस गुटिका को धारण करने से आप में भी वही तेजस्विता, प्रखरता आ जाएगी जो भगवान कृष्ण के पुत्र साम्ब ने सूर्य साधना से प्राप्त की थी।

क्रीं चक्र – शक्ति तत्व को प्राप्त कर लेने के लिए यह चक्र अद्वितीय है, जिसको धारण करने के पश्चात जीवन की सभी विसंगतियां समाप्त होने लगती हैं।

बगलामुखी गुटिका – जिसके प्रभाव से शत्रु पक्ष निस्तेज हो जाता है और जीवन पर यदि कोई संकट आ गया हो, तो वह टल जाता है।

सर्वकाम सिद्धि गुटिका – जिसके प्रभाव से आपके वांछित कार्य सम्पन्न होने लगते हैं तथा मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – ''ज्ञान दान''

एक महीने के बाद समाग्री नदी में प्रवाहित कर दें।

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि **"मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निः शुल्क 'मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दुर्लभ गुटिकाएं' 365/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिका के 300/- + डाक व्यय 65/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।"** आपका पत्र आने पर, 300/- + डाक व्यय 65/- = 365/- की वी. पी. पी. से **'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दुर्लभ गुटिकाएं'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वी.पी.पी. छूटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क *अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।*

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)

फोन – 0291-432209, टेली फैक्स: 0291-432010

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

जहां निखिल रस है, वहीं शिष्य जीवन्त है।

सहस्र नाड़ी विस्फोटन षटचक्र भेदन निखिल रसेश्वर दीक्षा

समर्पण- निखिल तत्व में पूर्ण रूप से, नववर्ष का प्रारम्भ सेवा से, निखिल रस में आपलावित होकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उस महापथ पर जीवन के कदम . . . .

जीवन की यात्रा आरोह, अवरोह उतार-चढ़ाव, कभी हंसी, कभी पीड़ा के विभिन्न आयामों से गुजरती हुई एक विराट यात्रा है। यदि अपने जीवन का विवेचन किया जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि हर दिन कोई न कोई नवीन घटना अवश्य घटित होती रहती है। कभी आशा, कभी निराशा, कभी प्रेम, कभी घृणा, कभी काम, कभी ध्यान, कभी धैर्य, कभी भय जैसी क्रियाओं से गुजरता हुआ जीवन चलता ही रहता है। इस जीवन में कितने रंग लिखे जाते हैं इसका कोई भी पूर्वानुमान नहीं कर पाता है। कई शारीरिक क्रियाएं सहज रूप से संपन्न हो जाती हैं। जन्म से शारीरिक अभिवृद्धि की प्रक्रिया और देह के कार्य चलते रहते हैं। इन क्रियाओं की विशेषताओं की ओर व्यक्ति का ध्यान जाता ही नहीं। इसके साथ ही कभी-कभी व्याधि पीड़ा आती रहती है।

ईश्वर ने मनुष्य के निर्माण के साथ ही उसमें एक सबसे बड़ा गुण विस्मृति का गुण दिया। यह बात थोड़ी अजीब अवश्य लगती है, लेकिन यदि यह गुण नहीं हो तो मनुष्य जीवन भर दुःखी और संतप्त ही रहे। यह जानकारी है कि देह का अन्त होना ही है, अन्ततः आत्मा और प्राण रूपी पक्षी को यह देह त्याग देनी है, इसके बावजूद भी मनुष्य रूपी पक्षी तिनका तिनका कर अपना घर बनाता है, जीवन में त्याग के बजाय जोड़ने की प्रवृत्ति रखता रहता है। मोह और माया उसे सांसारिक प्रेम के बंधन में जोड़ते रहते हैं, अपने चारों ओर एक मजबूत बंधन बनाता ही रहता है। जीवन का हर क्षण जोड़ तोड़ के गणित में लगा रहता है। शिक्षा, मित्रता, गृहस्थ और उसके साथ गृहस्थ जीवन की लीलायें उसे प्रिय लगने लगती हैं। कभी इस संसार में दिखने वाली प्रत्येक वस्तु से वह प्रेम करने लगता है। हर सुन्दर वस्तु को अपनी बना लेना चाहता है। शारीरिक सुन्दरता, विशेष ज्ञान, सुन्दर पत्नी, सुन्दर भवन से लेकर प्रकृति में फैला हर सुन्दर-सुन्दर वस्तु को अपनी बना लेने की इच्छा, जिसे योगियों ने तृष्णा कहा है, यह गुण भी ईश्वर ने मनुष्य को प्रदान किया। तृष्णा का ही सांसारिक स्वरूप इच्छा है और यह इच्छा रूपी जीव ही मनुष्य के जीवन को चलाता है।

इसके साथ ही ईश्वर ने मनुष्य को एक और गुण प्रदान किया है, वह गुण है आशा। इस आशारूपी बेल के सहारे विपरीत स्थिति में भी मनुष्य को यह लगता है कि मेरे ये खराब दिन भी अवश्य समाप्त होंगे। उसके लिए उसके मन में हर समय मंथन चलता ही रहता है। किसी भी प्रकार से अपनी समस्याओं से छुटकारा पाऊं, यह आशा ही उसे कार्य शक्ति प्रदान करती है।

चौथा सबसे बड़ा गुण ईश्वर ने अभिवृद्धि और ऊर्ध्वगामी जीवन जीने का गुण प्रदान किया है। संसार में उत्पन्न हुआ कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता है कि जिस स्थिति में उत्पन्न हुआ हूं उसी स्थिति में समाप्त हो जाऊं। निरन्तर ऊपर की ओर उठने की क्रिया उसके जीवन में चलती रहती है। कोई व्यक्ति अपने जीवन में भौतिक उन्नति चाहता है, तो कोई आध्यात्मिक। लेकिन उन्नति हर कोई चाहता है। इस क्रिया से वह बच भी नहीं सकता है। सांसारिक व्यक्ति के मन में आता है कि संसार के सारे सुख उसके चरणों में रहें। योग विद्या पथ के जिज्ञासु के मन में यह इच्छा अवश्य रहती है कि वह अपने जीवन के पूर्ण ज्ञान से तृप्त हो जाए, वह समाधि का अपना लक्ष्य प्राप्त कर ले। योगी, भोगी कोई

भी जीवन है, उसके अन्दर कुछ लक्ष्य प्राप्त करने की इच्छा अवश्य रहती है। जो अपने आप ही उसके जीवन को ऊर्ध्वगामिता प्रदान करती है।

जीवन और जीवन के दुःख

लोग कहते हैं कि संसार में धोखा, लूटपाट, स्वार्थ, व्यभिचार, बीमारी, अविश्वास ही फैला हुआ है और मनुष्य की प्रकृति भी दूसरे पर विजय प्राप्त कर येन-केन प्रकारेण अपनी उन्नति करने की रहती है, लेकिन ये भावनायें मनुष्य को किसने प्रदान की ? बालक जब उत्पन्न होता है तो उसे अपनी दैहिक क्रियाओं का ही ज्ञान नहीं होता है, तो उसमें झूठ, छल, अनाचार, कपट, लूट-पाट जैसे कुविचार कौन भरता है ? शिशु चाहे राजा के घर में उत्पन्न हो या डाकू के घर में उत्पन्न हो बालक तो सब एक समान ही होते हैं। ये सारी दूषित मानसिक भावनायें उसके जीवन में कौन भरता है? कौन आनन्द व प्रेम से भरे बालक के मन में इस प्रकार की विचार धारायें भर देता है कि वह जीवन में श्रेष्ठ संस्कार, आचार-विचार छोड़कर मनुष्य जीवन में ही पशु की भांति जीवन व्यतीत करने लगता है? जब हर व्यक्ति का दूसरे सांसारिक व्यक्तियों के प्रति अविश्वास, वैमनस्य की भावना और वातावरण बनने लगता है, तब ऐसे जीवन में इन क्रियाओं का ज्ञान होने लगता है। उसमें आशा के विपरीत निराशा उभरती है, वृद्धि के बजाय जीवन में ठहराव लगने लगता है। तिनका-तिनका चुनकर बनाया गया अपना घोसला छिन्न-भिन्न होता हुआ नजर आता है। जीवन ऊर्ध्वगामी होने के बजाय अधोगामी हो जाता है।

निराशा में आशा कहां से?

संतप्त और त्रस्त व्यक्ति में एक महान घटना घटित होती है। वह बाह्य जगत का अवलोकन करने के साथ ही भीतरी जगत का अवलोकन करने लगता है। इसके मन में विचार आता है कि कैसे मैं इस शारीरिक मानसिक त्रस्तता के अंधकार से बाहर निकलूं। तब उसके जीवन में आगमन होता है एक दृष्टा का, एक ऐसे व्यक्तित्व का जो उसके आहत घायल जीवन को ठीक कर सके। उसके जीवन में आगमन होता है ऐसे व्यक्ति का जो उसके जीवन का हलाहल विष भी पी सकता है। ऐसे ही दृष्टा मार्गदर्शक को गुरु कहा गया है। गुरु का तात्पर्य है, वह ज्ञान जिसे आप अपना आदर्श मान सकें, आपकी लक्ष्यपूर्ति में सहायक हो सके, आपकी बाधाओं का निराकरण कर सके। गुरु ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके सामने जाकर आप पुनः बालक बन जाते हैं। बालकों की ही भांति जिद करके अपनी इच्छाओं की पूर्ति प्राप्त करना चाहते हैं और गुरु आपकी जीवन की इन न्यूनताओं को, जो आपने स्वयं पकड़ी है, हटाकर इसी जीवन में पुनः इच्छाधारी, आशायुक्त, ऊर्ध्वगामी जीवन की शक्ति प्रदान कर देते हैं।

जो आपके जीवन में पुनः श्रेष्ठता की ओर बदलाव ला सके, वही तो आपके गुरु हो सकते हैं। यह गुरु आपके जीवन में कोई पुस्तक भी हो सकती है, कोई मूर्ति भी हो सकती है, कोई जीवन्त व्यक्ति भी हो सकता है। ये तो स्वरूप हैं। आपकी निराशा, और निम्नता को आशा और उच्चता में परिवर्तित कर देते हैं। किसी भी व्यक्ति को ज्ञान वाक्य की पुस्तक को पढ़कर ही अपने आप में परिवर्तन का अनुभव होता है। कोई किसी मंदिर अथवा मूर्ति, चित्र आदि का ध्यान कर, देखकर अपने जीवन में परिवर्तन की क्रिया प्रारम्भ कर देता है। इसीलिए हर व्यक्ति अलग-अलग देवी-देवता को इष्ट मानता है। जो व्यक्ति हनुमान का भक्त है उसे ऐसा लगता है कि मैं हर मंगलवार को हनुमान जी की पूजा करता हूं, सिन्दूर लगता हूं, इसीलिए मेरे बिगड़े कार्य ठीक हो जाते हैं। वह व्यक्ति किसी दूसरे देव की पूजा करे भी तो उसे संतोष नहीं मिलेगा, क्योंकि उसने अपना इष्ट किसी मंदिर अथवा मूर्ति विशेष में बनाया हुआ है। वहीं कोई व्यक्ति व्रत आदि रखकर अपने जीवन में परिवर्तन की चाह रखता है।

शाश्वत गुरु

निराशा के घने अंधकार में जब मानसिक शांति और कामनाओं की पूर्ति नहीं होती है तो उसकी तलाश प्रारम्भ होती है एक ऐसे व्यक्तित्व के लिए जो सारी सफलतायें अर्जित किये हुए हो, जो उसके सुख दुख को समझ सके, जो उसे जीवन का सही मार्ग दिखा सके, जीवन में पल-पल आती समस्याओं से मुक्ति दिला सके। कई बार इस खोज में व्यक्ति भटक भी जाता है लेकिन जहां चाह वहां राह, सच्चे ज्ञान के पिपासु को सच्चा मार्गदर्शक मिल ही जाता है, हर व्यक्ति के जीवन में एक बार उसके गुरु अवश्य ही मिलते हैं। उस समय दो क्रियाएं होती हैं, गुरु तो शिष्य को पहचान जाते हैं और भाग्यवान शिष्य भी गुरु को पहचान लेता है और यात्रा प्रारम्भ होती है जिसमें शिष्य के पास गुरु रूपी मित्र, पिता मार्गदर्शक हर समय रहता है। ऐसी स्थिति में शिष्य अपने आप को अकेला अनुभव नहीं करता है, हर समय उसके मस्तक पर गुरु का वरदहस्त रहता ही है।

गुरु शिष्य सम्बन्ध एक जन्म के नहीं होते, शाश्वत जन्म-जन्मान्तरों के सम्बन्ध होते हैं। इसीलिए गुरु को शाश्वत कहा गया है। और शाश्वत गुरु को सद्गुरु कहा गया है, शिष्य भूल कर सकता है और करता ही है और सद्गुरु का कार्य ही शिष्य की गलतियों, कमियों का निराकरण करते हुए जीवन रूपी अग्नि में से तपाते हुए, निखार कर, तराश कर अद्वितीय बना देना है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

देह रचना कितनी विचित्र

मनुष्य देह असंख्य आश्चर्यों से भरी हुई एक जटिलतम रचना है कहने को तो मनुष्य हाड मांस का पुतला है लेकिन यह हाड मांस का पुतला बड़ी ही चमत्कारिक रचना है। शरीर केवल अंगों से ही नहीं बना है। इन अंगों को निरन्तर स्पंदित गतिशील करने के लिए जो तान्त्रिका तंत्र है, जो नाड़ियां रक्त का आवागमन करती हैं वे तो सामान्य नाड़ियां हैं, आखिर इन नाड़ियों में भी कौन प्रवाह देता है, कौन चेतना देता है, आर्य ऋषियों ने शरीर रचना को भलिभांति समझते हुए यह तथ्य स्थापित किया कि मानव देह केवल कोशिकाओं का समूह नहीं है। इसमें जो सुषुम्ना नाड़ी और उसकी सहयोगी नाड़ियां इड़ा और पिंगला हैं, वे प्राणश्चेतना देने वाली आधार शक्तियां हैं। इन आधार शक्तियों के भी आधार वे छः चक्र हैं जिनसे मनुष्य का जीवन ब्रह्माण्ड में गतिशील होता है। ये छः चक्र हैं – **मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञा चक्र।**

तांत्रिका तंत्र और षटचक्र

इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना और षटचक्र केवल योगियों के जानने लायक ही विषय नहीं है, यह विषय तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है, इन तंत्रिकाओं का स्पन्दन और इन चक्रों का जागरण ही मनुष्य को सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही मार्गों पर उन्नति कराता है।

मूलाधार चक्र – पृथ्वी बीज का स्वरूप है। आधार पद्म है शारीरिक शक्ति का आधार तत्व है।

स्वाधिष्ठान चक्र – सत्व शक्ति का स्वरूप है, जल तत्व प्रधान चक्र होने के कारण वीर्य और रज के रूप में विद्यमान होकर रचना और सृजन के क्रिया का स्वरूप है।

मणिपुर चक्र – अग्नि तत्व प्रधान होने के कारण मनुष्य के जीवन में क्रियाशील शक्ति का स्वरूप है, इसी चक्र से जीवन में क्रियाशील होकर उन्नति करने की शक्ति मनुष्य को निरन्तर प्राप्त होती रहती है। नवीन जीव का निर्माण तो पशुपक्षी सभी करते हैं, लेकिन मनुष्य में उन्नति की भावना, विचार शक्ति मणिपुर चक्र के माध्यम से ही आती है।

अनाहत चक्र – सुप्त शक्तियों का जागरण और वायु तत्व प्रधान इस चक्र द्वारा, इस चक्र का हृदय में स्थित होने के कारण, ज्ञान शक्ति और भावना शक्ति का जागरण होता है।

विशुद्ध चक्र – आत्म साक्षात्कार और इच्छित जीवन जीना, अहं का विसर्जन करते हुए आकाश तत्व प्रधान इस चक्र की शक्ति वाक शक्ति और सम्मोहक शक्ति है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर देती है।

आज्ञा चक्र – तीसरे नेत्र और मनस तत्व युक्त यह चक्र जो भ्रूमध्य में ललाट के स्थान पर स्थित है इसके जागरण से इंद्रियां पूर्ण रूप से चैतन्य हो जाती है। चाहे वे कर्मेन्द्रियां हो, चाहे ज्ञानेन्द्रियां हों। सभी तो जाग्रत हो जाती हैं।

गुरु का निवास कहां ?

सद्गुरु जीवन का आधार हैं, प्राण और सद्गुरु में भी सद्गुरु का स्थान उच्च है, पर सद्गुरु को केवल मूर्ति अथवा चित्र बनाकर स्थापित नहीं किया जा सकता। केवल आरती धूप ही द्वारा उनका पूर्ण पूजन नहीं है। यह तो पूजा के बाह्य स्वरूप हैं जिनके द्वारा अपने चारों ओर फैले दूषित विचारों को काट कर भीतर की यात्रा प्रारम्भ करनी है। मनुष्य अपने जीवन में अपनी आन्तरिक शक्तियों को समझ कर ही अग्रसर हो सकता है, उसके साथ उसके सद्गुरु हर समय रहते हैं लेकिन मोह पाश में बंधा व्यक्ति स्वयं को गुरु मय नहीं बना पाता है, वह अपने आप को गुरु से अलग समझते हुए अपनी बुद्धि से संसार के क्रिया कलाप करता है और जब उसके जीवन मार्ग में बाधाएं आती हैं तो वह घबरा कर सबसे पहले गुरु को ही याद करता है। ऐसी स्थिति में निश्चय ही एक भेद रहता है और यह भेद ही उसे जीवन चक्र में बार बार चक्रव्यूह में आबद्ध करता रहता है।

निखिल मेरे प्राण आधार

समर्पण स्तुति में हर शिष्य कहता है कि अब सौंप दिया है जीवन का भार तुम्हारे हाथों में, है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में। यह शब्द केवल मुंह से उच्चरित होने के बजाय, प्रत्येक रोम-रोम से, प्रति रोम से उच्चरित हों। प्रिय निखिलेश्वर का स्थान कहां है? उनका स्थान किसी मंदिर, देवालय, पूजा स्थान में होने की अपेक्षा शिष्य के देह के भीतर स्थित प्राणश्चेतना की सहस्र नाड़ियों का भेदन कर प्रत्येक चक्र में स्थापित हो जाए। जीवन है तो आधार शक्ति भी आवश्यक है, निर्माण शक्ति भी आवश्यक है, शारीरिक ओज भी आवश्यक है, श्रेष्ठ बुद्धि भी आवश्यक है, वाक सिद्धि भी आवश्यक है तभी व्यक्ति सम्पूर्ण बन सकता है। जीवन निर्माण में स्वयं के निर्माण की क्रिया मूलाधार से आज्ञा चक्र तत्व की यात्रा है। हर पदमदल में, हर चक्र में निखिल सद्गुरु जी ही स्थापित हों और यह सम्भव है केवल उस व्यक्ति के लिए जिसका नाम है – **"समर्पित शिष्य"** !

जिसने अपने आपको समर्पित कर दिया वह व्यक्ति शिष्य बन जाता है और जीवन में लघुता से प्रारम्भ कर उच्चता अर्थात दिव्यता की ओर अग्रसर हो जाता है। समर्पित शिष्य जीवन में पूर्णत्व प्राप्त करके ही रहता है। वह निखिल का आत्मांश होकर परम आत्मा निखिल में ही विलीन होता है।

– अगले अंक में निखिल रस चेतना निखिल हर रस

सहस्र नाड़ी विखण्डन षटचक्र भेदन निखिल रसेश्वर दीक्षा

पांच मित्रों के नाम –

1. नाम .....
पूरा पता .....
.....

2. नाम .....
पूरा पता .....
.....

3. नाम .....
पूरा पता .....
.....

4. नाम .....
पूरा पता .....
.....

5. नाम .....
पूरा पता .....
.....

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है

1. नाम .....
पूरा पता .....
.....

विशेष : जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह **'सहस्रनाड़ी विखण्डन सहस्र चक्र भेदन दीक्षा'** उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1125/- 195. (195 + 30) – 225×5/- का बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – 342001, (राज.) फोन – 0291-432209 टेली फैक्स : 0291-432010

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का यह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है – जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (19, 26, नवम्बर 3, 10 दिसम्बर)	दिन 7.36 से 10.00 12.24 से 2.48 तक रात्रि 7.36 से 9.12 तक 11.36 से 2.00 तक
सोमवार (20, 27 नवम्बर 4, 11, दिसम्बर)	दिन 6.00 से 10.48 तक 1.12 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक 2.00 से 3.36 तक
मंगलवार (21, 28, नवम्बर 5, 12, दिसम्बर)	दिन 6.00 से 7.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 2.48 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक 2.00 से 3.36 तक
बुधवार (15, 22, 29, नवम्बर 6, 13, दिसम्बर)	दिन 6.48 से 11.36 तक रात्रि 6.48 से 10.48 तक 2.00 से 4.24 तक
गुरुवार (16, 23,30, नवम्बर 7,14, दिसम्बर)	दिन 6.00 से 6.48 तक 10.48 से 12.24 तक 3.00 से 6.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (17, 24 नवम्बर 1, 8,15, दिसम्बर)	दिन 9.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 2.00 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक 1.12 से 2.00 तक
शनिवार (18,25 नवम्बर 2, 9, दिसम्बर)	दिन 10.48 से 2.00 तक 5.12 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक 12.24 से 2.48 तक 4.24 से 6.00 तक

ज्योतिष काल निर्णय

'काल निर्णय' जीवन्त, जाग्रत और चैतन्य ग्रंथ है, जिसमें वराहमिहिर ने शताब्दियों पूर्व काल गणना कर यह सिद्ध किया था, कि प्रत्येक दिन में आदमी के लिए शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का समय आता है।

शुभ या अशुभ समय किस दिन और कब आता है, यदि दिन या रात्रि में अशुभ समय आता है, तो उसे टाल देना चाहिए, जिससे व्यक्ति के जीवन में कोई बाधा, रुकावट या गलत निर्णय न आवे।

इस दृष्टि से यह पुस्तक अद्वितीय है, जिसके लिए पंडित पुरोहित की जरूरत नहीं, अपितु स्वयं व्यक्ति अच्छे मुहूर्त या समय का निर्णय कर प्रत्येक कार्य में पूरी सफलता प्राप्त कर सकता है।

श्रेष्ठ समय के अलावा अन्य समय की जानकारी एवं सूक्ष्म काल विवरण के लिए आप पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित पुस्तक ज्योतिष और कालनिर्णय का अध्ययन कर सकते हैं।

* पूज्य सद्गुरुदेव *

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

14 नवम्बर कार्य पर जाने के पूर्व **निखिलेश्वरानन्द स्तवन** की निम्न स्तुति का ११ बार पाठ करके ही जाएं –

न हं वरस्त नित्यं त्वद वरत्र लक्ष्मी शतमिदं
त्व पूर्ण त्वं रूपं घट सहस रूपं पर चिति।
भवत्रूपं नित्यं श्रिय प्रिय महो पूर्ण इति च
त्वमूढ त्वं व्यर्थं जपति विव मंत्र मह इवं ॥

15 नवम्बर तुलसी के वृक्ष में जल डालकर प्रदक्षिणा करें, कार्य में सफलता की संभावना है।

16 नवम्बर **बिल्ली की नाल** को अपने सिर पर से तीन बार घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। (न्यौछावर ६०/-)

17 नवम्बर एक गिलास पानी लेकर पूर्व दिशा की ओर खड़े होकर उसमें **ऐं** बीज का ग्यारह बार उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित कर जल पी लें।

18 नवम्बर पांच लौंग को एकत्र कर कागज में बांधकर अपने कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना करें, उसे किसी मंदिर में चढ़ा दें।

19 नवम्बर आज **भैरव अष्टमी** है आप **गजीना गुटिका** का कुंकुम, अक्षत से पूजन करके ही कार्य हेतु जाएं। (न्यौछावर ६०/-)

20 नवम्बर पीपल के पेड़ पर शक्कर का भोग लगाकर ही कार्य हेतु जाए आपकी आने वाली बाधाएं शांत होंगी।

21 नवम्बर गुरु जन्म दिवस के रूप में प्रातः **'निखिलेश्वरानन्द स्तवन'** का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चिन्तन करें। सामर्थ्यानुसार गुरु सेवा करने का संकल्प लें।

22 नवम्बर **गुरु गीता** के प्रथम पांच श्लोक का पाठ करें।

23 नवम्बर मिट्ठी भर तिल को अपने सिर पर से तीन बार घुमाकर किसी पौधे की वृक्ष की जड़ में डाल दें।

24 नवम्बर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गुलाब के पुष्प गुरु चरणों में अर्पित करें –

ॐ किरीट केयूर हार कुण्डल धर शंख चक्र गदाम्भोजहस्त पीताम्बर धर श्रीवत्सांकित वक्षस्थल श्री भूमि सहित स्वात्मज्योतिर्मय दीप कराय सहस्राडित्य तेजसे नमः।

25 नवम्बर खीर का नैवेद्य किसी भी मंदिर में चढ़ा देने से कार्य की संभावना बढ़ती है।

26 नवम्बर एक सुपारी किसी पात्र में स्थापित कर उसका पूजन कर ही कार्य हेतु बाहर जाए।

27 नवम्बर निम्न मंत्र का पांच बार उच्चारण करें –
ॐ श्रीं मनोकामना सिद्धि श्रीं ॐ नमः

28 नवम्बर अपने मस्तक पर चंदन का तिलक करके ही कार्य हेतु बाहर जाए।

29 नवम्बर पांच बत्ती का दीपक जलाकर पूजा स्थान में रख दें सफलता मिलेगी।

30 नवम्बर किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'ॐ' मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।

1 दिसम्बर **श्री सूक्त** का पाठ करके ही कार्य हेतु जाए।

2 दिसम्बर चौराहे पर एक निम्बू थोड़े से चावल और तेल का दीपक लगा दें।

3 दिसम्बर **गुरु समर्पण स्तुति** का पाठ करके कार्य हेतु जाए।

4 दिसम्बर बाहर जाने से पूर्व निम्न दोहे का उच्चारण करें –

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहूं गुरुदेव की नाईं ॥

5 दिसम्बर शिवलिंग पर भांग से अभिषेक कर कार्य हेतु जाएं।

6 दिसम्बर प्रातः काल चेतना मंत्र **ॐ ह्रीं मम प्राण देहि रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः** का पांच बार उच्चारण करें।

7 दिसम्बर प्रत्येक कार्य से पूर्व अपने ईष्टदेव के मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें।

8 दिसम्बर हमेशा ही प्रसन्न रहकर कार्य आरम्भ करें।

9 दिसम्बर प्रातः काल किसी कुत्ते को रोटी खिलाएं, आपकी आने वाली आपदाएं समाप्त होंगी।

10 दिसम्बर दही को ग्रहण कर ही शुभ कार्य हेतु प्रस्थान करें।

11 दिसम्बर पान के पत्ते पर कोई मिठाई रखकर भगवती पार्वती को अर्पित करें।

12 दिसम्बर हनुमान विग्रह के समक्ष तेल का दीपक लगा दें।

13 दिसम्बर गुरु आरती कर ही घर के बाहर जाए।

14 दिसम्बर मन ही मन गणपति का ध्यान कर बाहर जाए।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सर्वत्र भय विनाशाय भैरवं भावयेत्तदा

सभी प्रकार के भय नाश के लिए भैरव साधना अवश्य करना चाहिए।

काल पर विजय प्राप्ति की तीन विस्फोटक साधनाएं

महाकाल भैरव प्रयोग

किसी भी शुभ कार्य हेतु भैरव स्थापना अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं, जहां भैरव की स्थापना पूजा होती है, वहां कार्य में कोई विपत्ति, बाधा नहीं आ सकती, शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार किया जा सकता है।

जो अपने दम पर जिये दुनियां उसी की कहलाती है, जो अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य हाथ में लेता है, भाग्य उसी का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता है, आप जी रहे हैं और मोहल्ले के बाहर आपको कोई पहिचानता ही नहीं है, फिर ऐसा जीवन किस काम का, नये-नये कार्य करने का, नये जोखिम उठाने का उत्साह हर समय होना चाहिए तभी सड़े गले जीवन से नये जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो व्यक्ति आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, उनके ही मार्ग में रुकावटें आती हैं, शत्रु उत्पन्न होते हैं, जो अपने जीवन को एक निश्चित गति पर कोल्हू के बैल की तरह चलने देते हैं, उसके शत्रु कैसे होंगे? जो जीवन से भाग कर छुप जाता है, वहां साधना का नाटक करता है, उसके भी शत्रु कैसे होंगे इसलिए शत्रु तो जीवन का अंग है, इनसे घबरा कर पैर पीछे हटा लिए तो उन्नति नहीं हो सकती।

इतिहास उठा कर देखें तो हमें यह स्पष्ट मालूम पड़ेगा कि हमने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं, और जिन्होंने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, चाहे वह राम हों अथवा श्रीकृष्ण, हनुमान हो अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक का जीवन आख्यान राक्षस विजय से जुड़ा है, अतः आवश्यकता है, कि अपने आपको प्रबल बनाया जाय, शत्रु बाधा का वीरता से सामना किया

रूप, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाय, संघर्ष कर जीवन में कुछ प्राप्त करने का आनन्द ही अनोखा होता है।

काल भैरव

शिव के अंश, शिव स्वरूप, शक्ति सम्पन्न, शक्ति स्वरूप महाकाली सेवक के रूप में भैरव की मान्यता विख्यात है, भैरव जन-जन के देव हैं, जो साधक विशेष मंत्रों को नहीं जानता, पूजा का विशेष विधान नहीं जानता, वह भी भैरव पूजा कर सकता है, और ऐसे एक दो नहीं हजारों-लाखों उदाहरण हैं जहां सामान्य साधक को भैरव कृपा में विशेष सफलता मिली है।

रक्षात्मक देव

भैरव की मान्यता मूल रूप से रक्षात्मक देव के रूप में ही है, बड़े से बड़े यज्ञ में पहले भैरव स्थापना की जाती है, जिससे कि भैरव अपने शक्ति से दसों दिशाओं को आबद्ध कर देते हैं फिर सम्पूर्ण कार्य में कोई विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता है, भूत, प्रेत, पिशाच, तांत्रिक प्रयोग कैसा भी प्रबल प्रहार किया जाए तो जहां भैरव की उपस्थिति है, वहां से यह प्रहार उलटे लौट आते हैं और इस प्रकार के गलत तांत्रिक प्रयोग को करने वालों का ही नाश कर देते हैं।

भैरव पूजा का विधान अत्यन्त सरल है, और आज पाठकों हेतु काल भैरव के कुछ सरल प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं जिनमें सरलता से ही, इनकी सिद्धि और उपयोगिता है।

काल भैरवाष्टमी

आप काल भैरवाष्टमी को या किसी भी शनिवार के दिन इस साधना को प्रारम्भ कर सकते है। दिनांक १९ नवम्बर रविवार को मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष को काल भैरवाष्टमी दिवस है, और इस दिवस की मान्यता के सम्बन्ध में विख्यात है कि इस दिन जो साधक भक्तिपूर्वक भैरव साधना सम्पन्न कर लेता है, भैरव साक्षात उस साधक में विराजमान हो जाते है।

भैरव साधना के स्वरूप को मूल रूप से तांत्रिक स्वरूप दे दिया गया है, जो कि गलत है, यह तो एक सात्विक जीवन की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रहार करेगा तो उसका जबाब नहीं देंगे? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेंगे? क्या आपके विरुद्ध तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, पीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे?

जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए इन सब बाधाओं को हटाना आवश्यक है, और इसके लिए सरल से सरल अचूक से अचूक प्रयोग काल भैरव प्रयोग ही है, जो आपके हाथ में शक्ति का, उत्साह का वह वज्र थमा सकते हैं, जिसके बलबूते पर आप अपना जीवन अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, अपने व्यक्तित्व को पराक्रमी बना सकते हैं, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकते हैं।

मूल रूप से चार बाधाएं व्यक्ति के जीवन को दीमक की तरह खा जाती हैं, ये हैं –

१. शत्रु बाधा, २. रोग, बीमारी, ३. मुकदमेबाजी, ४. तांत्रिक बाधा, भय आदि हैं।

इनमें से कोई भी एक बाधा रहने पर व्यक्ति अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी सकता, इसके चक्र में उलझता हुआ अपनी शक्ति क्षीण करता रहता है, काल भैरवाष्टमी पर इन्हीं चार बाधाओं के निवारण हेतु किया जाने वाले विशेष साबर प्रयोग पाठकों के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को निष्ठा से सम्पन्न कर तत्काल प्रभाव का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इनमें से प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग मंत्र विधान है, कुछ विशेष सामग्री है, साधक जिस बाधा विशेष का निवारण करना चाहता है, उससे सम्बन्धित प्रयोग काल भैरवाष्टमी को विशेष रूप से सम्पन्न करें, अन्य प्रयोग वह किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकता है, प्रति रविवार भैरव साबर मंत्र प्रयोग सम्पन्न करने से ही उसे जीवन में भैरव रक्षा का पूर्ण वर निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।

१. शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बनाकर उस पर पानी से धो ले, फिर उसके ऊपर सिन्दूर से तिलक करें और उस पर **'काल भैरव गुटिका'** स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर **'पांच आकान्त चक्र'** तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर लगाएं, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गुल का धूप तथा अगरबती इत्यादि जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलायें, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डालकर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मंत्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें –

मंत्र

विभूति भूति नाशाय, दुष्ट क्षय कारकं, महाभैरव नमः। सर्व दुष्ट विनाशनं सेवकं सर्वसिद्धि कुरु। ॐ काल भैरो, भूत भैरो! महाभैरव महा भय विनाशनं देवता।

सर्व सिद्धि भवेत् ।

ॐ काल भैरव, श्मशान भैरव, काल रूप काल भैरव! मेरो वैरी तेरी आहार रे । काढ़ि करेजा चरवन करो कट कट । ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महा भैरव महा भय विनाशनं देवता । सर्व सिद्धि भवेत ।

इस प्रकार ५१ बार इस मंत्र का जप कर पूजा में रखें, धूप और दीप से भैरव आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें, और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मंत्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर शांत हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं। **साधना सामग्री पैकेट – 200/-**

२ काल भैरव रोग नाश प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें और यदि दूसरे के नाम से प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव स्त्रोतस्य सप्त ऋषिः मातृका छन्दः श्री बटुकः भैरव देवता, ममेप्सित सिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः ।

अपने सामने एक पात्र में **'काल भैरव महायंत्र'** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, भैरव यंत्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोर रखें तथा मंत्र जप प्रारम्भ करें, मंत्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें, तथा निम्न मंत्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें –

मंत्र

ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महाभय विनाशनं देवता सर्व सिद्धिर्भवेत् । शोक दुःख क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेशं । सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् । काल भैरव, भूषण वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव जुनी । महात्मनः योगिनां महादेव स्वरूपं । सर्व सिद्धयेत् । ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महा भैरव महा भय विनाशनं देवता । सर्व सिद्धिर्भवेत् ।

इस प्रकार १०८ बार मंत्र जप के पश्चात सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यंत्र को पूजा में प्रयोग लाए काले डोरे को रोगी की भुजा पर बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं। **साधना सामग्री पैकेट – 300/-**

३. मुकदमे में शीघ्र विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शांति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **'काल भैरव महाशंख'** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से घेरा बना दें, सामने एक **'नागचक्र'** स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन, तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें, तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मंत्र जप प्रारम्भ करें–

मंत्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु । सर्वार्थिकस्य सिद्धि रूपं त्वं महाकाल! काल भक्षणं महा देव स्वरूप त्वं । सर्व सिद्धयेत! ॐ काल भैरो, बटुक भैरो, भूत भैरो! महा भैरव महा भय विनाशनं देवता । सर्व सिद्धिर्भवेत् ।

५१ बार मंत्र जप करने के पश्चात इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग, ब्रीफकेस में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत हो कर संधि करने के इच्छुक हो जाता है, मुकदमें में विजय प्राप्त होती है, मंत्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकते हैं कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है, काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे आने वाले सात रविवार तक मंत्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट – 290/-

मृत्युभयं विनाशाय मृत्युञ्जयं प्रसाधयेत्

महामृत्युञ्जय साधना से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

महामृत्युंजय साधना

भगवान शंकर के जितने विविध रूप हैं, उतने विश्व में किसी देवता के नहीं मिलेंगे, यजुर्वेद में वे उग्र रूप में हैं, तो उपनिषद काल में कल्याणकारी आशुतोष शिव और शंकर के रूप में, पुराणों में उन्हें गिरिजापति बना कर श्रृंगार का देवता माना है तो वहीं वे विषपान कर नीलकंठ के रूप में प्रचलित हुए, कहीं वे नटराज हैं तो कभी श्रृंगारी नायक ईश्वर।

इससे भी महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम रूप है अमृतवर्षी महामृत्युंजय का शंकर के चिन्तन, मनन, पूजन और साधना से मृत्यु को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है, इसीलिए मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है **'चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः'** अर्थात जब मैं चन्द्रशेखर के आश्रित हूं तो यम मेरा क्या बिगाड़ सकता है?

दीर्घायु एवं स्थायी आरोग्य प्रत्येक मानव के लिए परम आवश्यक है, इसके लिए वह प्रतिदिन प्रतिक्षण चिन्तित रहता है और विविध औषधियों तथा उपायों का सहारा लेता है, महामृत्युंजय साधना इस दृष्टि से सर्वोपरि है, जिससे साधक निरोग एवं दीर्घायु बना रहता है और उसका सारा जीवन हंसते हंसते व्यतीत हो जाता है।

अर्थर्ववेद के अनुसार परम ब्रह्म का आविर्भाव हुआ, ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया, जब समस्त लोक प्राणियों की अधिकता से भर गये और श्वास लेने में भी बाधा उपस्थित होने लगी तो ब्रह्मा जी के नेत्रों से प्रचण्ड अग्नि उत्पन्न हुई और वह प्राणियों को जलाने लगी, ऐसी स्थिति में भगवान शिव ने ब्रह्मा जी से उस अग्नि के संवरण की प्रार्थना की, जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने क्रोधाग्नि को अन्तरात्मा में लीन कर लिया, उस समय प्राणियों के जन्म मरण की व्यवस्था के लिए मृत्यु को जन्म दिया, मृत्यु के द्वारा कार्य करने का आदेश मांगने पर उसे समय-समय पर प्राणियों के संहार का आदेश मिला, इससे मृत्यु चिन्तित होकर रो पड़ी, उसने अपने आंसू दोनों हाथों में ले लिए, आगे चल कर वे आंसू ही रोग बना और जब प्राणियों की मृत्यु आती है, वह रोग से प्रेरित होकर मर जाता है।

मृत्यु तो एक दिन सब की होती ही है, क्योंकि **'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः'** के अनुसार जो पैदा होता है उसकी मृत्यु निश्चित है, किन्तु मृत्यु असमय में न हो, इसके लिए ऋषि मुनियों ने सिद्धि प्राप्त कर कुछ ऐसे उपाय ढूंढ निकाले हैं, जिसके द्वारा अकाल मृत्यु को टाला जा सकता है, इन उपायों में सर्वश्रेष्ठ उपाय महामृत्युंजय साधना मानी गई है।

अमृत दाता महामृत्युंजय

भगवान शंकर विष को पचाकर अमृत को प्रदान करने वाले हैं, उनके विविध रूपों में महामृत्युंजय रूप सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावकारी कहा गया है –

मृत्युंजय जपं नित्यं यः करोति दिने दिने।
तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुश्च प्रजायते॥

अर्थात जो प्रतिदिन महामृत्युंजय मंत्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, और अकाल मृत्यु को हट कर दीर्घायु प्राप्त करता है।

इसीलिए रुद्रयामल ग्रंथ में कहा गया है –

मृत्युंजयस्य मंत्रं वै जपते यदि मानुषः।
कोटि वर्ष शतं स्थित्वा शीघ्रं भवति ब्रह्मणि॥

अर्थात जो मनुष्य महामृत्युंजय मंत्र का जप नित्य करता है, वह पूर्ण आयु प्राप्ति करके अन्त में भगवान शिव में ही विलीन हो जाता है।

पारद शिवलिंग स्थापना

महामृत्युंजय भगवान शिव का साक्षात स्वरूप पारद शिवलिंग में स्थित है, और जिसके घर में, पूजा स्थान में पारद

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शिवलिंग स्थापित नहीं है, वे दुर्भाग्यशाली ही कहे जा सकते हैं, इस विशेष साधना में **'पारद शिवलिंग'** तथा **'तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष' 'रुद्राक्ष माला'** आवश्यक है इसके अतिरिक्त साधना में साधक पूर्ण भक्ति के साधना प्रारम्भ करे, अपने सामने पारद शिवलिंग स्थापित कर, तीनों मधुरूपेण रुद्राक्ष सामने रखें और फिर दोनों हाथों की अंजलि में पुष्प लेकर भगवान शिव का ध्यान करें।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृत रसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥

अर्थात दो हाथों से दो अमृत घटों द्वारा अपने सिर पर अभिषेक करते हुए अन्य दो हाथों से मृग चर्म तथा अक्ष माला को धारण किये हुए और अन्य दो हाथों में अमृत से परिपूर्ण दो कुम्भ अपनी गोद में रखे हुए कैलाश पर्वत के समान और वर्ण, स्वच्छ कमल पर विराजमान नवीन चन्द्रमायुक्त मुकुट वाले, त्रिनेत्र भगवान मृत्युंजय शिव का मैं स्मरण करता हूं।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

विनियोग –

अस्य श्री त्र्यम्बक मंत्रस्य वशिष्ट ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बक पार्वति पतिर्देवता त्रं बीजं, बं शक्तिः, कं कीलकं, मम सर्व रोग निवृत्तये सर्व कार्य सिद्धये अकाल मृत्यु निवृत्तये महामृत्युंजय त्र्यम्बक मंत्र जपे विनियोगः ॥

तत्पश्चात हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास –

ॐ वशिष्ट ऋषये नमः (शिरसि)
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः (मुखे)
ॐ त्र्यम्बकं देवतायै नमः (हृदये)
ॐ त्रं बीजाय नमः (गुह्ये)
ॐ बं शक्तये नमः (पादयोः)
ॐ कं कीलकाय नमः (नाभौ)
ॐ विनियोगाय नमः (सर्वांगे) ॥

करन्यास –

ॐ त्र्यम्बकं (अंगुष्ठाभ्यां नमः)
ॐ यजामहे (तर्जनीभ्यां नमः)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (मध्यमाभ्यां नमः)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (अनामिकाभ्यां नमः)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)
ॐ मामृतात् (करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः)

हृदयन्यास –

ॐ त्र्यम्बकं (हृदयाय नमः)
ॐ यजामहे (शिरसे स्वाहा)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (शिखायै वषट्)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (कवचाय हुं)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (नेत्र त्रयाय वौषट्)
ॐ मामृतात् (अस्त्राय फट्)

जप के लिए मूल मंत्र

महर्षि वशिष्ठ ने महामृत्युंजय मंत्र को ३३ अक्षर का बताया है, जो उसके अनुसार ३३ देवताओं और दिव्य शक्तियों के द्योतक हैं, इन ३३ देवताओं में है –

आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, एक प्रजापति एवं एक वषट्कार।

ये तैंतीस देवता प्राणियों के शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में स्थित हैं, इस मंत्र के जप से ये सभी शक्तियां शरीर में चैतन्य होकर प्राणी की रक्षा करती हैं और शरीरगत निर्बलता, मृत्यु तथा रोगों को समाप्त करती हैं।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

इस मंत्र **रुद्राक्ष माला** से एक लाख जप होना आवश्यक है, जप पूरा होने के बाद दशांश हवन करना चाहिए, जिनमें – बिल्व पत्र, खैर, वट, तिल, सरसों, खीर, दूध, दही, पलास और, दूर्वा, इन द्रव्यों को घी में डुबो कर मूल मंत्र बोलकर आहुति दी जानी चाहिए और अन्त में जिस रोगी के लिए जप किया जाए, उस पर इसी मंत्र से हवन का दशवां अंश अभिषेक करना चाहिए।

जब प्राण अत्यन्त संकट में हो

जीवन में अचानक दुर्घटना आ सकती है, या कोई विशेष आपत्ति, परेशानी, बाधा, राजभय, बीमारी या कष्ट अनुभव हो तब शुक्राचार्य प्रणीत मृतसंजीवनी विद्या से प्रेरित महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए, यह **'मृतसंजीवनी महामृत्युंजय'** मंत्र कहा जाता है –

मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् । ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं हौं ॐ ।

यह ६२ अक्षरों का शुक्राराधित महामृत्युंजय संसार का अमोघ मृत्युभय नाश करने वाला मंत्र कहा गया है।

साधना सामग्री पैकेट – 450/-

सौम्य महाकाली साधना

यों तो काली, महाकाली और दक्षिण काली से सम्बन्धित कई साधना ग्रंथों में प्रकाशित हैं, परन्तु सौम्य दक्षिण महाकाली साधना, साधना क्षेत्र में अत्यन्त उच्चस्तरीय साधना मानी गई है, वामा खेपा जैसे तांत्रिक ने भी स्वीकार किया है कि महाकाली दक्षिण काली साधना सर्वाधिक गुह्य, गुप्त, अलौकिक, अद्वितीय और अनुपम है, पूरे जीवन काल में विरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है, कि वे ऐसी उच्च स्तरीय साधना को प्राप्त करें। इसके अलावा इस रहस्य को भी समझें, कि जब जीवन में पुण्योदय होते हैं तभी ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है।

त्रिजटा अघोरी तो विश्व का अद्वितीय आचार्य है और उसने साधनाओं के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, उसने भी अपने तंत्र समुच्चय सपर्या ग्रंथ में स्वीकार किया है, कि कई वर्ष भटकने के बाद और हजारों तांत्रिकों से मिलने के उपरान्त ही स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से मुझे दक्षिण महाकाली सौम्य साधना प्राप्त हुई और मेरे पास तंत्र के हजारों रत्नों में से यह अपने आप में अलौकिक अनुपम रत्न है।

सौम्य महाकाली साधना जन साधारण में कम प्रचलित है, इस कारण इस साधना का महत्वपूर्ण होना ही है, यह साधना एक प्रकार से पूरे जीवन का वरदान है और उच्च स्तरीय योगी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते थे जो जीवन भर उनकी सेवा करता था, और जो मन वचन कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर अग्रसर होता था, जीवन के अंतिम समय में उसी को यह दिव्य साधना प्रदान की जाती थी।

काली का तात्पर्य

भारतीय आचार्यों ने भगवती काली को दस महाविद्याओं में सर्व प्रमुख स्थान दिया है, आचार्य भट्ट ने काली के तेरह अर्थ बताए हैं –

१. जिसकी साधना करने से काल का क्षय होता है, और व्यक्ति दीर्घायु एवं इच्छा मृत्यु प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

२. काली का तात्पर्य है काल को पहिचानने की क्षमता प्राप्त करने वाला, ऐसा साधक भूत, भविष्य और वर्तमान को एक पल में पहिचान लेता है।

३. काली का तात्पर्य जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं को समाप्त करने वाली महादेवी।

४. काली जीवन के समस्त विकारों, दोषों, अपराधों को समाप्त करने वाली है, शराब का व्यसन और अन्य बुरी आदतों को एक ही क्षण में समाप्त कर काम, क्रोध, लोभ मोह तथा अहंकार से परे हटा कर साधक को मोक्ष के मार्ग की ओर प्रवृत करने वाली है।

५. काली को राज राजेश्वरी भी कहा गया है, इसका तात्पर्य है कि यह उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रदाता है, काली की साधना करने से साधक के जीवन में स्वतः व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।

६. काली विन्ध्यवासिनी है, इसका तात्पर्य है कि जीवन में यह साधना पूर्ण भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।

७. इसे शरण्य कहा गया है, यह जीवन के समस्त दुःखों को समाप्त कर पूर्ण ध्यान लगाने में समर्थ और सहायक है।

८. यह विज्ञान रूपा है और इसकी साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और साधक सभी क्षेत्रों में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

९. यह दुर्गा स्वरूपा है, अतः जीवन में आने वाली बाधाओं को तुरन्त समाप्त करने में सहायक है।

१०. यह आपत्ति उद्धारक महादेव है, इसकी साधना करने से पूरे जीवन काल में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।

११. यह सर्व सिद्धि प्रदायक है, छोटी मोटी साधनाओं या विविध साधनाओं में समय बरबाद करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

१२. काली को प्रबल रोग मुक्ता कहा गया है, यह समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदलने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

१३. यह महाविद्याओं में प्रमुख है, इसकी साधना करने से अन्य सभी महाविद्याएं स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

सौम्य दक्षिण महाकाली

वशिष्ठ, विश्वामित्र, ब्रह्मा सहित शंकराचार्य तथा अन्य महत्वपूर्ण योगियों ने, तांत्रिकों ने सौम्य महाकाली साधना के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है, उस वर्णन से यह स्पष्ट है कि यह साधना कल्याणकारी और मनोवांछित पूर्णता सिद्धि साधना है, शक्ति तथा लक्ष्मी के साथ-साथ तेजस की साधना मूल रूप से सौम्य महाकाली साधना है।

इस साधना को सम्पन्न करने में न तो आयु का बंधन है और न ही गृहस्थ अर्थात विवाहित, अविवाहित, स्त्री, अथवा पुरुष का बंधन है।

साधना विधान

शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार साधक रात्रि में अपने पूजा स्थान में शुद्ध वस्त्र लाल धोती पहनकर और गुरु चादर पहन कर तथा साधिकाएं लाल साड़ी पहन कर साधना करें।

इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए पांच दुर्लभ वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिनके माध्यम से यह साधना पूर्ण सिद्ध की जा सकती है।

रात्रि में साधक साधिका लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने तेल का दीपक लगा लें, फिर सामने ही लाल वस्त्र बिछाकर दीपक के आगे **'त्रिशक्ति गुटिका'** को स्थापित कर दें और **'सौम्य महाकाली यंत्र'** और चित्र को स्थापित कर दें, और यंत्र के ऊपर **'काली हकीक माला'** को रखकर इन सभी का सिन्दूर का तिलक कर, पूजन करें।

इसके बाद इन सभी तत्वों का सामूहिक पंच पूजन करें, पंच पूजन में जल, केसर, अक्षत, पुष्प एवं प्रसाद समर्पित करें, पुष्प यथा संभव लाल रंग के ही उपयोग में लाने चाहिए और प्रसाद दूध का बना हुआ किसी भी प्रकार का पदार्थ भोग में रखा जा सकता है।

इस पूरे साधना काल में केवल ११ माला मंत्र जप करने का विधान है, साधक चाहे तो इससे ज्यादा भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है।

सोम्य महाकाली मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं सौम्य दक्षिण कालिके क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं फट ॥

यह मंत्र अपने आप में अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे मंत्र को गलत लोगों के हाथ में न दें, और कुकर्मी, अलोचक और निन्दक लोगों को भी इस साधना का रहस्य नहीं समझाएं।

यह साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है, दरिद्रता निवारण, विकार निवारण, पाप दोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शत्रुभय शांति हेतु यह सौम्य महाकाली साधना सर्वश्रेष्ठ है।

साधना की पूर्णता के पश्चात चित्र, रुद्राक्ष और सौम्य महाकाली यंत्र को पूजा स्थान में ही रख दें, काली हकीक माला को काले कपड़े में बांध कर अपने घर में रुपये पैसे के स्थान पर अर्थात तिजोरी के जगह रखना चाहिए। ऐसा करने से धन की अभिवृद्धि होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 350/-

नक्षत्रों की वाणी

मेष *(चू, चे, चो, ला, लु, ले, आ)*

कब आपका बहुत समय से सोचा हुआ कार्य पूरा होने जा रहा है इसलिए मन प्रसन्नतायुक्त रहेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा तथा मित्रों से सहयोग मिलेगा नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय सामान्य रहेगा उनके कार्य रुक-रुक कर पूरे होंगे, महिलाओं के लिए समय बहुत ही लाभप्रद रहेगा उनके कार्य की सभी लोग सराहना करेंगे। श्रमिक वर्ग के लिए यह समय स्वर्णिम अवसर लेकर आया है उनके सभी कार्य पूरे होंगे तथा कहीं से गुप्त धन भी प्राप्त होगा विद्यार्थी वर्ग इस समय का सही उपयोग अपनी पढ़ाई में लगाएगें तो शीघ्र ही सफलता मिलेगी। इस समय आप '**कामाख्या साधना**' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथि २, ८, ११, २१, २७ हैं।

वृष *(ई, उ, ए, ओ, वी, वू, वे, वो)*

आपकी मुस्कुराहट से ही लोग प्रसन्न हो जाते है, आपनी मुस्कुराहट के द्वारा ही आप बहुत से बिगड़े हुए कार्य भी बना लेते हो। अपनी इस आदत को आप छुपाएं नहीं तथा समय का सही उपयोग किया करो नहीं तो समय हाथ से निकल जाएगा और आप पछतावेंगे। बिजनेस में उतार चढ़ाव रहेगा तथा परिवार के लोग आपका सहयोग करेंगे मित्रों से थोड़ा बचकर रहिए क्योंकि वह घात कर सकते है। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय संघर्ष पूर्ण रहेगा उनके कार्य बहुत ही बाधाओं के बाद पूरे होंगे। श्रमिक वर्ग के लिए समय बहुत ही बाधापूर्ण रहेगा, उनके सोचे हुए कार्य समय में पूरे नहीं होने से मन उदास रहेगा। आप हिम्मत नहीं हारे अच्छी तरह से मेहनत करेंगे तो उसका फल भी मीठा ही होगा। इस समय आप '**कमला साधना**' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियां – २, १०, १५, १९, २७.

मिथुन *(का, की, कू, घ, ङ, को, हा)*

समाज में आपका मान सम्मान होगा तथा लोग आपके कार्य की सराहना करेंगे। इस समय आपकी पांचों उंगलियां घी में है आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे उसमें आपको सफलता निश्चित मिलेगी। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय एक नई आशा की किरण लेकर सामने उपस्थित हुआ है उनके कार्य का सम्मान होगा महिलाओं के लिए भी समय बहुत ही सफलतादायक सिद्ध होगा, उनके बहुत समय से रुके हुए कार्य पूरे होंगे जिससे मन प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं से बच कर रहे क्योंकि वह आप पर कभी भी घात कर सकते है इसलिए किसी भी अनजान व्यक्ति पर भरोसा नहीं करें। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। इस माह आप '**त्रिशक्ति साधना**' सम्पन्न करें, इस माह की अनुकूल तिथियां – ५, ११, १८, २२, २८.

कर्क *(ही, हू, हो, डा, डी, डे, डा)*

आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें अन्यथा आपको हानि होगी क्योंकि आप इतना क्रोध करते है कि बना हुआ काम भी बिगाड़ देते है, अपनी इस आदत को बदलने का प्रयास कीजिए। व्यापारी वर्ग के लिए समय बहुत ही लाभप्रद रहेगा, उनके कार्य सभी पूरे होंगे तथा श्रमिक वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा उनके कार्य समय पर पूरे होने से मन प्रसन्न रहेगा। आपके अन्दर प्रतिभा छुपी पड़ी है उसको बाहर निकालने का प्रयास करें, तथा हर किसी से कुछ ज्ञान की बातें ग्रहण करो। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय सामान्य रहेगा तथा उनके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे नहीं होने से मन में खिन्नता रहेगी। इस समय आप '**महामृत्युञ्जय साधना**' सम्पन्न करें। आपके लिये शुभ तिथियां हैं – ५, ७, १३, २६.

सिंह *(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टा)*

कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति होगी या कोई लाटरी लगने की संभावना है। इस समय लक्ष्मी आप पर मेहरबान है वह दोनों हाथों से आपको धन देती जा रही है। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय बहुत ही मध्यम रहेगा, इस समय आपकी ग्रह दशा कुछ ठीक नहीं है इसलिए आप नियमित गुरु मंत्र का जप करते रहे। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही लाभप्रद रहेगा उनके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को नये रोजगार प्राप्त होंगे तथा उनको कम्प्यूटर के क्षेत्र में नौकरी लगने की संभावना है। शत्रुओं से थोड़ा बचकर ही रहे क्योंकि वह आपसे मीठे बोलकर आपका भेद लेते है इसलिए उनको अपने मन की बातें भूल कर भी न बताए। धार्मिक तीर्थ स्थान में जाने का योग है इस समय आप '**छिन्नमस्ता साधना**' सम्पन्न करें। इस माह की अनुकूल तिथियां हैं – १, ५, १८, २३ २७.

कन्या *(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)*

आप स्वभाव से बहुत ही कड़क और घमंडी है अपने इस स्वभाव को बदले और हर किसी से प्रेम से बोले क्योंकि प्रेम से ही हर कोई आपके कार्य को करेगा इसलिए अपने व्यवहार में मधुरता लाए। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय बहुत ही सुन्दर रहेगा उनकी शीघ्र ही शादी होने वाली है तथा नये जीवनसाथी से आपकी बहुत ही अच्छी जोड़ी रहेगी। श्रमिक वर्ग के लिए समय संघर्षपूर्ण रहेगा उनके कार्य बहुत विलम्ब से पूरे होंगे तथा प्रयत्न करने पर भी सफलता हाथ नहीं लगेगी। किसी धार्मिक स्थान में जाने का योग है व्यापारी वर्ग के लिए समय लाभदायक रहेगा उनके कार्य की वृद्धि होगी तथा व्यापार और अधिक फलेगा। बेरोजगार व्यक्ति के लिए समय मध्यम रहेगा उनको

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सर्वार्थ, अमृत, रवि, पुष्य, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

16 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग
22 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्ध योग
28 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग
13 दिसम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग, सिद्ध योग
14 दिसम्बर – गुरु पुष्य योग

नौकरी मिलेगी पर बहुत संघर्ष के बाद। इस समय आप '**अप्सरा साधना**' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियां – ३,१०,१५,२५.

तुला *(रा. री. रू. ता. ती. तू. ते)*

इस समय ईश्वर की कृपामयी दृष्टि आपके ऊपर है इसलिए आप हर कार्य में सफलता प्राप्त कर रहे है। आपके द्वारा किया गया मंत्र कभी भी निष्फल नहीं जाता है इसलिए अपने अन्दर आत्म विश्वास बनाए रखें हमेशा सकारात्मक विचारधारा रखें। आप कुछ कर सकते है कुछ करने की कला आपके अन्दर मौजूद है लेकिन वह छिपी हुई है उसको बाहर निकालने का प्रयास कीजिए फिर देखिए आपको सफलता कैसे नहीं मिलती है। आपकी मुस्कुराहट से ही लोग सम्मोहित हो जाते है अपनी मुस्कुराहट से आप सामने वाले व्यक्ति का भी दिल जीत लेते है आपके अन्दर यह विशेषता है। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा रहेगा उनके नये मित्र भी बनेंगे तथा जीवनसाथी भी मिलने की संभावना है। इस समय आप '**मनोकामना पूर्ति साधना**' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – ९,७,१३,२३,२९.

वृश्चिक *(तो. ना. नी. नू. ने. नो. या. ती. यू)*

यह माह आपको किसी यात्रा पर निकलना पड़ सकता है, जो आपके लिए अंततः अनुकूल सिद्ध होगा। इस माह में आपको जहां स्वास्थ्य में लाभ होगा, वहीं मानसिक परेशानियों से भी सामना होगा। काफी समय से जो बाधाएं आपके जीवन में थी वह एक-एक करके हट जाएंगी। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय मध्यम ही रहेगा उनके कार्य रुक रुक कर पूरे होंगे तथा धन की थोड़ी कमी रहेगी श्रमिक वर्ग के लिए समय अच्छा रहेगा उनके सभी सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। स्त्रियों के लिए समय बहुत ही लाभकारी सिद्ध होगा उनके सभी कार्य समय पर पूरे होंगे जिससे मन प्रसन्नतायुक्त रहेगा। इस समय आप '**भुवनेश्वरी स्तोत्र**' का पाठ करें। शुभ तिथियां – २, ५, १२, २३,२८.

धनु *(ये. यो. भा. भी. धा. फा. ढा. भे)*

आप अपने दिल की बात हर किसी को बता देते है ऐसा आपको नहीं करना चाहिए। आप अपने अन्दर आत्म विश्वास पैदा कीजिए जिसकी आप में कमी है आप निराश मत हो गुरु पर विश्वास रखें वह आपके हर कार्य सफल करेंगे। इस समय आप अपने कार्य में ध्यान दें नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय मध्यम रहेगा तथा उनके कार्य बहुत विलम्ब के बाद पूरे होंगे इस समय आप '**भाग्योदय साधना**' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – ५, १०, १५, २१,२८.

मकर *(भो. जा. जी. खू. खे. खो. गा. गी)*

काफी समय से आपकी उन्नति में जो बाधाएं आ रही थी वह अब धीरे धीरे समाप्त हो जाएंगी। किसी व्यक्ति के मिलने से समय

ज्योतिष की दृष्टि से नवम्बर २०००

इस समय विश्व के कई भागों में तनाव की स्थिति रहेगी, मध्य एशिया देशों के मतभेद अन्य राष्ट्रों पर भी रहेगा, आतंकवाद की घटनाओं में वृद्धि होगी, अमेरिका के चुनाव परिणाम भारत के अनुकूल रहेंगे, पाकिस्तान की राजनैतिक और आर्थिक में और भी गिरावट आयेगी, भारत में वामपंथी पार्टियों में और कांग्रेस में विघटन कारी स्थितियां बनेंगी।

बहुत ही अच्छा सिद्ध होगा तथा व्यापार में आपको लाभ होगा। श्रमिक वर्ग के लिए समय बहुत ही लाभप्रद रहेगा उनको गुप्त धन की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के लिए समय मध्यम ही रहेगा उनके बहुत मेहनत के बाद सफलता हाथ लगेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय मध्यम रहेगा उनके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे नहीं होने से मन उदास रहेगा इस समय आप '**महालक्ष्मी साधना**' सम्पन्न करें। शुभ तिथियां ५,१०,१६,२५

कुम्भ *(गू. गे. गो. सा. सी. सू. से. सो. दा)*

किसी भी कागज पर बिना देखे हस्ताक्षर न करें, और आंखें मूंदकर भी किसी पर विश्वास न करें इसलिए जो भी करें सोच समझ कर करें। बेरोजगार व्यक्ति को नये रोजगार प्राप्त होंगे। महिलाओं के लिए समय बहुत ही फलप्रद है उनको हर कार्य में सफलता मिलेगी तथा अधिकारी उनके कार्य की सराहना करेंगे तथा नौकरी में पदोन्नति होगी। इस समय आप '**गृह लक्ष्मी साधना**' सम्पन्न करें। आपके लिए १, ५, १८, २२, २७.

मीन *(दी. दू. थ. झ. दे. दो. चा. ची)*

सुनें सब की और करें अपने मन की, इस पर ही अमल करें आप महसूस करेंगे, कि आप हर क्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त कर रहे है। यह माह एक प्रकार से परीक्षा काल है जब कई प्रकार की उलझन, परेशानियां और मानसिक तनाव आपके समक्ष उपस्थित होंगे, पर आप उनको पार करने में यदि सफल हो गए, तो निश्चित ही अंत में जीत आपकी ही होगी। कार्य स्थान और परिवार में सहनशीलता से काम लें। स्वास्थ्य के विषय में ध्यान बरतें। इस समय आप '**शिष्योपनिषद**' का पाठ सम्पन्न करें शुभ तिथियां ५, ८, १०, २१, २९.

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

19 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृ. पक्ष रविवार महाकाल भैरव अष्टमी
21 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृ. पक्ष मंगलवार एकादशी
23 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृ. पक्ष गुरुवार प्रदोष व्रत
25 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृ. पक्ष शनिवार अमावस
27 नवम्बर – मार्गशीर्ष कृ. पक्ष सोमवार चन्द्र दर्शन
4 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शु. पक्ष सोमवार अष्टमी
7 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शु. पक्ष गुरुवार एकादशी
9 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शु. पक्ष शनिवार प्रदोष व्रत
11 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शु. पक्ष सोमवार पूर्णमाशी
14 दिसम्बर – मार्गशीर्ष शु. पक्ष गुरुवार गणेश चतुर्थी व्रत

उप समीपं प्रतिष्ठते

ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु चरणों में बैठना उपनिषद है।

उपनिषद तो ज्ञान सागर है

ॐ और षोडश कलाएं

(प्रश्नोपनिषद तृतीय खंड)

अब तक ईशावास्योपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद और प्रश्नोपनिषद का ज्ञान प्रस्तुत किया गया है प्रश्नोपनिषद प्रथम खंड में आपने पढ़ा कि पिप्पलाद ऋषि के पास छः ऋषि पुत्र सुकेशा, सत्यकाम, गार्गी, कोशल्य, वैदर्भि और कबन्धी छः ऋषि पुत्र पहुंच कर उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करना चाहते हैं। पिप्पलाद ऋषि ने उन्हें अपना शिष्य बनाकर एक वर्ष के उपरान्त उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। पूर्वार्क में प्राण, अपान, समान, और व्यान, उदान और शरीर पिंड का स्वरूप और प्राण, मन आत्मा ब्रह्म का उत्तरोत्तर महत्व इत्यादि से सम्बन्धित प्रश्नों का समाधान किया गया।

प्रस्तुत अंक में प्रश्नोउनिषद के तृतीय खण्ड में पिप्पलाद ऋषि के शिष्यों ने ओंकार की उपासना और षोडश कलाओं के सम्बन्ध में जिज्ञासा व्यक्त की। महान ऋषि द्वारा अपने शिष्यों सत्यकाम और सुकेशा ने जो प्रश्न पूछे उनकी व्याख्या स्पष्ट की जा रही है।

ॐ को प्रणव अक्षर माना जाता है, और यह सृष्टि का पहला ध्वनित शब्द था जो भगवान शिव द्वारा उच्चरित हुआ और इसी एक ॐ शब्द में संसार के सारे रहस्यों का उत्तर समाहित है। जो व्यक्ति अपने जीवन में इस प्रणव अक्षर को पूर्ण रूप से धारण कर लेता है वह अपने जीवन में षोडश कलाओं को धारण करने की क्षमता रखता है। षोडश कला सम्पन्न व्यक्ति को भगवान परमेश्वर का स्वरूप माना जाता है कहा जाता है। कि भगवान राम द्वादश कला पूर्ण व्यक्तित्व थे और भगवान श्रीकृष्ण षोडश कला पूर्ण व्यक्तित्व थे।

प्रत्येक श्रेष्ठ मंत्र के पहले ॐ का उच्चारण मंत्र को श्रेष्ठ बना देता है। ॐकोर जीवन में सत्व भाव की वृद्धि करता है और इसके निरन्तर उच्चारण से तामसी भाव क्षय होते है। संसार रूपी दुखों के सागर में ॐ एक ऐसी नैया है, जिसके सहारे दुखों का सागर सहजता से पार किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई गुण और कला अवश्य ही विद्यमान होती है, अपनी उस कला को पहचान कर उस कला का उपयोग अन्य कलाओं को विकास करने का नाम ही श्रेष्ठ मनुष्य जीवन है और यही नर से नारायण बनने की क्रिया है यही पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की क्रिया है।

उदय हैनं शैब्यः सत्कामः - - - - लोकं जयतीति ॥१॥

अर्थ – शैब्रि पुत्र सत्यकाम पिप्पलाद ऋषि से पूछते है कि जो व्यक्ति जीवन भर ओंकार का ध्यान करता है, वह ऐसे ध्यान से किस लोक को प्राप्त करता है।

व्याख्या – सत्यकाम अन्य ऋषि पुत्रों के साथ जो प्रश्न भार्गी कौशल्य, वैदर्भी, कबन्धी ने पूछे थे उन सबका उत्तर उसने अवश्य सुना जो प्रश्न तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, रयि, प्राण शक्ति, प्राण, दक्षिणायन, उत्तरायन, प्रेयमार्ग, श्रेयमार्ग, तप, ब्रह्मचर्य, सृष्टिधारण, प्राण शक्ति, प्राण के पांच स्वरूप, प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, प्राण, मन, आत्मा, ब्रह्म का उतरोत्तर महत्व इन सबकी व्याख्या ध्यान से सुनी। इन जिज्ञासाओं का समाधान होने पर उसका यह प्रश्न पूछना स्वभाविक था कि जीवन में पूर्णत्व की प्राप्ति के लिए उपास्य कौन है और ॐ की उपासना किस प्रकार से संभव है, ॐ शब्द जीवन में किन महान स्थितियों को लाता है वास्तव में तो ॐ प्रणव अक्षर प्राणायाम का आधार है यह शब्द कुण्डलिनी के सातों चक्रों का भेदन करता हुआ उन्हें जाग्रत कर सकता है।

तस्मै स होवाच - - - तेनैवायतनेनैकतरमन्वेति ॥२॥

अर्थ – पिप्पलाद ऋषि ने कहा कि परम ध्यान और योग्य साधना से जानने योग्य इस सृष्टि का रचियता ब्रह्म जिसकी सत्ता साधारण व्यक्तियों द्वारा जानी जाए वह ओंकार स्वरूप ही है। ज्ञानी और सांसरिक अपने इष्ट को इसी के ध्यान के पश्चात प्राप्त कर सकते है।

व्याख्या – ब्रह्म के दो स्वरूप है प्रथम 'परब्रह्म' और दूसरा 'अपरब्रह्म' योगी लोग जो सांसरिक विषय वासनाओं से परे है वे 'परब्रह्म' के उपासक है, और इस संसार में रहने वाले सांसरिक लोग जो संसार की विषय वासनाओं इच्छाओं और सुखों की प्राप्ति पूजा, पाठ, यज्ञ, योग, कर्मकांड इत्यादि से प्राप्त करना चाहते है वे 'अपर ब्रह्म' के उपासक है।

आरती के समय एक शब्द आता है ***'पार ब्रह्म परमेश्वर - - तुम सब के स्वामी'*** इसका भी यही परब्रह्म की ही उपासना का व्यक्ति इच्छुक है और परब्रह्म को ब्रह्माण्ड का स्वामी अपना इष्ट मानता है।

योगी अथवा सांसरिक चाहे वह जीवन में परम सत्ता की आराधना साकार रूप में करे अथवा निराकार रूप में करे, ओंकार साधना के माध्यम से वह अपने ब्रह्म स्वरूप को 'परब्रह्म' के रूप में अथवा अपरब्रह्म के रूप में अवश्य ही प्राप्त कर लेता है।

वास्तव में 'परब्रह्म' उपनिषदों का ज्ञान कांड है और 'अपरब्रह्म' की उपासना कर्मकांड है, साधना विधान है।

स यद्येकमात्रमभिध्यायीत स - - - -
महिमानमनुभवति ॥३॥

अर्थ – यदि व्यक्ति एक मात्रा वाले ओंकार का थोड़ा ध्यान, जप करे तो वह व्यक्ति इस जगमशील सृष्टि में ऋगवेद ज्ञानी बन कर तीन लोकों में मनुष्य लोक को प्राप्त कर लेता है। जहां वह अपने साधनामय शरीर के तप, ब्रह्मचर्य, सत्य, आस्था से समृद्ध होकर प्रतिष्ठा को अनुभव कर लेता है।

व्याख्या – यहां एक मात्रा 'ओंकार' ध्यान का तात्पर्य थोड़ा बहुत ध्यान से है, और जो व्यक्ति 'ओंकार' का ध्यान करता है उसमें तप अर्थात शारीरिक साधना ब्रह्मचर्य अर्थात मानसिक साधना, श्रद्धा अर्थात आत्मीक साधना तीनों मार्ग का समन्वय कर लेता है। ओंकार का थोड़ा सा ध्यान करने से वह आत्मीक दृष्टि से जाग्रत हो जाता है। *ॐ का ध्यान उसे मनुष्य लोक में श्रेष्ठता से स्थापित करता है। व्यक्ति अपने जीवन में मनुष्य देह लेकर ॐ ध्यान अवश्य ही करे। दुखों की निवृत्ति का यह सबसे सरलतम मार्ग है। एक द्वार खुलने पर दूसरा द्वार खुलता है। एक संकट का समाधान होने पर दूसरे समाधान मार्ग अपने आप प्राप्त हो जाता है। ईश्वरीय शक्ति को प्राप्त करने का सरलतम मार्ग नित्य प्रति 'ॐ' ध्यान ही है।*

अर्थ यदि द्विमात्रेण मनसि - - - - पुनरावर्तते ॥४॥

अर्थ – यदि मनुष्य ओंकार की दो मात्राओं को ध्यान करता है तो वह मन से युक्त हो जाता है, यजुर्वेद ज्ञान प्राप्त कर सोमलोक, चन्द्र लोक सौम्यता मानसिक शांति की अवस्था प्राप्त करता है। वह इस सौम्यता और ऐश्वर्य को जो उसने द्विमात्रीय ओंकार साधना से प्राप्त किया है उनका अनुभव कर पुनः श्रेष्ठ जन्म लेता है।

व्याख्या – इस पार्थिव जगत में सुख भोग प्राप्त होने पर भी मानसिक शांति नहीं है तो व्यक्ति दुखी और अशांत हो जाता है, अपने मन पर राज्य करने के लिए मन की इच्छा अनुसार जीवन जीने के लिए और पूर्ण मानसिक शांति और सौम्यता प्राप्त करने के लिए द्विमात्र ओंकार साधना आवश्यक है, इस श्लोक में सोमलोक का प्रयोग हुआ है। सोमलोक का तात्पर्य है मानसिक शांति लोक। जब हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है तो जीवन में सौम्यता आती है, शीतलता आती है, मन में प्रसन्नता आती है, यजुर्वेद का ज्ञान मानसिक शांति का ज्ञान है, यह मानसिक शांति प्राप्त कर व्यक्ति को पुनः मनुष्य लोक अवश्य आना है, लेकिन मनुष्य लोक और सोम लोक का समन्वय जीवन में श्रेष्ठता प्रदान करता है।

यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण - - - श्लोकौ
भ व त : / / ५ / /

अर्थ – त्रिमात्रिय सम्पूर्ण 'ॐ' का ध्यान करने से मनुष्य परम पुरुष परमात्मा का ध्यान करता है, और वह इस लोक में सूर्य लोक से सम्पन्न हो जाता है, जैसे सर्प केंचुली से अनायास और पूर्णतः मुक्त हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य त्रिमात्रिय ॐ उपासना से ऊर्ध्व मुखी होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है। इस वर्तमान शरीर में ही कारण, कार्य, रूप, प्रकृति, देह में स्थित परम तत्व परमात्मा को प्राप्त कर लेता है, परब्रह्म को जान लेता है।

व्याख्या – ओंकार की एक मात्रा के ध्यान से वह पार्थिव जगत अर्थात पृथ्वी लोक, उसके भोग ऐश्वर्य इत्यादि को प्राप्त करता है, द्विमात्रा ध्यान से सोमलोक अर्थात जीवन में सौम्यता, शांति, श्रेष्ठता को प्राप्त करता है, त्रिमात्रा ध्यान से सूर्य लोक अर्थात तेजस्विता को पूर्ण ॐ के ध्यान से उसे प्राप्त होता है, ऋ, यजु और साम वेद ज्ञान प्राप्त होता है, तेजस्वी व्यक्ति अपने जीवन कि समस्त बाधाओं का त्याग उसी प्रकार से कर लेता है जैसे सर्प अपनी केंचुल उतार देता है, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन शुद्ध स्वरूप शुद्ध और सात्विक है, उस आत्मा पर पड़े आवरण उसे राग, द्वेष, घृणा, वैमनस्य, दुख, पीड़ा इत्यादि से उसे घेर लेते है, 'पूर्ण ॐ' का ध्यान वह मार्ग है जिसके द्वारा जीवन में पृथ्वी के सुख, सौम्यता और तेजस्विता तीनों प्राप्त हो सकती है यही तो योग मार्ग है, जिसकी यात्रा प्रत्येक मनुष्य सम्पन्न करना चाहता है।

तिस्रो मात्रा ----- न कम्पते ज्ञः ॥६॥
ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं - - - - परं चेति ॥७॥

अर्थ – इस प्रकार ओंकार की तीन मात्राएं और तीन भाग है, जो एक दूसरे से परस्पर सम्बन्ध है, जो व्यक्ति अपने बाह्य अभ्यन्तर और मध्यम क्रियाओं में त्रिमार्ग ओंकार का विधिपूर्वक प्रयोग करता है वह अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता।

जो ज्ञानी इन तीन ऋचाओं से ज्ञान प्राप्त कर ओंकार साधना सम्पन्न करता है, वह इस मनुष्य लोक को कर्मों से, अंतरिक्ष में विद्यमान सोमलोक को और ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है, ऐसा उपासक शांत, अजर, अमृत, अभय परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

व्याख्या – ओंकार की तीन मात्राओं का ध्यान का तात्पर्य कितना ध्यान करता है, बहुत कम ध्यान एक मात्रा का ध्यान है उससे अधिक ध्यान द्विमात्रा का ध्यान है और सदैव ॐ का ध्यान त्रिमात्रा ध्यान है। संसार में रहते हुए ॐ का ध्यान ऐसे ही करना चाहिए, जिससे संसार का जो स्वरूप हमारे लिए मृत हो जाना चाहिए वह वास्तव में ही मृत हो जाए। शरीर साधना के लिए उसमें स्थित जरा, पीड़ा, व्याधि समाप्त हो जाए आत्मा के सुख के लिए मन में सौम्यता और तेज प्राप्त हो। बाह्य क्रियाएं शरीर की क्रियाएं है, अभ्यन्तर क्रियाएं मन की क्रियाएं है, और मध्य क्रियाएं वे है जो मन और शरीर के बीच की है, कुछ मानसिक है, और कुछ शारीरिक क्रिया की इन तीनों अवस्थाओं में ज्ञानी व्यक्ति को पूर्ण ओंकार उपासना में ही रहना चाहिए। ओंकार की उपासना ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद की उपासना है उनका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है।

* * * * * * * *

उत्त हैनं सुकेशा भारद्वाज - - - क्वासौ पुरुष इति ॥१॥

अर्थ – भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न सुकेशा से पूछा कि एक बार मुझे हिरण्यनाभ नामक राजकुमार ने पूछा था कि क्या तुम सोलह कला सम्पन्न पुरुष को जानते हो? मैं नहीं जानता था इसीलिए उसे उत्तर नहीं दे पाया, जो व्यक्ति असत्य बोलता है वह समूल सूख जाता है, हे भगवन! मैं वही प्रश्न आपसे पूछता हूं यह षोडश कला सम्पन्न पुरुष कहां है?

व्याख्या – इस श्लोक में षोडश कला सम्पन्न व्यक्ति के सम्पन्न में प्रश्न के समाधान के साथ एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात भी कही गई है, ऋषि पुत्र सुकेशा स्पष्ट कहता है कि जो ज्ञान उसे

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

प्राप्त नहीं है उसके बारे में वह असंगत ज्ञात नहीं दे सकता। जानकारी न होने पर स्पष्ट तौर पर मना कर देना ही श्रेष्ठ बात है। वर्तमान समय में अजानकार अपने आप को ज्ञाता बताते है और ज्ञाता जानकर भी चुप रहते है, असत्य बोलते रहने से व्यक्ति के भीतर भावनाएं दूषित होती है, विचार दूषित होते है, और उसकी मानसिक शांति भी नष्ट हो जाती है इसीलिए असत्य वचन से सदैव दूर रहकर सत्य वचन ही बोलने चाहिए जिससे मन की शुद्धता पवित्रता अवश्य बनी रहे।

तस्मै स होवाच - - - प्रभवन्तीति ॥२॥
स ईक्षांचक्रे - - - प्रतिष्ठास्थामिति ॥३॥

अर्थ – पिप्पलाद ऋषि ने कहा कि वह पुरुष जिसमें सोलह कलाएं उत्पन्न होती है वह पुरुष इसी देह में स्थित है, इस षोडश कला सम्पन्न पुरुष ने विचार किया कि देह के शांत हो जाने पर देह में स्थित षोडश कला जीवात्मा भी निकल जाती है जब तक देह है उसमें जीवात्मा है और उस जीवात्मा में ही षोडश कला पुरुष ब्रह्म भी वास करता है।

व्याख्या – शरीर के भीतर एक और शरीर स्थित है वह परमात्मा रूपी पुरुष कहीं अन्य नहीं अपितु हमारे भीतर ही निवास करता है और ब्रह्म का स्वरूप एक अंगुष्ठ मात्र माना गया है। **'अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्ये आत्मनि तिष्ठति'** यह परब्रह्म जिसकी षोडश कलाएं है वह मनुष्य के भीतर विद्यमान अवश्य रहते है, अपने ज्ञान, ध्यान का विस्तार कर व्यक्ति षोडश कला सम्पन्न पुरुष बन सकता है, उसके लिए उसे आत्मिक ज्ञान आत्म साक्षात्कार पूर्ण रूप से होना आवश्यक है। यह आत्मज्ञान बाहर से प्राप्त ज्ञान के द्वारा प्रज्जवलित किया जा सकता है, दीक्षा भी व्यक्ति को आत्म ज्ञान जाग्रत करने की प्रक्रिया है, जिससे वह अपने जीवन की विभिन्न कलाएं समझ सके जो ज्ञान कलाएं सुप्त है उन्हें जाग्रत कर सकें।

स प्राणमसृजत --- लोकेषु च नाम च ॥४॥
स यथेमा नद्यः ----- तदेष श्लोकः ॥५॥
अरा इव रथनाभौ ----- परिव्यथ इति ॥६॥

अर्थ – ब्रह्म रूपी पुरुष में षोडश कलाएं प्राण, श्रद्धा, पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, इन्द्रियां, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम कही गई है।

इन षोडश कलाओं से ही बना हुआ ब्रह्माण्ड उसी प्रकार है जैसे अलग-अलग नदियां बह रही है, और सब समुद्र की ओर जा रही है, समुद्र में जाकर उनका नाम रूप अस्त हो जाता है, और वे समुद्र बन जाती है, इसी प्रकार परमात्मा ब्रह्म की ये षोडश कलाएं पुरुष रूप ब्रह्म में जाकर अस्त हो जाती है, वे ब्रह्म षोडश कला युक्त होकर सकल रहता है, दृश्यमान रहता है, और जब उसी में आकर कलाएं अस्त हो जाती है तो वह अमृत हो जाता है। जिस प्रकार रथ की नाभि में अरे लगे होते है उसी प्रकार जिस ब्रह्म में ये कलाएं प्रतिष्ठित है उस जानने योग्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करो तो तुम्हें मृत्यु किसी प्रकार की व्यथा नहीं देगी।

व्याख्या – उपरोक्त श्लोकों में षोडश कलाओं का विवरण है, जिनके बारे में विस्तार मात्र में यह कहा जा सकता है कि आत्मा शरीर का भोग करने वाली भोक्ता है जिसने सबसे पहले प्राण तत्व को उत्पन्न किया, क्योंकि प्राण ही जीवन में अपने पंच स्वरूपों में प्राण, समान, अपान, व्यान, उदान रूप में जीवन को भोगता है दूसरी कला तप है, तप का तात्पर्य है 'उग्र क्रिया' कोई भी उत्पत्ति तप के बिना संभव नहीं है तप के साथ-साथ श्रद्धा भी आवश्यक है, श्रद्धा का अर्थ है सत्य में धारणा संसार की प्रत्येक वस्तु का प्रवाह सत्य की ओर है अगर कहीं असत्य प्रबल दिखता भी है तो वह कुछ समय के लिए ही है, श्रद्धा का अर्थ है यह विश्वास की संसार के प्रवाह की दिशा सत्य की ओर है।

प्राण तप और श्रद्धा के पश्चात पंचमहाभूत, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश की उत्पत्ति हुई और प्रत्येक पंच महाभूत एक-एक इन्द्रियों से सम्बंध हैं। ये पंचइन्द्रियां स्पर्श, स्वाद, घ्राण, श्रवण, दृश्य जो देह की क्रियाओं को स्पष्ट करती है। इन इन्द्रियों और इन पंच महाभूतों पर विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति इन्द्रियजीत कहलाता है। ये पंचइन्द्रियां मानसिक दृष्टि से मन पर और शारिरीक दृष्टि से अन्न पर निर्भर है अतः नौवीं और दसवीं कला मन और अन्न है। **मन पर अधिकार और अन्न पर अधिकार** अन्न जिसका मुख्य कार्य वीर्य निर्माण है जीवन शक्ति का निर्माण है। अन्न का अधिकतर भाग तो मल मूत्र बनकर देह से बाहर चला जाता है मूल तत्व वीर्य और रज देह में जीवनी शक्ति का निर्माण करते है, शरीर रचना की इन कलाओं के पश्चात मनुष्य शारिरिक और मानसिक कार्य करता है शारिरीक कार्य कर्म और मानसिक कार्य मंत्र है।

इस कला का मूल कार्य सृष्टि में अपना 'रूप' अर्थात 'लोक' अपना 'नाम' स्थापित करना है। अतः षोडश कलाएं इस देह के भीतर ही है जो इन षोडश कलाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ जीवन जीता है उसका जीवन परब्रह्म जीवन है, वह परब्रह्म देह के भीतर स्थित है एक-एक गुण का विकास करना एक-एक कला सिद्ध करना है।

पिप्पलाद ऋषि ने परब्रह्म के सम्बन्ध में जिज्ञासाओं का समाधान कर अपने शिष्यों को अनुग्रहित किया।

रूप और यौवन चुराने का क्षण आ गया है

कामदेव रति प्रयोग से

यह प्रयोग प्राप्त हुआ है अनंग उपनिषद से जो ग्रंथ अभी तक लुप्त था।

यौवन का तात्पर्य है, ताजगी, जब पुष्प पूरा खिलने से पहले जिस स्वरूप में होता है उस स्वरूप को निहारने का मन बार-बार करता है, उसमें जो बहार होती है, उसे तो देख कर ही आनन्द आ जाता है, और फिर वह पुष्प सुगन्धित हो, तो फिर कहना ही क्या?

रूप माधुर्य और यौवन की छटा भी ऐसी ही है, रूप गोरेपन में, तीखे नाक नक्स में और यौवन केवल जवानी की आयु से सम्बन्धित नहीं है, यह तो भीतर उत्पन्न हुए विविध भावों का शरीर के माध्यम से प्रकटीकरण है, जो कितना ही छिपाओ छिप नहीं सकता, जीवन के दिन रुकते नहीं है, लेकिन यदि इसमें ताजगी नहीं है, रूप नहीं है, आनन्द नहीं है, माधुर्य नहीं है, प्रेम नहीं है, पीड़ा नहीं है, तो फिर जीवन के दिन काटने के समान है क्योंकि जीवन जीना भी एक अलग ही चीज है और यह प्राप्त की जा सकती है, यह संभव है कि आपका जीवन दूसरों से अलग हो, इसमें प्रातः काल की शीतलता हो, भीतर ही भीतर तेज हो, वृद्धि के अणु हों, सुगन्ध हो।

अनंग उपनिषद

कामदेव को पुरुष शक्ति का स्वरूप तथा रति को स्त्री शक्ति का स्वरूप माना गया है और इस सम्बन्ध में जितने ग्रंथ, काव्य रचनाएं लिखी गई हैं, उतनी रचनाएं शायद ही किसी अन्य विषय के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

संस्कृत के काव्य हों अथवा तंत्र के ग्रंथ उनमें विवरण तो बहुत अधिक दिया गया है लेकिन यह साधना सिद्ध रूप से कैसे की जा सकती है, इसका वास्तविक स्वरूप क्या है, और इसे जीवन में कैसे उतारा जाए, इसका वर्णन बहुत कम दिया गया है।

हर कोई पुरुष सुन्दर और आकर्षक जन्म से नहीं हो सकता, और हर स्त्री पूर्ण सुन्दरता से युक्त नहीं हो सकती, लेकिन क्या ऐसा संभव है, कि इस रूप से सिद्ध साधना की जाए कि कामदेव स्वयं पुरुष के भीतर स्थित हो जाए तथा रति स्त्री के भीतर स्थित हो जाए, जिससे रूप और यौवन, आकर्षण भीतर ही भीतर बन कर प्रस्फुटित हो।

जो असंभव है, अप्राप्त है, उसे ही तो संभव करना, प्राप्त करना साधना सिद्धि है, और कामदेव रति प्रयोग तो आधार है जीवन का, जीवन से काम को अलग कर देने का तात्पर्य है – पुष्प में से उसकी सुगन्ध को, उसकी बहार को

हटा देना, उसके बिना फिर पुष्प का तात्पर्य ही क्या है, सुगन्ध और ताजगी ही तो आधार है, इसी प्रकार काम जीवन की सुगन्ध है, जिसे गलत समझना जीवन की मूलभूत आधार का निरादर करना है।

कामदेव रति साधना कौन करे ?

❋ जब शरीर हर समय सुस्त रहने लगे और मन में निराशा की भावना स्थान बनाने लगे और कार्यों में सफलता न मिले।

❋ जब दूसरों को आप प्रभावित न कर सकें, और अपने छोटे से छोटे कार्य के लिए भी गिड़गिड़ाना पड़े।

❋ जब शारीरिक दृष्टि से पूर्णता का अनुभव न हो, वैवाहिक जीवन में मतभेद हो, आपसी विचारों का मेल न हो।

❋ जब किसी व्यक्ति विशेष चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री उसे अपने वश में करना चाहें और जो आपके लिए आवश्यक ही हो।

❋ जब आपके व्यक्तित्व का प्रभाव मित्रों, सहयोगियों पर न पड़ता हो, और आपको दूसरों से उपेक्षा प्राप्त हो।

❋ जब कार्यों में गति देनी हो, और हर कार्य हेतु बार-बार प्रयास करना पड़े।

❋ जब किसी प्रकार की विशेष व्याधि अर्थात बीमारी हो।

❋ स्त्रियों के लिए यह आवश्यक हो, जब उनके शरीर तथा चेहरे पर लावण्य न हो तथा वैवाहिक जीवन में नीरसता हो।

❋ जब इच्छा के अनुरूप मन पसन्द जीवन साथी न मिल रहा हो।

इन सब स्थितियों में **'कामदेव रति साधना'** सम्पन्न करनी चाहिए, यह आनन्द एवं साधना है, इसमें किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि तन, मन, मस्तिष्क और हृदय सबका सम्पूर्ण मिलन, समन्वय आधार है कामदेव साधना में सिद्धि का।

साधना कब करें ?

यही एक ऐसी साधना है, जिसके लिए किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं पड़ती, इसे तो किसी भी दिन रात्रि में, सायंकाल के पश्चात सम्पन्न किया जा सकता है, रात्रिकालीन इस साधना में नृत्य, गायन एवं जागरण का मंत्र जप के साथ पूरा अनुष्ठान है, इस साधना के लिए शुक्रवार का दिन अन्य दिनों की अपेक्षा सिद्ध मुहूर्त माना गया है।

'अनंग उपनिषद' ग्रंथ तो इस सम्पूर्ण विषय पर लिखा गया एक मात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसकी प्रामाणिकता के बारे में संदेह ही नहीं किया जा सकता, प्राचीन ऋषियों ने इस विषय पर इस महान ग्रंथ की रचना का इसमें नये-नये प्रयोग जोड़ कर वैदिक साधनाओं के समान बराबर का स्थान दिया है, क्योंकि वह साधना भी उतनी ही आवश्यक है जितनी जीवन में अन्य साधनाएं।

यह सही है कि जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए काम पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, लेकिन सम्पूर्णता तथा मोक्ष की प्राप्ति काम से बच कर नहीं हो सकती, इस पर विजय प्राप्त करने के लिए इसमें सिद्धि प्राप्त करनी होगी, तभी पूर्णता आ सकेगी जीवन में।

साधना सामग्री

इस साधना में 'अनंग यंत्र' 'रति प्रीति समबिन्दु मुद्रिका' 'आनन्द मंजरी माला' के अतिरिक्त पुष्प मालाएं, कपूर, इत्र, अगर, कुंकुम, आंवला, चंदन, पुष्प, वृक्षों के पत्ते, पीला वस्त्र, सफेद, काला, लाल व पीला रंग अर्थात गुलाब और अबीर आवश्यक है।

इस साधना में आठ प्रकार के कामदेव पूजा सम्पन्न की जाती है, जिससे पूर्ण सिद्धि आवश्यक है।

साधना क्रम

अनंग उपनिषद ग्रंथ में कथन है कि साधना से पूर्व ही साधक को वृक्ष के पत्ते, डालियां ला कर उन्हें जल से धोकर निम्न मंत्र से पूजन करना चाहिए।

॥ अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकनाशनः ॥

अर्थात हे वृक्ष देव मैं उस कामदेव की पूजा करता हूं, जिनकी पूजा से सब प्रकार के शोक नष्ट हो जाते हैं और कामदेव रति उन शोक इत्यादि को नष्ट कर नित्य आनन्द से भर देते हैं।

इसे पीले कपड़े में ढंक कर अपने पूजा स्थान में रखना चाहिए।

अब साधक अपने सामने चावल की आठ ढेरी बना कर उस पर **'आठ लघु नारियल'** स्थापित कर आठ कामों का पृथक पूजन करें, ये आठ काम हैं – **काम, भस्म शरीर, अनंग, मन्मथ, वसन्तसखा, स्मर, इक्षुधनुर्धर, एवं पुष्पबाण** इनका पूजन क्रम निम्न प्रकार से है –

कपूर से –

॥ ॐ क्लीं कामाय नमः ॥

गोरोचन से

ॐ क्लीं भस्मशरीराय नमः ॥

इत्र से

॥ ॐ क्लीं अनंगाय नमः ॥

अंगर से

॥ ॐ क्लीं मन्मथाय नमः ॥

कुंकुम से

॥ ॐ क्लीं वसन्तसखाय नमः ॥

आंवला से

॥ ॐ क्लीं स्मराय नमः ॥

चंदन से

॥ ॐ क्लीं इक्षुधनुर्धराय नमः ॥

पुष्पों से

॥ ॐ क्लीं पुष्पबाणाय नमः ॥

अब अपने सामने रखे हुए **'अनंग यंत्र' 'रति प्रीति मुद्रिका'** पर वृक्ष के पत्ते तथा माला निम्न श्लोक को पांच बार पढ़ कर चढ़ानी चाहिए।

सर्व रत्नमयी नाथ दामनीं वनमालिकाम् ।
गृहाण देव पूजार्थं सर्वजन्धमयीं विभो ॥

इसके साथ प्रसाद और सुपारी भी अर्पित करें तथा घी का दीपक जला कर दायीं ओर रख दें।

इस साधना का आधार है, काम गायत्री, यह मंत्र अत्यन्त ही प्रभावशाली है, इस मंत्र का जप इस पूरे पूजन क्रम के पश्चात आनन्द मंजरी माला से उसी स्थान पर बैठे बैठे पांच माला मंत्र जप करना चाहिए।

काम गायत्री मंत्र

॥ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि
तन्नो अनंगः प्रचोदयात् ॥

इस प्रकार पांच माला मंत्र जप के पश्चात अपने सामने कामदेव तथा रति को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रणाम करना चाहिए कि जगत को रति प्रीति प्रदान करने वाले, जगत के आनन्द कार्य प्रदान करने वाले, देव आप को प्रणाम करता हूं तथा आप मेरे शरीर में स्थायी आवास करें एवं मेरी वांछित इच्छाओं को फल प्रदान करते हुए कामान्धकेश्वरी साधना पूर्ण करें

साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक माला काम गायत्री मंत्र का जप अवश्य ही करें।

साधना के पश्चात साधक यंत्र तथा मुद्रिका को पुष्प के साथ पीले कपड़े में बांध कर पूजा स्थान में रखें तथा किसी विशेष कार्य पर जाते समय इस पीले कपड़े सहित अपने बैग अथवा अपनी जेब में रख सकते हैं।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाए तथा कार्ड के ६ पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजें कार्ड मिलने पर रु. ४३८/- की वी. पी. द्वारा आपको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कामदेव अनंग यंत्र, रतिप्रिति मुद्रिका, मंजरी माला भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

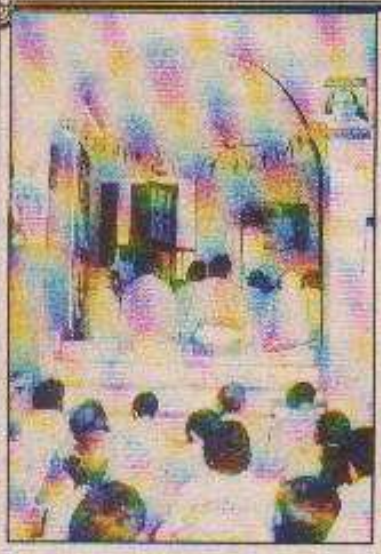

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि – पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है. इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं जो कि उस दिन शाम 7 से 9 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हों तो यहां से प्राप्त कर लें)।

24.11.2000 शुक्रवार — अपराजिता साधना

साधक का अर्थ ही यही है, कि उसके जीवन में पराजय जैसा कोई शब्द ही नहीं हो। पूर्ण रूप से अपराजित व्यक्ति वही कहा जा सकता है, जिसकी यदि हार हो तो वह गुरु के सामने हो या फिर ईश्वर के सामने हो। और लंकापति रावण को यही वरदान प्राप्त था, कि उसकी पराजय हो ही नहीं सके, उसे मारने वाला न तो कोई नर हो, न किन्नर, न गंधर्व, न राक्षस, न देवता। इसलिए स्वयं नारायण को ही उसको समाप्त करने आना पड़ा, यह जीवन का सौभाग्य ही था, कि साक्षात नारायण के द्वारा उसे मुक्ति मिली। परन्तु आजीवन वह पूर्ण सम्मान के साथ जिया, हर संकल्प में विजयी हुआ, जो भी चाहा वह किया, हर जगह सफलता प्राप्त की। ऐसा ही हो सके, कि साधक को अपने प्रत्येक कार्य में सफलता मिले, विजय मिले चाहे वह शत्रु हो, चाहे वह कोई मुकदमा हो, चाहे वह कोई प्रतियोगी परीक्षा हो, चाहे वह कोई व्यापारिक अनुबंध हो, कोई लक्ष्य या संकल्प हो, सफलता मिले ही, विजय मिले ही इसी का नाम है अपराजिता साधना।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रु. 225/- है, परन्तु आपको मात्र रु. 438/- ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र, गुटिका आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तौल सकते।

फोटो द्वारा 'तारा दीक्षा' केवल २४ से २६ नवम्बर को ही

आप चाहें तो निर्धारित दिवसों से पूर्व ही अपना फोटो एवं न्यौछावर राशि का बैंक ड्राफ्ट ('मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नाम से) भेजकर भी इन दिवसों पर होने वाली दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच सदस्यों के पते दिल्ली कार्यालय को समय पर प्राप्त हो सकें, इस हेतु आप अपना पत्र स्पीड-पोस्ट द्वारा ही भेजें। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी।

25.11.2000 शनिवार साधना सिद्धि प्रयोग

मंत्र-तंत्र और यंत्रों के इस विशाल समुद्र में अवगाहन करने का प्रयोजन सिद्धि ही होता है। यह सिद्धि किसी को शीघ्र तथा किसी को बहुत अधिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और जिनको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलती वे साधनाओं को भ्रम जाल ही मान लेते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है, यदि किसी को मंजिल नहीं मिली तो इसका यह अर्थ नहीं है, कि मंजिल है ही नहीं। हां यह अवश्य सत्य है, कि मंजिल तक का रास्ता लम्बा था और वहां तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति निराश हो गया, अथवा यह भी हो सकता है, कि उसे सही रास्ते का ज्ञान नहीं हो या फिर जो रास्ता मंजिल तक जाता हो, वह किसी कारण बंद पड़ा हो। मनुष्य के मस्तिष्क तन्तुओं में स्वयं के ही विकारों के फलतः कई ऐसी ग्रंथियां पड़ जाती हैं, जो साधनाओं में सिद्धि मार्ग को अवरुद्ध कर देती हैं। इस प्रयोग द्वारा ऐसी ग्रंथियों के खुलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है और साधक को शीघ्र ही सफलता अनुभूत होने लगती है।

26.11.2000 रविवार कुण्डलिनी जागरण प्रयोग

यह किसी भी मनुष्य के जीवन का सौभाग्य होता है, जब उसे यह साधना प्राप्त होती है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण ही समस्त सिद्धियों का सार है। मूलाधार से लगाकर सहस्रार तक एक-एक कर चक्र जब जाग्रत होते हैं, तो साधक को अनेकों दिव्यानुभूतियां होती हैं। सामने वाले व्यक्ति के मन की बातें जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे-बैठे देख लेना, अदृश्य शक्तियों से वार्तालाप करना, और मानसिक तरंगों द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से सम्पर्क करना – ऐसी अनेकों अतीन्द्रीय शक्तियों का प्रादुर्भाव कुण्डलिनी के चक्रों के जागरण से होता है। जागरण की इस क्रिया की अनेकों विधियां हैं, जिनमें हठ योग, प्राणायाम, क्रिया योग आदि सम्मिलित हैं, परन्तु मंत्र साधना द्वारा कुण्डलिनी जागरण सरल व सुगम मार्ग है, जो प्रत्येक व्यक्ति अपना सकता है।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मन्दिर में मंत्र जाप किया जाए तो अरबों गुना होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे। और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही वह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं!

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

- दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है, सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का . . .
- गुरु प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
- दीक्षा में भाग लेने वाले सभी साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों को साथ ही प्रदान की जाएगी। दीक्षा के उपरान्त एक उपयोगी मंत्र प्रदान किया जाएगा।

योजना केवल इन ३ दिनों के लिये
किन्हीं पांच व्यक्तियों
को वार्षिक सदस्य बनाकर
उनके डाक पते लिखवा कर
उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप
निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं

शक्तिपात युक्त दीक्षाएं

तारा दीक्षा

225x5
=Rs.1125/-

तारा के सिद्ध साधक के बारे में प्रचलित है, कि वह जब प्रातः काल उठता है, तो उसे सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण प्राप्त होता है। भगवती तारा नित्य ही अपने साधक को स्वर्णाभूषणों का उपहार देती है। तारा महाविद्या दस महाविद्याओं में एक श्रेष्ठ महाविद्या है। तारा दीक्षा को प्राप्त करने के बाद साधक के जीवन में अर्थ का अभाव समाप्त हो जाता है। तारा दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक को जहां आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनने लगते हैं, वहीं उसके अन्दर ज्ञान के बीज का भी प्रस्फुटन होने लगता है, जिसके फलस्वरूप उसके सामने भूत भविष्य के अनेकों रहस्य यदा-कदा प्रकट होने लगते हैं। तारा दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक का सिद्धाश्रम प्राप्ति का लक्ष्य भी प्रशस्त होता है।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली – 34, फोन : 011–7182248, टेली फैक्स : 011–7196700

ज्योतिष और आपका भाग्योदय

आकाश मंडल में जितने भी ग्रह हैं उन सभी ग्रहों की रश्मियां पृथ्वी पर पड़ती है, और उन रश्मियों के द्वारा ग्रहों का प्रभाव मानव पर पड़ता है, "ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणा बोधकं शास्त्रम्" । ज्योतिष शास्त्र की व्युत्पत्ति करते हुए सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा गया है । इस शास्त्र से प्रमुखतः ग्रह, नक्षत्र, संचार परिभ्रमण आदि घटनाओं का सही-सही निरूपण एवं ग्रह, नक्षत्रों की गति से घटित शुभाशुभ तथ्यों का विचार किया जाता है ।

किसी भी ज्योतिषी को अपनी कुण्डली दिखाते समय व्यक्ति का मूल प्रश्न यही होता है कि मेरे जीवन में भाग्योदय स्थिति कब बनेगी ? कब मेरे जीवन में परिवर्तन की स्थिति आएगी? वैसे तो व्यक्ति जीवन में पुरुषार्थ को ही महत्व देता है, लेकिन भाग्य के बिना पुरुषार्थ भी श्री हीन हो जाता है, आप स्वयं अपनी कुण्डली का अध्ययन कर सकते हैं, और अपने जीवन के बारे में जान सकते हैं, पत्रिका में भाग्योदय से सम्बन्धित यह लेख देने का उद्देश्य यही है कि आप **'बाबा वाक्य प्रमाणम्'** को ही सब कुछ नहीं मान लें, अर्थात ज्योतिषी ने जो कह दिया वह सही है, ऐसा न मान लें, आप स्वयं अध्ययन कर भाग्यकारक स्थितियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सबसे पहले जन्म कुण्डली के सम्बन्ध में कुछ प्रारम्भिक जानकारी का होना आवश्यक है, कुण्डली में बारह खाने होते है, और प्रत्येक खाने को भाव कहा जाता है, इस प्रकार इन बारह खानों में कुछ अंक लिखे होते हैं, वे अंक राशि को स्पष्ट करते है। और उनमें नव ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु शुक्र स्थित होते है। कुछ ज्योतिषी हर्षल और प्लूटो ग्रहों को भी जन्मपत्री में दर्शाते हैं लेकिन उनका महत्व नगण्य है, मूल रूप से जन्म कुण्डली का अध्ययन बारह राशि, बारह भावों और नवग्रह का अध्ययन करना ही है।

आप अपनी जन्म कुण्डली खोलिए और उसमें लिखे अंक देखिए, प्रत्येक अंक एक राशि को स्पष्ट करता है, उनका क्रम इस प्रकार है, १ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुंभ, १२ मीन

प्रत्येक राशि का एक स्वामी ग्रह होता है, वह इस प्रकार है –

सूर्य – मेष राशि
चन्द्रमा – कर्क राशि
मंगल – मेष, वृश्चिक
बुध – मिथुन, कन्या
गुरु – धनु, मीन
शुक्र – तुला वृषभ
शनि – मकर, कुंभ
राहु – मिथुन
केतु – धनु

जन्म कुण्डली के द्वादश भाव विशेष स्थिति को स्पष्ट करते है, कुण्डली में जो राशि है, उस राशि का स्वामी उस भाव का

स्वामी कहलाता है। उदाहरण के तौर पर यदि आपकी कुण्डली में लग्न भाव में अर्थात प्रथम भाव में 3 अंक है अर्थात मिथुन राशि है तो मिथुन राशि का स्वामी बुध है। इस प्रकार प्रत्येक भाव में स्थित राशि के स्वामी को उस भाव का ईश कहा जाता है।

मिथुन लग्न की कुण्डली में निश्चय ही प्रथम भाव का स्वामी बुध होगा तो द्वितीय भाव का स्वामी 4 अंक होने से चन्द्रमा तीसरे भाव में पांच अंक होने से अर्थात सिंह राशि होने से स्वामी सूर्य, चतुर्थ भाव का स्वामी बुध, पंचम भाव का स्वामी शुक्र, षष्ठम भाव का स्वामी मंगल, सप्तम भाव का स्वामी गुरु, अष्टम भाव का स्वामी शनि, नवम भाव का स्वामी शनि दशम भाव का स्वामी बृहस्पति, एकादश भाव का स्वामी मंगल और द्वादश भाव का स्वामी शुक्र है।

भावगत फल

प्रत्येक भाव से जीवन की विशेष स्थिति का अध्ययन किया जाता है, किस भाव से किसका अध्ययन किया जाए यह यद्यपि पत्रिका में पहले भी दिया जा चुका है। फिर भी इसे पुनः स्पष्ट किया जा रहा है।

प्रथम भाव – इस भाव से किसी भी जातक के शरीर, प्रारम्भिक जीवन, बचपन, स्वास्थ्य, आचरण, कृशता, पुष्टता, रंग, गुण, आत्मबल, ख्याति, रूप, आयु, सुख, दुख, मस्तिष्क, आकृति, स्वभाव, व्यक्तित्व, शारीरिक गठन और चरित्र का अध्ययन किया जाता है। मिथुन, तुला, कुंभ और कन्या राशि इस भाव में बलवान मानी गई है।

द्वितीय भाव – धन, कोष, पैतृक धन, कुटुम्ब, मित्र, पशु, बन्धन, वंशयात्रा, आंख, नाक, स्वर, सुन्दरता, गायन, प्रेम, सुखभोग, संचित पूंजी, क्रय-विक्रय, कलाली, भोजन, कलात्मक रुचि, आदतें, मृत्यु का कारण, एक्सीडेन्ट, स्वार्थ, निजत्व एवं रहस्यात्मकता का ज्ञान इसी भाव से किया जाता है।

तृतीय भाव – जातक से छोटे भाई बहिन, नौकर, चाकर, पराक्रम, हिम्मत, व्यापार, उद्यम, मेहनत, भूषण, साहस, शौर्य, धैर्य, क्षमा, गुर्दा, खांसी, क्षय, श्वास, प्राणायाम, योगाभ्यास, तन्मयता, वचन, चातुर्य, भतीजे भतीजियां अन्य पारिवारिक सम्बन्ध आदि का अध्ययन लग्न से तीसरे भाव से ही किया जाता है।

चतुर्थ भाव – मस्तिष्क शांति, घरेलू जीवन, मातृ सुख, घर, गांव, चौपाए, बन्धु, बान्धव, यान, मकान, जायदाद, बाग बगीचा, पेट से सम्बन्धित रोग, यकृत, मनोरंजन, छल कपट, दया, उदारता, गृह, सम्पत्ति, भूमि सम्बन्धी मामले, गर्दन और कन्धों का ज्ञान इसी भाव से किया जाता है। यह स्थान विशेषतः माता एवं वाहन का है। कर्क, मीन और मकर राशि इस भाव में बलवान मानी गई है।

पंचम भाव – विद्या, सन्तान, दादा, कार्य प्रवीणता, भावनाएं, जातक की ख्याति, बुद्धि, प्रबन्ध दक्षता, नीति, विनय, देशभक्ति, गर्भ स्थान, नौकरी छूटना, धन मिलने के उपाय, अनायास धन प्राप्ति, लाटरी, सट्टा, जुआ, जठराग्नि, गुणा, वाक्स्थान, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, नवरत्न आदि का अध्ययन इस भाव से किया जाता है।

षष्ठ भाव – शत्रु, चिन्ता, भय, रोग, झगड़े, मुकदमे, छुरेबाजी, झंझट, परतन्त्रता, क्षति, गुदास्थान, मामा की स्थिति ननिहाल, पीड़ा, कर्ज, गलतफहमियां, दुख, बीमारी और अनुचित कार्यों का अध्ययन छठे भाव से किया जाता है।

सप्तम भाव – स्त्री, स्त्री का स्वास्थ्य, मदन पीड़ा, काम क्रीड़ा, दैनिक रोजगार, छूत, भोग विलास, काम चिन्ता, जननेन्द्रिय जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, व्यापार, विवाह, प्रेम, प्रेम से सम्बन्धित बदनामी, प्रेम सफलता, प्रेमी प्रेमिका मिलन, स्त्री का रूप रंग, शील, चरित्र, (स्त्री की कुण्डली हो तो पति का रंग, रूप, गुण, चरित्र) तलाक, पति-पत्नी में अनबन, व्यापारिक सहयोगी कूटनीतिज्ञता, साधारण प्रसन्नता मारक स्थान एवं बवासीर आदि रोगों का अध्ययन सप्तम भाव से किया जाता है। वृश्चिक राशि इस भाव में बलवान मानी गई है।

अष्टम भाव – आयु, मानसिक व्यथा, मृत्यु, पुरातत्व प्रेम, पुरातत्व अन्वेषण, विदेश निवास, गूढ़ युक्तियां, पूर्व संचित द्रव्य, गड़ा हुआ धन, पूर्वजन्म ज्ञान, मृत्यु के पश्चात की स्थिति, ऋण, संग्राम, द्रव्य आदि नष्ट, मृत्यु का कारण, अकालमृत्यु, निम्नता, पतन, समुद्र यात्रा, लिंग रोग आदि का अध्ययन इस भाव से होता है।

नवम भाव – भाग्य भाग्योन्नति भाग्यअवनति धर्म परिवर्तन, धार्मिक कट्टरता, ईश्वरप्राप्ति, गुरु, तप, दैव बल, पुण्य, तीर्थ यात्रा, ऐश्वर्य, मानसिकवृत्ति, विदेश गमन, वायुयान यात्रा, पितृसुख, दान, पुण्य, यज्ञ, पोते, पड़पोते, सहानुभूति, इन्द्रिय, नेतृत्व, कर्तव्यनिष्ठा आदि का अध्ययन नवम भाव से किया जाता है। इस भाव में सूर्य एवं बृहस्पति प्रबल कारक माने जाते हैं।

दशम भाव – राज्य, मान, नौकरी, सेवानिवृत्ति, प्रतिष्ठा, पिता के सम्बन्ध में जानकारी, पितृ सुख, व्यापार, पितृ द्रव्य कर्म, समाज हुकूमत, अधिकार, ऐश्वर्य, भोग, कीर्ति, लाभ, नौकरी का प्रकार, अफसर पद राजकीय अथवा अर्धराजकीय सेवा, विदेश यात्रा, आत्मविश्वास, ज्ञान तथा जीवन पद्धति का प्रकार आदि का विचार इसी भाव से होता है। मेष, वृष, और सिंह राशियां इसमें बलवान मानी गई हैं।

एकादश भाव – लाभ, आमदनी, आवश्यकता पूर्ति, गुप्त धन, राज-द्रव्य, भूषण, वस्त्रादि, गज, अश्व, मोटर, वायुयान सुख,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

बड़े भाइयों की संख्या व उनसे सुख, बड़े भाइयों से लाभ हानि एवं स्वतंत्र चिंतन आदि का ज्ञान एकादश भाव से किया जाता है।

द्वादश भाव – हानि, दान, व्यय, दण्ड, व्यसन, बाहरी स्थानों से सम्बन्ध शत्रु का विशेष, नेत्र पीड़ा, फिजूलखर्ची, अतिरिक्त एवं आकस्मिक खर्चे, मोक्ष एवं मृत्यु के पश्चात प्राणों की गति का ज्ञान द्वादश भाव से ही करना चाहिए।

ऊपर जो बारह भाव और उनसे सम्बन्धित बातें कही गई हैं उन का अध्ययन सम्बन्धित भाव से ही करना चाहिए।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है, कि प्रथम भाव से व्यक्तित्व, द्वितीय भाव से धन, तृतीय भाव से भाई बहन चतुर्थ भाव से माता, पंचम भाव से विद्या संतान, षष्ठम भाव से शत्रु, सप्तम भाव से पत्नी, गृहस्थ जीवन, अष्टम भाव से आयु, नवम भाव से भाग्य, धर्म, दशम भाव से कर्म, क्रिया आजीविका, एकादश भाव से आय और द्वादश भाव से व्यय का अध्ययन किया जाता है।

नवम भाव भाग्य भाव

नवम भाव अर्थात भाग्य भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों को दृष्टि में रखना चाहिए।

नवम भाव व राशि, नवम भाव का स्वामी, नवम भाव में बैठे ग्रह, नवम भाव पर ग्रहों की दृष्टि, नवमेश के बैठने की राशि, नवमेश पर ग्रहों की दृष्टि, कारक, अकारक एवं तटस्थ ग्रह, भाव दशा, महादशा, अन्तर्दशा आदि।

उदाहरण के तौर पर मिथुन लग्न की कुण्डली में नवम भाव में १२ का अंक अर्थात मीन राशि है, इस राशि का स्वामी बृहस्पति है, अतः इस व्यक्ति का नवमेश भाग्येश बृहस्पति है, और इसका प्रभाव इसके पूरे जीवन पर विशेष रूप से रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में नवम भाव भाग्य भाव में कौन सा ग्रह है, और उसका क्या प्रभाव है, इसका संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है।

सूर्य – जिस जातक के नवम भाव में सूर्य होता है, वह मध्यम कद का, उभरा वक्षस्थल, उन्नत ललाट एवं सुन्दर नेत्रों वाला होता है। ऐसा व्यक्ति परिवार से स्नेह रखने वाला एवं नवीन विचारों का अन्वेषी होता है। सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान पर रहती है, अतः जातक साहसी एवं परिश्रमी होता है। श्रम की महत्ता वह समझता है एवं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ वह उन्नति की ओर अग्रसर होता रहता है। बाल्यावस्था सुखद नहीं कही जा सकती। शिक्षा एवं आजीविका के लिए उसे निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है, मध्यकाल एवं वृद्धावस्था सफल रहती है। यात्राओं का योग प्रबल रहता है तथा जीवन के २४ वे वर्ष के बाद से भाग्योदय होता है। नेतृत्व क्षमता इसमें अपूर्व होती है।

चन्द्र – नवम भाव में चन्द्र की स्थिति अनुकूल मानी गई है। जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली के नवम भाव में चन्द्रमा होता है वह एक प्रकार से सेल्फमेड मैन होता है। भाग्य निरन्तर उसका साथ देता रहता है, तथा ऐसे जातक संघर्ष के क्षणों में ही अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं। नेतृत्व करने की इनमें गजब की शक्ति होती है। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों को भांप, वैसा ही कदम उठाकर सफलता प्राप्त कर लेते हैं। जीवन का मध्यकाल उन्नत काल होता है। ऐसा चन्द्र शुभफलदायी माना गया है। विपक्षी इनके सामने कमजोर पड़ते हैं। यात्रा योग भी उत्तम कहा जा सकता है। धर्म के क्षेत्र में ये सक्रिय होते हैं, तथा धार्मिक कार्यों में आगे बढ़कर भाग लेते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे जातक विशेष रूप से सफल रहते हैं। ऐसे जातक धनवान, विनम्र, विपक्षी का भी हित चाहने वाले एवं अवसरानुकूल कार्य करने वाले सफल होते हैं।

मंगल – जिस जातक के नवम भाव में मंगल होता है, वह साहसी, कर्मठ, परिश्रम में विश्वास रखने वाला तथा निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होने वाला होता है। यदि मंगल शत्रु क्षेत्री हो तो विविध रोगों से भी ग्रस्त रहता है। भाग्य निरन्तर छल करता रहता है तथा प्रारम्भिक वर्षों में दुःख प्रदान करता है। आजीविका के लिए भी ऐसे जातक कठोर श्रम करते देखे गये हैं। यदि मंगल कारक या स्वगृही हो तो जातक की भाग्य वृद्धि में सहायक होता है। विद्या में रुचि रखने वाला ऐसा व्यक्ति सफल लेखक, पत्रकार, प्रकाशक या शस्त्रकार बन जाता है। सच्चरित्र, सरल जीवन व्यतीत करने वाला ऐसा व्यक्ति नम्र स्वभाव का होता है।

बुध – नवम भाव में बुध की स्थिति जातक को चतुर एवं विनम्र बना देती है। परिश्रम करने में तत्पर ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाता है।

जीवन में यह अत्यन्त तेजी से प्रकाश में आता है व उन्नति पथ पर द्रुतगति से अग्रसर होता है। जीवन में इसे निरन्तर घात प्रतिघातों का सामना करना पड़ता है। जीवट वाला ऐसा व्यक्ति संकटों के समय भी मुस्कराता रहता है। १७ वर्ष के बाद जातक का भाग्योदय होता है, जीवन में पूर्ण सुखोपभोग करता है तथा उत्तम कोटि का वाहन सुख प्राप्त होता है। पारिवारिक जीवन सुखद एवं सफल कहा जा सकता है।

बृहस्पति – नवम भाव में बृहस्पति की उपस्थिति अत्यन्त शुभ मानी गई है। जिसके नवम भाव में गुरु होता है, वह साधारण कुल में भी जन्म लेकर उन्नति करता है तथा लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। जातक का व्यक्तित्व अत्यन्त भव्य होता है तथा वह सहज ही लोगों की सहानुभूति अर्जित करने में समर्थ होता है। ऐसा जातक राजनीतिक क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। नेतृत्व, संगठन

एवं सही संचालन के क्षेत्र में जातक प्रवीण होता है तथा विपक्षियों से भी नम्रता से पेश आना एवं विरोधियों की बात भी धैर्य से सुनना जातक का स्वभाव होता है। ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही उकनता नहीं अपितु गंभीर स्वभाव का होता है। पारिवारिक जीवन मध्यम स्तर का ही कहा जा सकता है।

शुक्र – जिस जातक के नवम भाव में शुक्र होता है, वह ऐश आराम से जीवन व्यतीत करने वाला तथा संयत रूप से जीवन बिताने वाला होता है। भाग्योदय जीवन के २२ वे वर्ष में ही हो जाता है। बाल्यावस्था आनन्द से व्यतीत होती है, परन्तु जीवन के मध्यकाल में इसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम के बल पर यह दुर्भाग्य को भी कुछ न कुछ अपने अनुकूल ही बना लेता है। यात्राओं का इसे शौक होता है तथा जीवन में खूब यात्राएं करता है। धार्मिक क्षेत्र में यह सामाजिक रूढ़ियों का पालन करने वाला होता है। पारिवारिक जीवन सफल एवं श्रेष्ठ होता है तथा मानव जीवन के उच्च गुणों से सम्पन्न जातक मध्यावस्था में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

शनि – जिस मनुष्य के नवम भाव में शनि होता है वह व्यक्ति वाचाल एवं राजनीति निपुण होता है। जीवन का प्रारम्भ उसका सामान्य ही होता है, परन्तु समर्थ होने पर वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर उन्नति पथ पर अग्रसर हो जाता है। जीवन का लक्ष्य सदैव इसकी दृष्टि में रहता है तथा जो भी कार्य करता है वह अत्यन्त धैर्य से सोच समझकर करता है। शिक्षण काल में तथा आजीविका के लिए इसे कठोर श्रम करते रहना पड़ता है। यों भी यह व्यक्ति श्रमशील होता है। श्रम का मूल्य एवं महत्ता यह समझता है तथा श्रम के बल पर ही उन्नति भी करता है। भाग्य इसके अनुकूल रहता है तथा इसके जीवन में यात्राओं के कई अवसर आते रहते हैं।

राहु – नवम भाव में राहु की स्थिति प्रायः भाग्यवर्धक ही मानी जाती है। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए यह सचेष्ट रहता है तथा अधिकारियों से जो भी आदेश मिलता है उसका कठोरता से पालन करता है। गृहस्थ जीवन सफल होता है।

केतु – नवमस्थ केतु इस बात का सूचक है कि जातक निश्चय ही राजनीतिक क्षेत्र में पड़ेगा तथा सफलता प्राप्त करेगा। जीवन के मध्याह्न काल में ऐसा व्यक्ति प्रखर रूप में चमकता है। इस जातक में यह एक विशेषता होती है कि विपरीत परिस्थितियों में ही यह उभरता है, चमकता है एवं प्रसिद्धि प्राप्त करता है। भाग्य जीवन में निरन्तर उत्थान-पतन देता रहता है, परन्तु फिर भी ये जातक लक्ष्य च्युत नहीं होते। लक्ष्य प्राप्ति की ओर सतत सचेष्ट रहते हैं। यात्राओं का योग जीवन में विशेष होता है। विरोधियों को परास्त करने में जातक सफल होता है तथा राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

भाग्य भाव में स्थित ग्रहों की स्थिति और जो ग्रह भाग्य भाव का स्वामी है, उसका परस्पर सम्बन्ध और विवेचन भी आवश्यक है। उदाहरणतः मिथुन लग्न की कुण्डली में नवम भाव में ११ अंक है अर्थात कुंभ राशि है और कुंभ राशि का स्वामी शनि है, अतः इसका भाग्येश शनि हुआ। इसके जीवन में जब-जब भी शनि की स्थिति प्रबल होगी तब भाग्योदय कारक स्थितियां बनेंगी इसके साथ ही जब भी शनि की महादशा आएगी उस दशा में यह विशेष उन्नति करेगा। इसके अलावा अन्य ग्रहों की दशा में भी जब शनि की अन्तर्दशा आएगी तो सौभाग्यकारक स्थितियां अवश्य बनेंगी, भाग्य भाव में मित्र ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव भी अवश्य पड़ता है। व्यक्ति को अपने जीवन में भाग्यकारक स्थितियां बनाने के लिए अपनी कुण्डली के नवम भाव के स्वामी का मंत्र जप अवश्य ही करना चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में भाग्योदय की स्थिति अवश्य आती है, उस भाग्योदय काल की जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठ स्थितियों का निर्माण कर सकता है। श्रेष्ठ समय का लाभ उठाकर जीवन में स्थिरता ला सकता है।

भाग्योदय से सम्बन्धित विशेष योग इस प्रकार है –

१ सप्तमेश या शुक्र ३, ६, ७, १०, ११ वें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है।

२ भाग्येश रवि हो तो भाग्योदय २२ वें वर्ष में होता है।

३ भाग्येश चन्द्र हो तो २४ वें वर्ष में होता है।

४ यदि मंगल भाग्येश हो तो भाग्योदय २८ वें वर्ष में होता है।

५ भाग्येश बुध ३२ वें वर्ष में भाग्योदय कराता है।

६ बृहस्पति यदि भाग्येश हो तो १६ वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

७ शुक्र भाग्येश होने पर २५ वें वर्ष में भाग्योदय समझना चाहिए।

८ शनि भाग्येश होने पर ३६ वें वर्ष में भाग्योदय कराता है।

९ राहु केतु यदि भाग्येश हो तो ४२ वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

निश्चय ही भाग्य भाव और कर्मभाव का गहरा सम्बन्ध है कर्मशील व्यक्ति का ही भाग्य सहयोगी होता है।

विशेष –

पत्रिका के अगले अंक में ग्रहों का आपसी सम्बन्ध, ग्रहों का दृष्टि प्रभाव, विवाह इत्यादि से सम्बन्धित विशेष योग स्पष्ट किए जाएंगे। हमारी सलाह है कि आप अपने ग्रहों का अध्ययन स्वयं ही करें और उसके अनुसार निर्णय लें।

एक दृष्टि में:

साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

19-नवम्बर 2000 कानपुर (उ. प्र.)

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर

स्थानः ब्रजेन्द्र स्वरूप पार्क, कानपुर (उ. प्र.)

✻ राजवीर सिंह 0512-612016 ✻ गोकर्ण सिंह 581293 ✻ देव प्रकाश गुप्ता 362273 ✻ राजेश कटारिया 26238 ✻ सत्यनारायण श्रीवास्तव 243427 ✻ नलिनी शुक्ला 294746 ✻ कमल त्रिवेदी 26338 ✻ जयराम 263430 ✻ राकेश त्रिपाठी ✻ शान्ती देवी ✻ कुंवर संजय सिंह ✻ विजय कुमार गुप्ता 9838016224 ✻ गोविन्द प्रकाश ✻ फूलसिंह शास्त्री ✻ सुशील गुप्ता ✻ दर्शन सिंह ✻ आशुतोष वर्मा ✻ डॉ. रमेश यादव 635023

3 -दिसम्बर 2000 फैजाबाद (उ. प्र.)

ऐश्वर्यदात्री तारा महाविद्या साधना शिविर

स्थानः क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस, फतेहगंज चौराहा फैजाबाद उ.प्र.

✻ मदन लाल गुप्ता 05278-42308 ✻ डॉ. रुद्र प्रताप सिंह 988087132 ✻ बाबू भाई 46411✻ विनय शर्मा ✻ डॉ. हरीलाल सोनी 2501107

10 - दिसम्बर 2000 होशंगाबाद (म. प्र.)

मनोकामना पूर्ति साधना शिविर

स्थानः नर्मदा के तट पर होशंगाबाद

सम्पर्क :– ✻ सुनील चौहान 53860 ✻ शरद चन्द्र चौधरी 53697 ✻ संतोष शर्मा 24480 ✻ सुरेश धुर्वे, विनय प्रताप ठाकुर, ✻ जी. एल. पटेल 63185 ✻ एस. एल. मस्कोले 63176 ✻ कांतिलाल, सोनी शेटेकर जी 62430 ओ. पी. दुबे, एम. एम. सुमन, एस. पी. एम चौहान

16-17 दिसम्बर 2000 मुम्बई

अष्ट महासिद्धि साधना शिविर एवं यज्ञ समारोह

स्थानः कस्तूरी पार्क सिद्धाचल जैन सुपर मार्केट के पास मलाड लिंक रोड, मलाड पश्चिम मुम्बई - 400064

सम्पर्क :– ✻ सतीश मिश्रा 8050323 ✻ गणेश सिंह 4313992 ✻ चन्द्र टबरमलानी 4929090 ✻ हरिशंकर पांडे 8856080 ✻ अशोक पांडे 4963617 ✻ भास्करन जी 911-604702 ✻ कीर्ती भाई 412166 ✻ एडवोकेट राव 8886094 ✻ कृष्णा गोडा 8412860

24-25 दिसम्बर 2000 बड़वानी (म. प्र.)

गणेश लक्ष्मी साधना शिविर

स्थानः डा. पटेल मांगलिक भवन नया बस स्टेण्ड के पास बड़वानी (म. प्र.) 'इन्दौर' बस स्टेण्ड से बड़वानी जावें।

सम्पर्क :– ✻ उमर सिंह पाटला बड़वानी ✻ रेलम चौहान झाबुआ ✻ पूर्णेश चौबे बड़वानी 07290-23310 ✻ विजय गुप्ता इंदौर 412400 ✻ शशि चौहान इन्दौर 573606 ✻ मनोहर सिंह ठाकुर 22150 ✻ एल. डी. गिरासे 07290-24028 ✻ राजेन्द्रसिंह चौहान 077290-24343 ✻ ओमप्रकाश शर्मा ✻ नरेन्द्र कुमार गुप्ता बड़वानी 22290 ✻ ओमप्रकाश सोनी कुक्षी 07290-34634 ✻ संजय तक्कर कुक्षी, ✻ सरदार सिंह ठाकुर ✻ लिमजी भाई पाटीदार , भगवान पाटीदार ✻ शोभाराम पाटीदार ✻ सुरेश पंवार, ✻ डॉ. बी.एस. पवार, ✻ राधेश्याम पाटीदार, ✻ नरेन्द्र सिंह सोलंकी, ✻ सुधीर बाघेला

1 जनवरी 2001 दिल्ली

सहस्र नाड़ी विखण्डन षटचक्र भेदन निखिल रसेश्वर दीक्षा

स्थानः आरोग्यधाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे जोन४/५ पीतमपुरा, नई दिल्ली - ३४ फोनः 7182248, 7029044

परम पूज्य सदगुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले एवं वन्दनीय माता भगवती के चरणारविन्दों तले दिल्ली की दिव्यतम गुरु भूमि में आप समस्त गुरु भाई बहिनों को प्यार भरा आमंत्रण हम तो केवल अपने हृदय के भावों द्वारा आप से निवेदन कर सकते हैं, आप भी सदगुरुदेव के आत्म अंश हैं, आप अवश्य आएंगे।

17-18 जनवरी 2001 मुलताई बैतुल (म. प्र.)

सूर्य नारायण महालक्ष्मी साधना शिविर

स्थानः शासकीय बालक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय शाला मैदान मुलताई (म. प्र.)

सम्पर्क :– ✻ एन. के. श्रीवास्तव 24686 ✻ विजय सिंह 24966 ✻ आई. डी. बागड़े 25021✻ मनीष परमार 24577 ✻ एस. डी. नामदेव ✻ यू. आर. उइके ✻ रूखमागढ मसोदकर ✻ एस. एल. धुर्वे, मनीष सोनी, मदन मालवीय, आकाश खन्ना, दिलीप साहू, मनोज अग्रवाल 38692✻ जे. एस. मथाये, श्रीमति हर्षा अग्रवाल, आर. सी. मिश्रा, उदय मालवीय, विजय साहू

22-23 जनवरी 2001 इलाहाबाद

मोनी अमावस्या महाकुंभ महोत्सव इलाहाबाद

स्थानः काली सड़क उतरी पटरी संगम तट इलाहाबाद

सम्पर्क :– ✻ एस. के. मिश्रा इलाहाबाद 0532-501551 ✻ डॉ. प्रमोद यादव 636029 ✻ हेम सिंह 632160 ✻ ए. के. शर्मा 440792 ✻ ओमप्रकाश 407092 ✻ भवनाथ यादव गोरखपुर 0551-51010 ✻ एन. सी. सिंह रायबरेली 0535-205985 ✻ जगदम्बा सिंह 205330✻ जी. एस. मिश्र 202327

28-29 जनवरी 2000 चांपा (जांजगीर) (म. प्र.)

भाग्योदय वसन्तोत्सव साधना शिविर

हावड़ा बिलासपुर मेन लाइन पर (म. प्र.)

✻ आर. सी. सिंह 0781-833343 ✻ लोकेश राठौर 07752-40289 ✻ के. पी. पटेल 40280✻ संतोष सोनी, चांपा 07817-45845 ✻ राधेश्याम साहू 45845✻ के. के. तिवारी 0771-242680 ✻ अखिलेश 07759-21636

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING